राजस्थान साहित्य-धारा-८

राजस्थान के कवि

(राजस्थानी)



सम्पादक

रावत सारस्वत



राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)
बीकानेर

प्रकाशक—
धनञ्जय वर्मा
सचिव
राजस्थानी भाषा साहित्य संगम
(अकादमी) बीकानेर

पैलो संस्करण
१९६१

दूजो संस्करण
१९७७

मूल्य
१५ रुपये

मुद्रक—
माहेश्वरी प्रिंटिंग प्रेस
जोशी बिल्डिंग
बीकानेर।

प्रकाशकीय

"राजस्थान के कवि भाग-२" रै पै'ले सस्करण रो प्रकाशन सन १९६१ मे हुयो। ई ग्रथ मे राजस्थानी भाषा रै प्रतिनिधि कविया री रचनावा सकलित करी गई है। सहृदय पाठकां इ काव्य-सकलन न घणो पसन्द करयो।

लारलै कई बरसां सू ओ ग्रथ अप्राप्य हो चुक्यो हो अर ई री माग भी घणी ही। इसी स्थिति मे इ ग्रन्थ रो ओ दूजो सस्करण प्रकाशित करयो गयो है।

विद्वान सम्पादक इ सस्करण मे जरूरी सशोधन अर परिवधन भी करयो है, जिण सू ओ ओर भी घणो महत्वपूण बणग्यो है। अब तो ओ पाठ्यक्रम मे भी निर्धारित हो चुक्यो है।

आशा है, साहित्य ससार मे ई सस्करण रो घणो सम्मान हुसी।

धनञ्जय वर्मा
सहायक सचिव
राजस्थानी भाषा साहित्य सगम (अकादमी),
बीकानेर

दूजै सस्करण रो सपादकीय

आज सू साढा बरस पैला इण पोथी रो पलो सस्करण छप्यो हो। अकादमी रा प्रकासणा म या सबसू बेगी अर घसी बिकणवाळी पोथी है। राजस्थानी रचनावा रा सकळना री जरूरत राजस्थानी रै माध्यमिक सिक्षा मडळ अर विस्वविद्यालया रै पाठयक्रम म आण सू बेसी वडी हुइ है। इण वास्त इण सकळन रा ओजू छपणो जरूरी समझ्यो गयो।

पोथी न दुबारा सपादित करता वगत या चाइज ही क कवियां री नइ रचनावा भी सामल करी जाती अर नया नाव जोडथा जाता। पुराणा कवियां री नइ रचनावा तो नही जोडी जा सकी है पण वा बाबत ताजा जाणकारी भेळी करणै री चेस्टा करी है। कुछ नमा कवियां रा नाव भी जोडथा गया है। पण या कासास पूरी नही कही जा सकै। उण वास्त तो सगळी पोथी ही दुबारा तैयार करणी पडती। माध्यमिक सिक्षा मडळ अर विस्वविद्यालया म जिकी रचनावा पाठ्यक्रम र खातर चुणी गइ है वा न भी हटाई नही जा सकै ही। इण खातर पुराणी रचनावा न भी ज्यू री त्यू राखणी पडी जद कै वा म सू घणकरी हटाई जाणी चाईजै ही।

सजय सदन, डी० २८२ मीरा मार्ग,
बनी पाक, जयपुर

रावत सारस्वत

कुण कठै

△

स्व० उदयराज ऊजल

जनम-स्थान	ऊजळा (जोधपुर-राजस्थान)
जनम तिथि	कातिक वदी ३ वि० स० १६४२
पिताजी रो नांव	श्री लक्ष्मीदानजी ऊजळ (चारण)

उदयराजजी रा पिताजी डिंगळ रा मोटा जाणकार हा जिण सू आप डिंगळ काव्य री रुचि ग्रहण करी। आपरा वडा पिताजी श्री फतेहकरणजी ऊजळ डिंगळ पिंगळ रा महाकवि हा, जिण रो 'पत्र प्रभाकर' नाव रो ग्रंथ लिख्योडो है। उणां रै सरक्षण मे रहणै सू अर पोकरण (जोधपुर) ठाकुर श्री मगळसिंघजी रै आदेस सू आप डिंगळ म काव्य रचना सुरू करी।

'घूडसार' 'भानिया रा दूहा', 'ऊजळ संदेस', 'राजस्थानी सतक' जिसी अनेक फुटकर रचनावा आप करी जिण री साहित मे घणो मान हुयो। काव्य रचना पर परम्परा सू अधिकार होणै सू आप बिना प्रयास ही रचनावा कर लेता। राजस्थान रै आदोळण मे आप आगली पगत रा नेतावा मे हा। उदयराजजी उमर सू पुराणी पीढी रा पण विचारा अर सिक्षा दीक्षा सू नई पीढी रा होणै सू नवीन अर पुरातन रै बीच री कडी ज्यू हा। बी० ए० तक पढाई कर'र आप राज री नौकरी मे ऊचै पद पर वरसा ताई काम करयो अर समाज सुधार रै काम मे भी आप सदा आगै रया।

७५ वरस सू वेसी उमर मे होता हुया भी डोकरा गाव गाव घूम'र राजस्थानी रै आदोळण री जोत जगाई राखी। राजस्थानी नै उण रो उचित स्थान दिरावण सारू आपरै मन मे जिती लगन अर तडप ही वा वहोत थोडा लोगा मे मिलै।



साहित री महिमा

सत अखड सदेस चारण ऊजळ ऊचरै
दीपै वा रो देस ज्या रो साहित जगमगै

साहित ब्रह्म सरूप समपै प्राण समाज नै
रमै समै अनुरूप अग पळटतो, उदला

साहित रो मचार आणै ऊची आतमा
आतम-वल आधार सक्ट मिटै समाज रा

चौडे चमकावैह आतम रै आभास नै
साहित सरसावैह सगळै देस समाज न

जद-जद किणी समाज मे आवै पतन अथाग
वीती सपत वावडै इण साहित अनुराग

राजनीत ग रोग सू पडै विपद जद पूग
दूर करै दुख देस रो कै साहित कै सूर

साहित विना समाज मे माहस रहै न सत्त
सत-साहस विन मनदा जीवण दुखी जगत्त

दुखिया न भेलो दिय निरजीवा सरजीव
माचो सयण ममाज रो साहित मवव सदीव

साहित सद आसरै तीस रह्यो रजथान
साचो पथ सुतनता साहित रो मनमान

रटो वीर रजथान रा साचो मन्न सदीव
जीवै देस-ममाज वै माहित जिका सजीव



भानिया रा दूहा

पाढण मानव प्रेम साजण देस सुततरी
आयो गाधी एक भारत तारण भानिया

करसा री किलकार हूकर मजदूरा हळी
गाधी री ललकार भारत उळटै भानिया

गाधी वाथा घात ऊचा लिया अछूत नै
सत ऊजळ सरसात भारत रो मुख भानिया

असुरा लई उडाय सीता रूप सुततत्रता
रे मोहन रघुराय भारत लावै भानिया

नाथण काळी नाग दुख मेटण निज देस रो
आयो घण अनुराग भारत मोहन भानिया

भारत देस भुजग नहरू री पूगी नच
सेस नाग सरवग भारी जाग्यो भानिया

माता पडदा माय पूत जिका रा पीजरा
हुई अधोगत हाय भारत इण विध भानिया

जकडी परतन्त जोस थकडी माता लडथडी
बेट पकडी बोस भारत लकडी भानिया

धौळो पडग्यो धाव पिंड हिमालय पीघळै
आसू भारै आप भारत दुखियो भानिया

भभकै ताप भरेह कदेक वळतै काळज
धरती लूह धरेह भारत दुखियो भानिया

धर मानव हित धेय अस्त्र अहिंसा आसरै
इळ पर वीर अजेय भारत गाधी भानिया

पडती धाक प्रचड हिंसावाळी हिंद मैं
मिटग्यो जिका घमड भारत गाधी भानिया

असमैं नैं समैंह सत मारग गांधी सभैं
भातर हूत भजैंह भय परतन्त्र भानिया

रटग्यो मन सुराज तपसी गगाधर तिलक
उण नैं सभियो आज भारत सगळै भानिया

माता हित मरणोंह मोटो तीरथ मानणों
भाव इसा मरणोह भारत गाधी भानिया

डोकर रैं भुज-दड एण तपोबळ आसरैं
पळटै वेग प्रचड भारत काया भानिया

पग-पग जेळा पाय गाधी री ऊमर गयी
डोकर दियै छुडाय भारत माता भानिया

मरता वैंम कदेक क्यू ईसो फासी चढ्यो
दिस गाधी-री देख भयो भरोसो भानिया

जादू लकडी जोर परततर भारत पड्यो
तप गाधी रैं तोर भचकै ऊळ्यो भानिया

जूना छत्री जाय भय स्वारथ छाना भया
अब छत्री-धम आय भरग्यो परजा भानिया

पूगी समदा पार सीता समो सुतनता
तप-बळ गाधी तार भारत लावै भानिया



कन्हैयालाल सेठिया

जनम स्थान सुजानगढ (बीकानेर)
उमर सत्तावन बरस रै नैडी

सेठियाजी पैलडा कई बरसा सू कविता 'लिखता आ रया है। दस बरस री छोटी उमर मे ही कविता करणै री खिमता इणा रै भावुक हिरदै अर प्रखर बुद्धि री बात कैवै। आपरी हिन्दी कवितावा अर गद्य-गीता री चार पाच पोथिया छपी है। राजस्थानी मे रमाणियै रा सोरठा' नाव रै सग्रह रै अलावा 'मीझर' 'कूकू' अर 'लीलटास' नाव री कविता-सग्रह अर 'गळगचिया' नाव रा गद्य गीत सग्रह भी आप रा वणायोडा है। लीलटास' पर आपनै केन्द्रीय साहित्य अकादमी रो पुरस्कार मिल्यो है।

सेठियाजी री रचनावा मे दारसनिकता री पुट मिली रैवै। हरेक चीज वान अर व्यापार नै देखणै रो आपरो तरीको घणो गूढ है जिकै सू आपरै काव्य मे सवेदन अर अपणायत री बोळायत मिलै। यू मालूम पडै के सेठियाजी री रचनावा दिना गैल गूढ सू गूढतर होती जारी है। आज रै राजस्थानी काव्य नै भावनावा री इतणी ऊची धरती पर पूगावण वाळा कविया मे सेठियाजी रो आसण घणो ऊचो है। विया भी आप उण पैलडी पीढी रा राजस्थानी साहितकारा मे सू है जिका राजस्थानी रै नयै जागरण री सहनाई मे सुर भरया।



गीत

माळीडा, मत चूट फूल तो
आपै ही कुमळासी
घडी स्यात श्रै और मुळक्ले
फेर कदे ना आसी
लेज्या पूजा थाळ आज तो
झालो ही निरमोही
सुण ले साचो बात बताई
आगै तनै न कोई
झरै जठै ही पभू रा पग है
तपै वठै ही रासी
नास करया सू हुवै बावळा
कद राजी अवनासी
माळीडा, मत चूट फूल तो
आपै ही कुमळासी
घडी स्यात श्रै और मुळक्ले
फेर कदे ना आसी
मरया निरदई सगळा पाछा
नाटा वण-वण आवै
झर न सकै वै साथ फल रै
करया पाप भुगतावै
फेर करया पिसतावो गूगा
कद छटै चौरासी
चेत मानखा जोत जगा ले
रातडली घुळ जासी
माळीडा, मत चूट फूल तो
आपै ही कुमळासी
घडी स्यात श्रै और मुळक्ले
फेर कदे ना आसी



गीत

सीपी, पाळ पेट मे मोती
गूगी मरण बुलावै क्यू
रवै जीवती परख जगत री
तो ओ मरणू जीणू है
विधा काळजो कठा वक्सी
जद मोती लाखीणू है

कूख उजाळू ली मै थारी
समदर तू अकुळावै क्यू

चन्दण सौरम वसा प्राण मे
सूखा हाड घसावै क्यू

रगड घापज्या गुण न नीवडै
तो ओ पिसणू हसणू है
कचन काया घसा मने तो
प्रभू लिलाड पर वसणू है

जस फैलाम्यू जामण थारो
धरती तू पिसतावै क्यू

दिवला ले'र पराई चिन्ता
हिवडो रोज दझावै क्यू

नही निठतरी भोम, अधेरो
जाणै तो के वळणू है
नेह पियो तो जोत नैण री
वण कर मनै उपडणू है

कारज सारू जलम सुधारू
बाती तू घवरावै क्यू

सीपी, पाळ पेट मे मोती
गूगी मरण बुलावै क्यू



गीत

गोरँ दिन रँ लारँ सिझ्या
वहू सावळी आई
माथै वाध्यो चाद-चोरलो
पग पाजेवा-तारा
सुपना बाजूवन्ध जडाऊ
सोवै कामणगारा
सागँ पेई भर नींदडली
नैण मोवणी ल्याई
गोरँ दिन रँ लारँ सिझ्या
वहू सावळी आई
बादळिया दो च्यार कुआरा
देवरिया मटचोला
भौजाई कोयल री जाई
करै किलोळा रोळा
पकड काडा पून दशाल्या
स्याणी नणदल बाई
गोरँ दिन रँ लारँ सिझ्या
बहू सावळी आई
दिन दिवलै री लौ मे धण सू
मिलियो लाजा मरतो
पडया रात रँ खोजा नै ओ
काजळ कँवै डरतो
घाल मिलण सैनाण पलक जग
नीजर करँ सुवाई
गोरँ दिन रँ लारँ सिझ्या
वहू सावळी आई



कल्याणसिंघ राजावत

जनम स्थान : चितावा (नागौर, राजस्थान)
जनम तिथि : २५ सितंबर १९३८ ईसवी
पिताजी रो नाव : श्री भवरसिंघजी राजावत

कल्याणसिंघ उण ऊगता कवियां म सू है जिका बहोत थोडै वखत म ही मंच पर नाव कमा लियो। जोधपुर री 'कुमार साहित्य परिसद' नई पीढी रा जवाना म साहित रो सोख जगावण रो काम कर री है। कल्याणसिंघ रो प्रेरणा स्रोत भी या परिसद ही है। आपरी रचनावा रो खास विसय राजस्थानी लोक जीवण है, पण आज रै समाज री नई चेतना रा भाव भी उणा म रवै। कालेज री पढाई रै साथ साथै काव्य रचना म आपरी रुचि अर गति सराहणै जोग है। आपरी 'रमतिया मत तोड' नाव री पोथी आपरा फुटकर गीता रो संग्र है।



पा'वणा

गीता रै गाव आया रितुराज पा'वणा
फूल कळी वाट रया सोरभ रा लावणा

वाधँ वेला वादरवाळ
पगल्या माडै लाल गुलाल
नाचै मोरया घूमर घाल
पात पात धुन वाधँ ताल

गुण-गुण गा-गा भवरा रा सुगन मनावणा

सतरग लँरया जडी किनार
धरती मुळकै पर सिणगार
मँदी राची मणै सुमार
कठ काठलै नदिया धार

आरतडो करवावै कोयल रा गावणा

हिवडै-हिवडै उठै हिलोळ
कोड किलोळा री धमरोळ
रूप थाळ मे पचरग घोळ
प्रीत मांडणा भाडै पोळ

सुरसत सुर सुळभावै सासा रै वाजणा
गीता रै गाव आया रितुराज पा'वणा



होळी गावण दे

फूला गी निछरावळ करतो फागण आयो रे
होळी गावण दे
हा रे होळी गावण दे रे चग बजावण दे
होळी गावण दे

वायरियो गू गो वण पग मे पायल बाध्या नाचै ओ
धरती री कूपळ कूपळ मे मैंदी राचै ओ
रग चढावण दे
हा रे रग चढावण दे रे रग उडावण दे
होळी गावण दे

काजळ पाडै कोयलडी तो मैंदी मोवन घोळी ओ
पगल्या माडै पचरगी अर नाचै टोळी ओ
घूमर घालण दे
हा रे घूमर घालण दे रे घमचक माचण दे
होळी गावण दे

गाव गुवाडी अळिया गळिया चग रगीला बाजै ओ
छैला देवै ताल रसीलो जोवन लाजै ओ
रस वरसावण दे
हा रे रस वरसावण दे रे रूप रिझावण दे
होळी गावण दे

अवर रै आगणियै चादो आवै तारा हेलै ओ
धरती पर ढोला रै ढमकै डडिया खेलै ओ
गै'र रचावण दे
हा रे गै'र रचावण दे रे नेह बधावण दे
होळी गावण दे

परभातै सूरज बनडोजी मरवर मुखडो झाकै ओ
मुजरा देतो जातो साझ गुलाला नाखै ओ
रथडो हाकण दे
हा रे रथडो हाकण दे रे हिंगळू नाखण दे
होळी गावण दे △

जुग रो हेलो

काम करैलो काको
जी रो सुख देवैलो सागो
जी रो धाप खावैलो बावो
दादै रा दात पडैं
पडपोता पोळ थडैं
थासू सातू पात पळै
था रै घी रा दीप वळै
सुणो साभळो,वात हामळोजुग रो हेलो हे
जागो रे जागो रे जागो रे
आज उडीकै मैणत माटी
खेत खडै तो सोनो लाटी
लिछमी ऊभी लिया आरती
खोल खेत मदर री फाटी
सुणो पुजारी, उठा कुदाळी थाम तगारी
खेता मे देव जगा
मैणत रो भोग लगा
भरसी राम बखारी
थारी झूपी वर्ण अटारी
थारी वीतै रात अधारी
मावस रो मान मरै
चादै सू चमक झरै
थासू सूरज-ताप तळै
थारै दुखरा हेम गळ
सुणोसाभळो,वात'हामळो,जुग रो हेलो हे
जागो रे, जागो रे, जागो रे

करणी नीव चला चेजरा
लावा थान बणा वेजारा
खीच ऊमरो सीच पसीनो
मोटी तालो लाट विजारा
सुणी डावडा, उठा फावडा, तपो तावडा
मैणत रो म्हुरत टळै
ज्यू चोथी पो'र ढळै
हल सू करसी हेतो
जा रै पारस बणसी रेतो
जा रै भगवत राखै चेतो
अन-धन भडार भरै
स्यावड मिणगार करै
थासू जम रा हाथ डरै
थारै विरमा पौव करै
सुणो साभळो, वात हामळो, जुग रो हेलो है
जागो रे, जागो रे, जागो रे
रळ मिळ चालो कुटी अटारी
नेह वाघल्यो कलम कटारी
अरे ! देस रो रथ हाकण मे
भेद-भाव री वात कठा री
सुणी नगारा,
जाग जगारा,
थाम हुकारा,
सपना रा वाग फळै
सोरभ रा समद ढुळै

△

किसोर कल्पनाकांत

जनम स्थान	रतनगढ (बीकानेर)
उमर	सताळीस बरस रै नैड़ी
पिताजी रो नाव	श्री चिरंजीलालजी मिस्र

रतनगढ सूं छपणवाळै 'राजस्थानी पत्र थोळमो' रै सम्पादक रै रूप में किसोर कल्पनाकांत नै हर राजस्थानी प्रेमी भली भांत जाणै। किसोरजी नै संगीत चित्रकळा अर काव्य री रुचि आपरा पिताजी सूं विरासत में मिली। टाबरपणै सूं ही पाठशाळा में हायलिख्या छापा निकाळण में आपरो मन रमतो। इणी कारण स्कूली पढाई आपरै गेलै गई अर किसोरजी रो मोजी मन साहित अर कळा रै ऊजड पण लुभावणै मारग पड़ग्यो। बरस बीतग्या पण इण गेलै रो ओड कोनी आयो अर आणो भी नहीं। किसोरजी रो घणो भावुक हिरदै मारग रा झाड झंखाडां में उळझतो निकळतो बढतो जा रयो है क्यूं के बढणो ही उण रो लक्ष्य है।

आपरी कवितावां रो विसय मोटै रूप में दो सिणगार ही है भावै वो मानवी सिणगार हो या प्रकृति रो। जमानै री मांग रै मुजब स्रम रा समता रा अर आजादी रा गीत भी आप लिखै। काळीदास रै 'कुमारसंभव' अर 'रितुसंघार' रा अनुवादां रै अलावा 'धरती री धीव' नाव सूं एक काव्य सीता रै जीवण पर आप लिख्या है। आप री अनेक कवितावां में पहलै दरजै री भावुकता पूरै वेग सूं उफणती मिलै। □

गीत

अब सुपना री सैणा-भैणां घूंघट खोलो,
मैं सुध-चाद थारला नैणां मे आवूं हूं
रूप लहुकोवण हाळा सगळा वसतर खोलो
प्यार-जुवानी रै सुख री मैं लिया बीदडो
मनोकामना री सगळो सोरम मरसातो
अंग-अंग मे अंगराग ठाडोळ लगावण
आय रयो हूं, मंगळ-गीत मिलण रा गातो
तन रा, मन रा, रूप-रंग रा सै वळ खोलो
मैं वार्यरियो बीण वजातो ई आवूं हूं
फळसा, मोरी, बंद दरूजा आगळ खोलो
थारी-म्हारी मुळकण रा तारां सूं राता
सज जावैली, बीस वणावैली भल बाता
इणी तरै ऊमर री क्यारी खिली रवैली
चलण सकैली नी कोई पतझड री घाता
कळी खिलो, रस घणो लुटावो, पांखा खोलो
मैं रस-लोभी, सचै करणो कद चावूं हूं
सगळा फूल खिलो, मुळकावो आंख्या खोलो
उजळा-उजळा अंग उघाडो, रंग उभाडो
दूधा-धोई राता मे सिणगार कढावो
काजळिया नैणां मे भरल्यो रीत प्रीत री
मन सूं मन रो चाव रळावो प्रेम बढावो
बंद करो मत, रागां रा सुवटा नैं खोलो
मैं सुर-पंथी गीत गळै मे ई आवूं हूं
भावां री मैनावां रा पिंजरा नैं खोलो



नुंवली गीता रो ज्ञान

म्हारै गीता री नुवली गीता वाचो अब
मैं नुवी भावना छंद जोड कर ल्यायो हू

ओ ग्यान करयो भेळो मैं मगळो जोड-जोड
अब नुवा सवद मैं गूथ-गूथ कर गारयो हू
इण गीता नै थे ग्यान समझल्यो गीता रो
मैं उणी ग्यान नै नुवो रूप दे न्यारयो हू
मैं किरसण हू, मायावी हू, अंतरजामी
इण खातर अब मैं नुवो रूप धर आयो हू

मिनखाजूणी रो धरम पैलडो ओ ई है
सुख सू जीवै, सुख सू पीवै, सुख सू खावै
मिनखाजूणी रो करम पैलडो ओ ई है
सुख मिन्जण मारू धरती पर अन निपजावै
इण खातर मिनखपणो राखण थे त्यार हुयो
मैं कवि वण हेलो मारण ओ ई आयो हू

हर मिनख सुखी जद होवैलो, रळ मिळ चालै
सै भणै-भणावै, समझै, जीवण रा लेखा
धरती मायड रै दुखडै नै मेटण सारु
सायत रा आखा काज करै, बदळै रेखा
के लिख्यो ? करम नै क्यू ठोको ? की काम करो
फळ धूला वण किरतार, इस्यो मनचायो हू

ओ मिनखजमारो ओजू कदे न आवैलो
इण खातर चेत जवानी मे, फळ पावैलो
अक्कल रो कारदो मता करो खाली बैठ्या

धरती माथै खेती खडियां सुख पावैलो
मोटचार कुहावो, सरम करो, स्रमदान करो
स्रम नै वरदान सदा मैं देतो आयो हू

स्वारथ री मोटी लावा सू मतना बाधो
ओ चडस कुवै मे डूब'र रीतो ई रैला
परमारथ धन मचै करल्यो इण जीवण मे
स्याला रा पाना जुग-जुग सूं वाता कैला
मत गरब करो, हिवडै मे दिवलो चासो अब
मैं ग्यान नैण सू देख्या, सत वण आयो हू

मैं रामायण रो राम, किसन गीता रो हू
मैं परमारथ रै आसण पर ई वास करू
मैं स्रम-सागर मे सेसनाग सत रो राखू
मैं मिनखपणो छोडणियै रो झट नास करू
इण खातर सुणो साभळो थे इण हेलै नै
मैं जुग-जुग सू औतार धारतो आयो हू



मनै उबारो !

दियलो थारो बैठ्यो [illegible]
पण [illegible] रै पाग लाग्या
आज पधारो मनै उबारो !

मिरगाजूणी में जद आया
रूळा गांमड़ै में [illegible] पाया
[illegible] में [illegible]
मैं [illegible] [illegible] [illegible]
जद मैं समझ्यो [illegible]
पण [illegible] [illegible]
मनै उबारो ! मनै उबारो !

समझ पड़ी जद मूं पछताया
[illegible] सामन थारै [illegible]
ऊन-जनून [illegible] [illegible]
चुप रह जावो जद मैं [illegible]
देखो म्हारा गुणां [illegible] दिन
म दए [illegible] सामने [illegible]
ऊधो म्हारा, काल [illegible] !

माट धरम री ऊळी पागी
जद भी तन-मन मुगती पागी
ता घर मनड़ो धीर चघागी
पाछा दिराड़ा मूळा भागी
आ ही सोच विचार'र मन में
थारो सायत नाव उचारयो
इतरो चारो, मतना मारो !

अब मन म्हारो यू पिसतावै
गया दिवस के पाछा आवै
नैण पिराछित नीर बुहावै
रोतो कठ राग के गावै
पण मतजळ सू मैं अब म्हारो
मनडो धो-धो घणो पखार्‌यो
गळग्यो सारो, मैल विचारो।
पाळ बाधद्यो अब मळ आगै
नही मैल अन्तर मे लागै
सोया भाग म्हारला जागै
नीद धुलसणी वेगी त्यागै
इमो करो मन-धाम, आज मैं
अतर सू प्रभु! तनै पुकारयो
भरो हुकारो, भाग सुधारो।
तोड जाळ माया रा नाखो
वचन भलेरा वर दे भाखो
मनै देव थे थातन राखो
भूली वात मता अब चाखो
एक नाव है थारो प्यारो
जिण बिना तो मै कदे न सार्‌यो
की नी म्हारो, तन-मन थारो।
भाव भुळावण भूडा भरिया
जिण सू तन-मन तिसिया मरिया
फूट गया अब काचा घरिया
मेह पड्यो ऐंटो सावरिया
गुण गीता मे गावू ला मै
थे म्हारै घर साभ पधारो
रस्तो थारो, देखू सारो।

कृष्णगोपाल कल्ला

जनम स्थान　　मेड़ता (नागोर)

जनम तिथि　　तेरा नवम्बर सन् १६३७ ईसवी

किसनगढ़ (अजमेर) रा रवासी कुंवर कृष्णगोपाल कल्ला राजस्थानी रा ऊगता कवियां में आगल्यां पर गिण्या जावण वाळा मनसू है। आपरी लिखण कळा रै जस री सवरो उण दिन वध्यो जद भारत रा आला विस्वविद्यालयां री नाटक प्रतियोगिता में आपनै पैली जगां मिली। आपरी संस्कृत मिली भासा में आपरै ग्यान री झळक आवै तो आपरै भावां में सरसता री रळक मिलै।

आप राजस्थानी कवितावां रो एक संग्रह 'झामरक' रै नाव सूं करयो है। आज रै साहित री अनेक विधावां में आप राजस्थानी अर हिन्दी दोनूं भासावां री रचनावां में आजमाई है। कल्लाजी री रचनावां में एक कानी मातभोम रो दरद फूटयो पड़ै तो दूजै कानी मायड धरती रै कण-कण खातर अपणायत रा भाव ऊमड़ै। विद्यापति रा पद गीत गोविन्द अर रतसधार रा राजस्थानी अनुवादां में आपरो समरथ सब्द भंडार अर भावां-री परख मूंडै बोलै।



आंखड़ल्यां

भरम गमाई आखडल्या
रगताभ कवळ री पाखडल्या

छिपा छैल री छिव परछाई, छानी राखण पलका मूद
फेरु परगट व्है व्है जावै, नैणा लुकी रूप री बूद
जतन घणेरा सैं कर हारी, घणी लजाळू आख्या मीच
पीटै डूडी आस वनूडी, प्रीत छकी मोतीडा सीच
अटपट वाणी रस अळसाणी, तिरछा तीखा टेढा सैण
इसडा रूप लालची लोभी, रवै न छाना धण रा नैण
अळसाया अणियाळा अधमुद, घणा उणीदा रातजग्या
भूहा बाकी पलका थाकी, रगरातोडा प्रेमपग्या
लोयण लालो रग रगाळी, रूडी रूप लुभाणी रैण
आख्या पाख्या पा उड जाव, पावैं अणसभव सा वैण
रूप समुन्दर माय तिरती, फिरती छिपती माछ्या मैण
झाकैं उभक चाव कर चौडै, लुळैं लजावै सारया दैण
ओलै राखी रवै न छानी, कुण जाणै कुण भुरकी नाख
विवस करी सरवस हर लेगी, किण री कवळ पाख सी आख

नटगी डिगगी ठगगी उडगी
मधु विरसी मधु माखडल्या
भरम गमाई आखडल्या
रगताभ कवळ री पाखडल्या



आंसूडा

ऐ जुग-जुग जूना दुख साथी !
ऐ अणनखवारो पीड़ा रा ल्हाना बालम बारात चढ्या—
दुख-दुलहण री नथड़ी नाथी
आंख्यां रै अतल समदर मे, पिय पनडुब्बो डुबकी मारी
गाढा माछणी चौनिजरा मे, चल सीप ओपण्या थिर हारी
जा मिनगा मुहूरत म्हात नखत, सुपना री उरम्यो इमरत जळ
साजन पैरावण उरमाळा, सर्चं डाल्या मोती निरमळ
रग रुपाळै रतनागर मे, ऐ नाचल्ला माती पळक्या
पूरोजरा प्रेम डोर माही, अणदीठा दीठा हूं ढळक्या
ऐ नेह सुघड़र माळ गुथ्या, हटवाड़ ऐ ऐद सज पावै
अणमाल विकै जिम मोल भाव, डूडी पीट्या ऐ मरमावै
पण ऐ मातोड़ा घणमू घा, अण जिव्या जिवै बाजरा रद
न्योघार रहै होड़ पारखिया, यू घणा जिवै वणजारा नद
ऐ मणिया प्रेम-सुमरणी रा, गिण गिण घसगी ऐ आगळिया
जागण ज्यू जप रच्या बैठी, ऐ आज विजोगण आनडिया
आ निजर डोर भीगी पडगी बाथा भरती ज्यू पथा फिर
यू वाट चलता चोळा हा, पण निजर पडी न पदावा घिर
आ विषम बटाऊ आसूडा, ओ वाट चल्यो हारयो थाको
धरमादरीळारी साळा माळो, नी ठैंग्यो ठठक्या मन पाको
आटोलै ओठा रे हाया, मोत्या सजता जो मेसडला
व आज विजोगण झुर झूये लट-लट आसू सदेसड़ला
पण ऐ मोतीड़ा घणमू घा, हिवड़ै रा हस चुगै चूचा
माना री पारखल्या रळक्या, ऐ दुल्लभ मोतीड़ा ऊचा
जाण गुमियोड़ो मिल्यो कदे, किण री जाणै ऐ परछाई
ऐ पीड़ा रा प्यारा न्यारा, वेगी निरभागण पछवाई
सुख सू साम्हेळो हुयो नही, गायो न सायण्या सोवैलो
फेरा पूरा हुं ण पैली, पडत जिण सू मागै धेलो
खिण वर्णे मिटै इसड़ा आसू, ऐ प्यार हार कद वण्या वता
कद नण्या वता ऐ सुख माथो
ऐ जुग-जुग जूना दुख साथी

△

बिरखा

काळो कामणगारो बादळ आडो साड धाट कै
सोरमसाणी पून सुहाणी रग रग जोबन फू कै
मोरया बोलै आवै ओलै
कोयल कूक सुणावै। गौरी नैणा नीद न आवै हो नैणा०
रतनाळो आखडल्यां थाकी जो जो पिव री बाट
छोळा खाती हिय हुळसाती छिणमिण छिणमिण टाट
बीजळ पळकै आसू टळकै
बादळिया गरणावै। गौरी नैणा नीद न आवै हो नैणा०
छोटी छोरयां छानी छानी झुकै झरोखै झावै
हरखी फिरखी डहकी डम्पी कामण भुरकी नाखै
यचै न छैलो भु बरो गैलो
पाखडल्या बध जावै। गौरी नैणा नीद न आवै हो नैणा०
नुई नुवेली म्हैल अकेली बोलण मे सरमावै
घू घट टाळै मधरी चालै पिव रो हिव भरमावै
रूपा गैली तीजण छैली
मैडी काग उडावै। गौरी नैणा नीद न आवै हो नैणा०
बालम रीझै हिवडो भीजै विगसी-विगसी रात
हाथ विकाणी रात विहाणी सुण सुण पिव री बात
भारी पळका बिखरी अळका
कामण हरख जणावै। गौरी नैणा नीद न आवै हो नैणा०
सास रिसावै नणद चिडावै देवर घेवर खावै
पिवडो आवै मन बिरमावै लुक छिप देखण चावै
छैल छबीलो भवर रमीलो
आडो तिरछो आवै। गौरी नैणा नीद न आवै हो
नैणा नीद न आवै।



गजानन वर्मा

जनम स्थान — रतनगढ़

उमर — पैंताळीस बरस र नेड़ी

कवि सम्मेलनां रा मचां पर राजस्थानी लोक जीवण रा गीत लोक धुनां में गावण वाळा कवियां में गजाननजी आगली पगत में बठ्या है। 'धरती री धुन' 'सोनो निपजै रेत में' अर 'वाराभागो' नाव सूं आपरी कवितावां रा तीन संग्रह निकळ्या है। राजस्थान रै मानख नै उण रै घर आंगण गाव गुवाड़, अर खेत-खळा रै घर वातावरण में बिठा'र नई विचार क्रान्ति री किरणां सूं उण रै भीतर अर बाहर रोना नै प्रतिबिम्बित करणो आपरै गीतां री खासियत है। आपरी गावण री कळा गीतां में हाथां भाल'र राजस्थानी भासा रा कासीद बणा देस में दूर ताईं भेज दिया, जिणसूं आज री राजस्थानी रै प्रचार में घणी मदद मिली।



अड़वो

अडवो ऊभ्यो खेत मे
सोनो निपजै रेत मे
खबरदार ! हरियाळी खेती कै कुण नजर लगावै
रात अंधेरी वाड तोड ओ कुण छानै सी आवै ?
ऊजड वालै रै
हरी-भरी खेती पर घमर घालै रै।

अडवो ऊभ्यो खेत मे
चादी निपजै रेत मे
हाथ गडासी जेळी सूड करावत करसो हरस्यो
डब-डब नैणा आस उळीची जद वादळियो वरस्यो
खेत सुधारै रै
सकडी सीवा रेवड कुण उतारै रै।

अडवो ऊभ्यो खेत मे
रूपो निपजै रेत मे
चावड-धावड चोक करचो आसूदी धरती वाई
दिन भर करचो निनाण खेत मे दोन्यू लोग-लुगाई
अडवो ललकारै
ओ अगद रो पाव' क कुण उखाडै रै ।

अडवो ऊभ्यो खेत मे
सोनो निपजै रेत मे

म्हारो करसा कामणगारो हाथां मिनख बणावै
भूप भगीरथ अडवो सारै गुळ गे वस्ट मिटावै
रात ग्वाळ रै
पाणी माड्या सडयां'व पथ उजाळै र।

अडवा ऊभ्यो खेत मे
चादी निपज रेत म
वाटी नीप गू थळा वाडया नाजी नाडया सीनी
ऊपर-नीच धाघ सौस गाळी हाडी धर दीनी
जीवण जागै रै
अडवो अडता देग टागरा भागै रै।



दीवाळी रो गीत

दीवाली रा दिया जळै
च्यारू मेर च्यानणो, नीचै कूळै काळो चोर पळै
दीवाळी रा दिया जळै
महला मे मतवाळा बैठ्या मौज करै
भूखा मरै मजूर क्ठै सू पेट भरै ?
रावण घणा जमी पर हरण करै लिछमी
राम निसरग्यो, मिनखपणो बेमौत मरै
सूना सासर फिरै करसणी दुख पावै—
भणै रामजी ! सिर की आफत दूर टळै
दीवाळी रा दिया जळै
गाजै-बाजै जीत रामजी घर आया
आगै होय माधिया भाई गुण गाया
बेचारी सीता सतवती मग डोलै
झासा दे-दे कमतरिया नै बिलमाया
साची कहता हिवडै री हेली हालै
पडदै ओलै चोर-लुटेरा दाळ दळै
दीवाळी रा दिया जळै
सुसग्यो तेल दिया रो पण बाती सिलगै
मावस रात अंधेरी मन-मन मे बिलखै
तारा मुळक-मुळक पल मे फीका पडग्या
पौ फाटी सुण आज अगूणो दिन चिलकै
घणू तुकग्या वार्‌या और तिवार्‌या मे
मिनखा खातर धरती कायर-चोर फळै
दीवाळी रा दिया जळै



[

गीत

रुत अलबेली
दिन अलबेलो
आभो बदळै रंग बदळगी मिनखाजूण पुराणी
धरती सागण उजळी धोयी,, पण है नुंवी कहाणी
मिणत-मजूरी करै जाटणी, फक मारै ठुकराणी
गरव हिमाळै-रो गळ बैग्यो बण गंगा-रो पाणी
नुंवो धान है
नुंवी सान है
खोटो पीसो चल्यो आज तो पाई वटै न धेलो
रुत अलबेली
दिन अलबेलो
सर-सर करती पून बधाई बाटै गीत सुणावै
मन मे राखी वात न रैवै भोर भळी मुसकावै
टाबर-टोळी फाळी आडै आपस मे बतळावै
मिनख मजूरी करता हरखै बिरथा देव न ध्यावै
डरमत भाई
बीर सिपाही,
वडका म्हनै गैल वताई, पकडो सीधो गेलो
रुत अलबेली
दिन अलबेलो



गणपतिचन्द्र भंडारी

जनम स्थान — जोधपुर

जनम तिथि — भादवा वदी ४ संवत १९७०,

पिताजी रो नांव — श्री रामनारायण जी भंडारी।

भंडारीजी रा दो रूप लोगां रै सामनै है—एक कालज रै अध्यापक रो अर दूजो सम्मेलनां रै कवि रो। दोनां में ही भंडारीजी आपरी विसेसता राखै। कालज रा छात्र जिण जिन्दादिली खातर आपरी तारीफ कर चुका उणी जिन्दादिली री सराहणा सम्मेलनां रा स्रोता भी करै। हिन्दी कवितावां रै मुकाबलै में आपरी राजस्थानी कविता बहोत थोडी है पण जो कुछ है उणमें तीखै व्यंग्य री छटा देखता ही बणै। 'मकदीम' नांव सूं आपरी हिन्दी राजस्थानी कवितावां रो संग्रह छप्यो है। राजस्थान ही क्यूं बारै कळकत्तै बम्बई तक रा सम्मेलनां में भंडारीजी नै बुलावा आवै जठै जा'र वै आपरी एक न्यारी ही छाप छोड आवै। राजस्थान री नई पीढी नै साहित्य अर काव्य री सीख गाणै रो काम भी भंडारीजी आपरै जिम्मै ले राख्यो है जिण नै वै घणी खूबी सूं निभा रया है।

□

नवी जिन्दगी

रात ढली परभाती गाती नवी जिंदगी आवै है
जाग जाग माटी रा माटी ! माटी थनै जगावै है
सूतो मत रै अजाण, वैठो होय जा किसाण
काळी रात गई

धरती सूं धणियाप ऊठग्यो ठाकर राजा राणी रो
थार सागै हळ जोतैला हमैं पूत ठकराणी रो
जुग पसवाडो फेर लियो है, भाग जागियो ढाणी रो
नाडा नाडिया रै पार, लाली छाई है अपार
हेलो मार रही—सूतो मत०

मझ ऊनाळै थूं तपियो नैं धणी कियो महला आराम
थारै खन पसीनै सूं वारै हाथा में हुसिया जाम
मिनख छोड कुतरडा पाळया जद धणिया सूं रूठयो राम
सूता गैया सरदार, भोगै मोई भरतार
धरती छोड चली—सूतो मत०

देख ! गढा सूं लटका करती लिछमी छमछम आवै है
एक-एक कर जोर-जुलम रा दिवला बुझता जावै है
मारग में वारोठया वैठा लिछमी लूटी चावै है
करसा ! होस सभाळ ! आती लिछमी रुखाळ
लूटता जेझ नहीं—सूतो मत०

बधा वधग्या, नहरा खुदगी, खेत नहीं तिरसा रैसी
थूं धरती पर पटक पसीनो, वा ढेरा मोती देसी
जे भण गुण हुसियार होय थू, बोरो लूट नहीं लेसी
आई आई बहार ! उजडी जिंदगी सवार
है वेळा बीत रही

सूतो मत रै अजाण, वैठो हाय जा किसाण
काळी रात गई !



कुरसी मैया री आरती

मिनख उवारण, मिनख डुबावण, जै कुरसी माई
प्रजातन्त्र घर जलमी, मजातन्त्र व्याही जै कुरसी माई
और देव दोपग्गा, चारभुजाधारी
दोहत्थी, चौपग्गी, धिन माया थारी—जै कुरसी माई
हे कळजुग री काळी, थू जद महर करै
गळी बुहारण वाळा, सिर पर छत्र धरै—जै कुरसी माई
थारी बरसी मायँ, मेलो जबर मचै
बडा बडा रा कच्चा चिट्ठा रोज बचै—जै कुरसी माई
भला भला भी भटकै, भौपू ले रेकै
भला भला पर कादो, भला भला फेंकै—जै कुरसी माई
वागवीर भिड जावै, तीर चलै तीखा
साचोरी साड्या रा सींग पड़ै फीका जै कुरसी माई
एक बार जो थारी, चरण सरण पावै
गुण रै माथै माखी ज्यू चेठ्यो जावै—जै कुरसी माई
जो छळ वळ सू ध्यावै थारी सेव करै
भाई, भतीजा, साळा, सब नै न्याल करै—जै कुरसी माई
मोटर थारी वाहण, मिंदर है बगला
याने खुद रा जाणै, वै डूबै सगला—जै कुरसी माई
ज्या नै थू तज देवै, चैन नहीं पावै
उचक उचक गैलां ज्यू थां कानी धावै—जै कुरसी माई
मोटर नै तज जो जन, वोटर नै ध्यावै
वो थामे मिल जावै, पाछो नी आवै—जै कुरसी माई

गणपति स्वामी

निवास स्थान पिलाणी (राजस्थान)
उमर ५८ बरस रै नेडी

गणपतिजी र जीवण री सगळा सू मोटी घटणा सायद आ ही है के इणा न राजस्थानी रै आन्दोळण रा सूत्रधार स्वर्गीय श्री सूरजकरणजी पारीक रै कन रहणे रो मोको मिल्यो। पारीकजी री प्रेरणा सू राजस्थान रा लोकगीत भेळा करण रो काम अर सोक दोनू आ न मिल्या। आज र राजस्थानी प्रेमिया न आज ताई लोकगीता रो इतणो चोखो सग्रह नही मिल पायो जितणो गणपतिजी रा जुटायोडा गीता रा पारीकजी छपवायो। इण न भल होणी कहा चाहे सस्कार पण या बात सोळा आना सही है के गणपतिजी राजस्थानी लोकगीता री आत्मा न आपरै हिये मे ठेट उतारली है। लोकगीता रा सद अर वारी धुना गणपतिजी री रग रग म समायोडी हे। भावुक हिय रा धणी हाणे सू गणपतिजी घणै मीठ सुर सू लोकगीता नै गावै अर उणा री तरज पर आपरी निजू रचनावा भी बणाव। गीता र गाहका न उणा न हाथवसू करण मे कितणा फोडा पड आ चरचा भी गणपतिजी री आपबीती होण सू वारै मूडै ही ओप।

राजस्थानी काव्य म गणपतिजी री देण लाबी चौडा नी है। पण अ जो कुछ लिख्यो है वो थोडो होता थका भी घणो फूटरो है।



लोरी

वाळो पाखा बायर आयो, माता वैण सुणावै यू
म्हारी गोद सिळाई रे वाळा, मैं तनै मखरी घूटी द्यू

तेज कटारै नाळो मोळ्यो, नाळो मोळत बोली यू
पतस्याही फौजा रा वाळा, मीस मोळ घर आयें तू

मेडी चढ अर थाळ वजायो, थाळ वजावत बोली यू
च्यार कूट चोफेरै वाळा, नौबतरी धमकाये तू

वाळो गोद्या दूध चुघावै, दूध चुघावत बोली यू
धोळै पय पर कायरता रो, काळो दाग न लाये तू

कुवो पूज कर घर पाछी आई, फळसै वडता बोली यू
फळसै मे ढोला रै ढमकै, आरतडो करवाये तू

रणखटोलै वाळो सूत्यो, लोरी देता बोली यू
रणखेता चतरगी सेना, गाढी नींद सुवाये तू

सोवन झूलै वाळो झूलै, झोटै झोटै बोली यू
उतणी बार हिलाये प्रिथमी, मैं तनै जितणा झोटा द्यू

मुरधर देस

बीत्या मुरधर देस थारा वै दिन बीत्या रे
सूरा थाई घालता, ऊभा खेता माय
जे दिन मुरधर राजतो, तरवारा री छाय—थारा०
घर-घर कोडम जामती, घर-घर बीका वीर
घर-घर राणा समरसीह, घर-घर हठी हमीर—थारा०
सूरा लड़ता खेत मे, धर केसरिया भेस
सतिया पड़ती आग में, कर कर खुल्ला केस—थारा०
बादळ बारा साल को, लडियो लाखा साथ
सारी दुनिया देखियो, वो खाडो वो हाथ—थारा०
आठ पहर चौसठ घडी घुडलै ऊपर बास
सेल-अणी हू सेकतो, बाटी दुरगादास—थारा०
दुसमी को तकियो कर्यो, वैर्या री सुख-सेज
जी पर सुख सू पोढियो, वो गोरो रण-सेज—थारा०
राणो भीव छुडाइयो, मात कर्यो सुलताण
नार पदमणी राखियो, सीसोद्या रो माण—थारा०
फोज पछाडी खेत मे, फेरी तोप मुहाळ
राणाजी दी ही सुणो, 'हळदी' मे ललकार थारा०
ऊची धजा फरूकती, बजता वीर निसाण
लख-लख छाती फूलती, पडता मूछ्या पाण—थारा०
दूर गई बा वीरता, सुपन भया वै त्याग
जळ बळ कर सीतळ भई, वा जौहार री आग—थारा०
माणस गी के जातडी, डरता जम का दूत
कठै गया रण केसरी, बळवाका रजपूत—थारा०
उठो छत्रियो! जळमभोम नो फेर करो उत्थान
एक एक कण मीचदयो, थारै सूना हिदुस्थान थारा०
हे जग जामी! फेर जगादयो, सिघा री सतान
इक बर वै दिन भळे दिखाद्यो, दूठो ओ वरदान - थारा०



स्व० गरोसीलाल व्यास 'उस्ताद'

जनम स्थान जोधपुर
पिताजी रो नाव श्री चद्रभानजी व्यास

'उस्ताद' सही अरथ मे जनता रा कवि हा। आजादी री लड़ाई म सन् १६३० सू सन् १६४७ ई० ताई आप पत्रकारिता रै साथै साथ क्राति रा गीत लिख्या अर खुद गाया भी। आज किता'क कवि है जिका करसा अर मजदूरा र बीच खड़या हो'र उणा री भासा मे गीत गा गा'र क्राति रो सख फूक। जन भासा री पकड़, उणा रै दुख दरद रो अनुभव अर उणा रै ही रहण महण रो ढग अपणाणै वाळा समरथ कवि ही जन कवि वणणै रो दावो कर सकै। 'उस्ताद' इण कसोटी पर खरा ऊतरै। योजनावा रै सिल-सिलै मे 'अल्पबचत' अर सहकारिता' आदि कई विसया पर आप गीत नाटच वणा'र उणा न मच पर भी दिखाया हा। जिका सू आपरी सामरथा रो पतो लागै।

सुतनता रै खातर लड़णवाळा उस्ताद' खुद सुतत्र प्रकृति रा मिनख हा। उणा र मन म देस री आर्थिक सुतत्रता सारू गाव गाव घूम'र गीत गाणै री इच्छा ही। राजस्थानी सब्दा अर भावा री आप री जाणकारी घणी सराहणै जोग ही। इण सू ही आप रा गीत घणा पूटरा अर असर करण-वाळा वण पड़या। 'जन कवि उस्ताद' नाव सू आपरी रचनावा रो एक सागोपाग सकळन निकळया है।



दीवट

ओ रे भाया, रुक मत भाई, झक मत भाई
उजड़ खड़ती आंधी आई
दो झटका दे आ टळ जासी, आ गळ जासी रेत चढ़ाही
रुकता पैंली आप मरैली, जीव जठै तक आगै जाही

ओ रे वेली, थक मत भाई, बक मत भाई
वाट कठण, काया कमळाई
अडव रगीला, काळा, भूरा, पीळा जागै, वाट वटाही
तू सागै आगै वध जुग रै
जीवण दे, जीवण रै ताही

ओ रे सुगणा, छर मत भाई, तक मत भाई
नवी कटै है बरग लड़ाई
धर मजला जीवण जोड़ै वध
दीवट लेले पथ बताही

ओ रे उरजन, डर मत भाई, मर मत भाई
दिन-दिन दीसै मजल सवाई
आ थारी काया पड़ जासी
पिरा दे जीवण चाल गटाही
नित आगै वधती जिंदगानी
आ दीवट आगै ले जाही

घरे आजा

आ रेत हुई रुतमाती, साईना थारी
धरण बुलावै घरे आजा !
आ बाय चलै वरसाती, रंगराजा थारी
कामण घवरावै घरे आजा !

नवी जोड थारी नैं म्हारी, नवी जोड नारा री
आभै नवा वधाऊ दौडैं, चढी उमग सारा री
रुत हाळी थारा, बहल्या उकळावै घरे आजा

इण जुग रा भागीरथ ल्यासी, सूखै थळ मे पाणी
बाग-बगीचा सू ढर जासी, खडै खेतडा ढाणी
मनमाळी थारी, क्यार्‌या कुमळावै, घरे आजा !

आठ मास परदेसा बीत्या, अब बिरखा रुत आई
धण, धीणो, धरती सैं तडफैं पुळ-पुळ तिरस बधाई
धनगोरी थारी, गायां रभावै घरे आजा !

नगर, गाव, खेडा मे लाग्या, जन-महनत रा मेला
नर-नारी कमतर मे कूद्‌या, जन-कारज मे भेळा
वळहाथी थारी, मरवण सरमावै, घरे आजा !



मत जा साथी

मत जा साथी पथ पुराणै
मत रण-तुरगा रा असवारा नै मोटर अजन मे ताणै
जिण मारग परताप पधारया, जिण इळ दुरगै काज सवार्‌या
उण जूनै मारग सू साथी, पोच न पामी आज ठिकाणै
— मत जा०

उण जुग धरती ही महाराणी, थाय नही घर री धणियाणी
तरवारा री धार दब्योडी, धरण दावली राजघराणै
मत जा०

किण रो मुलक, कठै ही जनता, जन सू वधर कुळा री ममता
मुगला रा सावत रण बाका, कुळ पर कटग्या, जगती जाणै
— मत जा०

आज मुलक आजाद एक है, मुळ सू इधक मसीनमेक है
धरम-गाठ जळ बाध, बीजळी, गळा बधै जद लोक उजाणै
मत जा०

पूज बडेरा सीस भुकाले, टम मिलै वारा जस गाले
पण तू क्यू दिल्ली सू लड रे, चढै कटक ले क्यू उभराणै
मत जा०

ब्याह बिरूटा तिलक घणी है, मनै दवावण भीत बणी है
इण जुग रो अम्बार छिपावण, क्यू जना जूभार बखाणै
—मत जा०

आगै देख मड्या पग ताजा, हिल-मिल मिनख मजूरी राजा
हुनर हेत सू वदळै जीवण, जीवै सो जग नै गत जाणै
—मत जा०

गंगाराम 'पथिक'

जनम स्थान बीकानेर
उमर तियालीस बरस रै नैड़ी ।

पथिकजी जीवण रै संघर्ष री नदी मे ऊंडी डुबकी लगा'र कविता री रतन काढ्यो है। दुनियादारी रा धंधा मे रहता थका कविता करणिया घणा मिल, पण कविता री मस्ती मे दुनियादारी न छिटकावणवाळा मिनख बिरळा ही लाधै । पथिकजी री गिणती दूजी भांत रा लोगा मे ही है। पथिकजी री कविता जीवण रा कठोर सत्या री धरती पर घणो दुख दरद झेल'र निपजायोड़ी खेती री ज्यू है । दुनिया जिण नै व्यवहारिकता री नाव देवै उणनै ही आदर्श रा 'गायक कायरता कह'र बखाणै । इण कसौटी पर पथिकजी री कवि व्यावहारिकता सू कोरो ही है। इण अभाव रा दुख झेलणा पथिकजी री राजीना री काम है।

मूळ रूप मे पथिकजी हिंदी रा कवि है। पण राजस्थानी मे व जो कुछ लिख्या है उण सू वारी भावुकता अर कारीगरी रो वेरो पटै । साहित्यिक मचा पर वारा एक दो गीत तो घणा लोकप्रिय भी हुया है। इण वाता सू प्रभावित हो'र ही इण सग्रह मे पथिकजी रा गीत दिया है ।



कीलियो

कुक्ड़ू-कूँ कूँ करै किलगडो, डाफर चालै रे
ची ची ची चीं करै चिडकल्या, पत्ता हालै रे
आयो रे, आयो रे, आयो रे, कीलिया ल्यायो रे

भर्‌यो बारियो ल्याव, चाठ सूकी गरणावै रे
खेळी खाली देख, डागरा मुड-मुड जावै रे
आयो रे, आयो रे, आयो रे, कीलिया ल्यायो रे

घडा पड्या अणगिणत, खडी पणिहार्‌या जोवै रे
घर में बैठ्या टाबर-टोळी, तिरसा रोवै रे
आयो रे, आयो रे, आयो रे, कीलिया ल्यायो रे

बिकै दूध रै मोल, काळ पाणी रो पडग्यो रे
तू सारै तो सार कीलिया, कारज अग्यो रे
आयो रे, आयो रे, आयो रे, कीलिया ल्यायो रे



मत घबराई रे

मोत्या मूघो मिनख जमारो
धरती थारी, आभो थागे
छोड चाकरी सुख री
दुख रो साथ निभाई रे
लाय पड़ै, लू चालै करसा, मत घबराई रे

भूखा सू भगवान न बोलै
पाप धरम रो भरम न खोलै
मिनखपणै रो धरम
'मिनख सै भाई भाई रे'
लाय पड़ै, लू चालै करसा, मत घबराई रे

माटी री ममता दुखियारी
मुरझाई मन री फुलवारी
कपट कमावै धन रा लोभी
करम कसाई रे
धोरा धूजै, पथ न सूझै, आंधी आई रे
लाय पड़ै, लू चालै करसा, मत घबराई रे



मिनखपणो बेमौत मरे

मिनखपणो बेमौत मरै रे, डागर लोई पी पसरै
टावर रुळता फिरै, जवानी जोवन बेचै पेट भरै

सूनी सरवर पाळ, पखेरू डाळ छोड परदेस उड्या
अळगोजो अणजाण गीत सू, गाव छोड गायक निकळ्या
भोळा-ढाळा लोग मजूरी करता-करता भूख मरै
टावर रुळता फिरै, जवानी जोवन बेचै पेट भरै

ममता रो मन आज उणमणो, आस गई विसवास गयो
सास-सास रो मोल चुकावण मे सगळो जीवण निकळयो
खटी अधवणी छान बिलखतै आगणियै सू नान करै
टावर रुळता फिरै, जवानी जोवन बेचै पेट भरै

बेघरबार बटाऊडा न गळी-गळी वतळावै है
घाण बिगड्यो धरती माथै हाथ हाथ नै खावै है
खडी अकेली काग उडावै, कद गोरी रो काज सरै
टावर रुळता फिरै, जवानी जोवन बेच पेट भरै



चौमासो

घूमर घालै आज मोरिया मन विलमावै रे
धरती गीत सुणावै, आभो रस वरसावै रे

ताल-नळाया भरी, हरी माटी री काया रे
गोरी रा साजन परदेसा सू घर आया रे
सज सोळै सिणगार सुहागण सेज सजावै रे
धरती गीत सुणावै, आभो रस वरसावै रे

टावर-टोळी कुटम-कबीलो, लोग-लुगाई रे
रळ-मिळ करै निनाण, करै नखरा पुरवाई रे
पग-पग पर करसा री टोळी तेजो गावै रे
धरती गीत सुणावै, आभो रस वरसावै रे

छिन-छिन बीत्यो जाय, बावळा, देरी मत कर रे
हाथ गीजियो, हळ काधै धर, धोरा पर धर रे
खेत खड्या मुसकावै, हेलो मार बुलावै रे
धरती गीत सुणावै, आभो रस वरसावै रे



चडीदान सादू

जनम स्थान   हिलोडी (नागौर राजस्थान)
जनम तिथि   आसोज सुदी १३ सवत १९८० वि
पिताजी रा नाव   श्री मघदानजी सादू

चडीदानजी री साहित धरोहड स्कूल कालेजा री पढाई रै पाण नहीं, बापौती रै पाण वणी है। चारण कुळ म जनम लेवण सू छोटी उमर म ही आपनै काव्य री साव लागी। बडेरा रा अनेक छद कठस्थ कर'र आप खुद री रचनावा भी सुरू करदी अर धीरै धीरै डिंगल काव्य मे आपरी गति चाखी होगी। बगाल हिंदी मडळ री तरफ सू ईसरदानजी आसिया रै साथै पिलाणी मे रह र आप राजस्थानी रै पुराण साहित र सग्रह री सराहण जोग काम करयो।

सूरातन रा कु डळिया भरथरी सतक रो अनुवाद कहमुकरणी सतक अर पिलाणी परिचय नाव सू राजस्थानी पद्य ग्रथ आपरा बणायोडा है। आप राजस्थानी भासा रो एक व्याकरण भी लिख्यो है। व्रज भासा अर राजस्थानी ग और भी कई ग्रथ आप लिख्या है, पण जठ ताई आपर कवि रूप रा सबध ह आपरी रचनावा पर डिंगळ काव्य रा प्रभाव घोड दीख। आप उण वहोत थोडा लोगा म सू है जिका पुराणै डिंगळ ग्रथा अर गीता रै मम नै भली भात समझ सकै अर समझा सकै। नय छन्द र साथ साथै आप डिंगळ गीत कु डळिया, दूहा आदि पुराणा छदा म परपरा मुजब काव्य रचना भी करै।



चानणी रात

चादा पिउ रै साथ खेलती रात चानणी आई

धीमै-धीमै पगल्या धरती ओढे ऊजळ साडी
झिंगुर रव पायळ झणकाती बरण सोभा री वाडी
खिलवत हार तोड गळ तारा मोती नभ छिटकाई। चादा०

देह काति दीपाती वसुधा ऊजळ रग वरसायो
मोहक रूप अनूपम सारी जगती रै मन भायो
पखवाडा सू रूठी रमणी नीठ मनाई आई। चादा०

खिण-खिण नाजाळू बदळी रो झीणो घू घट कढती
दिन-दिन दूणो रूप सवायो जोबन रै वय चढती
मधरै साम समीर सुगधित सू धरती महकाई। चादा०

सीतळ हूई सजोगण सुदर कुमदणिया हरखाई
दाहक लगी विजोगणिया मुख कवळ दिया मुरझाई
पण तोही इण नव दम्पति नै जीयाजूण सगराई। चादा०



रूडो राजस्थान

(डिंगळ गीत)

रणभीनी रेत सोण रगराती, ऊंचा घण टीवा अदभूत
करड़ा अनम रूंख वाटाळा, मानव आटाळा मजबूत

वाका गढ़ भुरजा वाकोडी, दीप गिर वाघा छिन्न देत
देखी जठै सरायी दुनिया, खागा वाकोडी रण खेत

त्याग अनैं बळिदान तणी पथ, जत मत मत द्रिढ छाप जडी
सूरत पर सूरत री महमा, पग-पग माथै लिखी पडी

वीर भोम जणणी वीरा री, दवै न वाता गया दिना
अणी टिक्णवाळो अदेसो, सूरा तणी समाध बिना

तप जौहर झाळा तपियोडो, नामी कुदण ज्यू निखळक
सतिया वप वानी गुलाल सू, दीपै सारी देह दमक

मुहडा चाढ घणा सिर पुहपा, अखसत गोळा तणा अनूप
धूप देय घमगजर धुवा गे, पूज्यो वे पणधारी भूप

साहस दुग्गा रै सीच्योडो, ऊचो थयो अमर री आन
पावू पातल र पणवाळो, उर मे भरियोडो अभिमान

भामा तणी देसभगती भळ, सागा दत वाळी सूगध
चूडा तणौं त्याग सू चावो, आ ठावो रजथान अवध

जपू कितो जस, चहो जाणणो, हिय धारो डिंगळ सू हेत
चारण साहित सू चहु कूटा, कीरत तणी फरूकै केत



राजस्थान रा पहाड़

कारण वस हेकै दिन कवि दरसण करियो
सिखराळा सोभा लख हिय रो दुख हरियो

कीरतडी गावण नू मनसा म्हो म्हारी
वाल्हा भाकरडा पर जाऊ वळिहारी

द्रढ रच्छा अरियण आघाला पुळ करणा
सकट मे सूरा रा मायक दुख हरणा

काधा झल तोपा झड गोळा कै वारी
आछा तन ओठा पर जाऊ वळिहारी

अखताया सुहडा रा साथी सुखदायक
लाठोडी विपदा मे लागा घण लायक

छाती पर छाया कर राख्या छत्रधारी
निहचळ नोवाळा पर जाऊ वळिहारी

पग-पग पर वीरा री वाल्ही वळिवेदी
मडळ मानविया रै उपर कर देदी

टोळा विण घडियोडी पूतळिया त्यारी
पावन पथराळा पर जाऊ वळिहारी

विरछा वेलडिया जुत घाटा वाझोडा
लेता वीसामो नर हैवर थाकोडा

घावलिया अगा री करवाता कारी
आछा ओखधघर पर जाऊ वळिहारी

सुहडा पग परसण सू पावण पडियोडा
धकचाळा रुधरा धुप वीमळ वणियोडा

धारण भल कीधा है या नै धूतारी
सोभाळा सिगा पग जाऊ वळिहारी

आरज कुळ ऊधारण विख्योडी वारा
खेल्या भड तो पर धुनि खागा खणगारा

समरागण भुग्जाळा गरजा नू मारी
वग्ट गिर वाल्हा पर जाऊ वळिहारी

रळतळिया सिंघासण छटा ग्रासेरा
वासविया भूपत गढ गाढा निज घेरा

गीताई ग्रोठा मे वेळा विग्डा री
डूगर डीगोडा पर जाऊ वळिहारी

ईसतडा रहिया भड इहडा ग्रासडिया
पडिया सिर पुहवी धड ग्ररिया दळ ग्रडिया

सागो सत ग्रोजू लग देवणिया त्यारी
परवत प्राचीणा पर जाऊ वळिहारी

पातल, चदरसी, भड दुग्गो विरदायक
ग्रम्मर जसवत सुत रँ सवट रा सायक

साग्रीधर वातडिया ख्यातडिया मारी
सरणाइ साधारा पर जाऊ वळिहारी

कण-कण भड रहिराळा कुकुम सू ग्ररचित
रण-ग्रग्ग रजपूता वीरता सू परिचित

सुहडा निज सिर पुहपा ग्ररघ्या यँ वारी
गाहिड गिरमाळा पर जाऊ वळिहारी

ग्रतुळीवळ हाथा सग लेखण कोघोडी
पथरा पर सूरत री गाथा लिखियोडी

थळथळ पर साची कथ कहियण सुहडा री
ऊचा इतिहासा पर जाऊ वळिहारी

भर-भर कर पीवतडी प्यालो रतवाळी
नाचती या पर नित काळी मतवाळी

तू जित रण डाका भड हाका विजया री
वाका विडरूपा पर जाऊ वळिहारी

ग्रसिधारा निरमळ जळ सापड तन सूरा
पाय। हरखाया चित मोखस पद पूरा

नमिया नह रमिया जै गोदा मझ त्यारी
तीरथ सिरताजा पर जाऊ वळिहारी

साची सुततरता राखण राणा री
कीधी रखवाळो घण मूघा माणा री

घाटी-घाटी मे रिपुसेना पच हारी
डोडी डिगराळा पर जाऊ बळिहारी

जगमगती जौहर री झाळा धधकी छी
सतिया रै सतव्रत री साची हद व्ही छी

हसती हर-हर जपती कीधा तन छारी
सत री सम्माध्या पर जाऊ बळिहारी

केसरिया कीधा भड वनडा-सा वण कर
उन्नागा खागा भुज दडा झारण कर

होता कम धामाहर ठेल्या कै वारी
भूधर वाकोडा पर जाऊ बळिहारी

रहिया ढिग रणरसिया त्यागी मन मोटा
राखण निज अनमीपण आरज वर ओठा

कातर डर वाहुडिया छाया लख ज्यारी
सूरातन सिखरा पर जाऊ बळिहारी

भाला री अणिया सू भाटा भिदियोडा
गाढा वण सहिया घण सागा धम्मोडा

अविचळ पख राखी रजथानी वीरा री
आतम आधारा पर जाऊ बळिहारी

जोवता प्राचीणी वाता समरावै
रग-रग मे वीरत रत लहरा उफणावै

आवै ऊमगा मन पूजन करवारी
रजवट रा रक्खा पर जाऊ बळिहारी

कायव मे केता कहु मन रा भावा नै
आबू की ओपम्मा छिति रा छावा नै

बयणा किम वरणू छवि नयणा नीहारी
गिरवर गरिमाळा पर जाऊ बळिहारी

△

चद्रकुमार 'सुकुमार'

जनम तिथि   ६ सितम्बर, सन १६३२ ई०
जनम स्थान   जयपुर
पिताजी रा नाव   श्री नाथूरामजी गढवाल

अध्यापक सुकुमारजी पाछला कई बरसा सू गीत लिखता आ रया है। आपरा गीता मे राजस्थान र गावा रा जीवण अर टाबरपणै म रमता थका खेल्योडा खेला रो भाव भरयो वरणन है। बाळपण सू जवानी म पग धरता उण खेला री याद किया हियो भरत्याव अर किया उण म जोबन रो रगभीनो बायरो घुळ जावै यो नजारा सुकुमारजी र गीता म घणो फबतो है। मच पर गावणवाळा राजस्थानी कविया म भी आप किणी सू हेठा नी पडै।



समंदर : जीवण

भरचो समदर
गोपीचदर
बोल म्हारी मछली कितरो पाणी

धीवड चढगी चू तरै जी बाबा जी री पोळ
मीठी लागै चादणी री तारा माडी खोळ
बीराजी बुलावै भैणा किरत्या डूबी जाय
सात सहेल्या लागी ख्याला घूमर सूवी खाय
साथण माथै जितरो पाणी
कामण कावै जितरो पाणी
मरवण कडिया जितरो पाणी

गोरा नै पुजवावण लागी काकाजी रै चौक
राई सी भौजाई मागै सावो माडै ढोक
हिवडो उमडै आखडल्या मे मायड धारै धीर
बापूजी रै काळजिए मे लागै तीखा तीर
माछळ आगै कितरो पाणी
माछळ सागै कितरो पाणी
खारो लागै कितरो पाणी

तीजा नै सिजारो पूग्यो सासरिया रै गाव
सावण भूलो पूछण लाग्यो पावणिया रो नाव
सिणगारचो जोवनियो रवायो आरगा माडी रात
अवेरो टळग्यो उजळ्यायो सोना रो परभात
केळी जाधा जितरो पाणी
कचन पीडचा जितरो पाणी
थानै भावै जितरो पाणी

भरचो समदर
गोपीचदर
बोल म्हारी मछली कितरो पाणी



संदेसो

टणमण वाजै टोकरा जी गणमण गाडी जाय
कामणगारी, सौ सिणगारी, बैठी झोला खाय

बैल्या भाग, झालर झूमै, नौगर वाज्या जाय
पाछै उडती माटी हाळी, सदेसो पठवाय
कीज्यो बादळ सा वादीला घरा सावता ग्राय
सासरियै री नीम-निवोळी पीपळ न पुजवाय

वायर वाजै, नैणा लाज रत ग्रागण गरणाय
कामणगारी, सौ सिणगारी, बैठी झोला खाय

नैणा मे सावणियो वसग्यो पलका वसग्यो नीर
हिवडै वसगी ग्रगन हठीला ग्रधरा वसगी पीर
व्योपारी सू रूप उधारो ले बैठी तकदीर
व्याज वढै, मुळकै पाडोसी, छाती लागै तीर

मैंदी राचै, काजळ ग्राजै, मासा गम नी खाय
कामणगारी, सौ सिणगारी, बैठी झोला खाय

तपता बीतै तावडो जी गळता बीतै रात
सरवरियो सूरयो जी सूरयो, मुरझावै जळजात
हिचक्या सू भर ग्रावै छाती सै दिन सारी रात
मोत्या री जागीर लुटावै नैणा री बरसात

कामण कापै, हिवडो हाफै, हिचकोळा लुळ जाय
कामणगारी, सौ सिणगारी, बैठी झोला खाय



आस

किण रा पथ लिखू नैणा मे
किण री आस भरू सासा मे
आचळ छोड विछडग्या साथी
किण री माग भरू माथा मे

घरती रोदी विरखा वरसी
अगारा गिगनार सुळगग्यो
ठडी टीप चादणी ही पण
सेजा रो सिणगार भुळसग्यो

टूट्या तारा गीत कोइ नी
जीवण रो इब मीत कोइ नी
किण र खातर चोको माडू
किण नै रूप सजू कासा मे

सै गोदी रा फूल विखरग्या
इब कोयलडी कठै कूकसी
सै जीवण री साध विखरगी
परछाई री याद हूक सी

किण रो रूप भरू आचळ मे
किण री वाता मन वहलाऊ
किण रा गीत भरू रग-रग मे
किण री राग भरू वासा मे

पण जीवण चलतो ही जावै
ढळ-ढळ दिन ढळतो ही जावै
के जाणू किण गोधूळी मे
लगनवध्या प्रीतम मुड आवै

जद ही तो अै सास विचारा
निकळ-निकळ पाछा मुड आवै
जद ही तो मैं काजळ सारू
लाज भरू भाडा फासा मे



गोरधनसिंह शेखावत

जनम-स्थान गुढो (झूंझणू)
जनम तिथि सन् १६४३ ई०
सिक्षा एम० ए० पी० एच० डी०

गोरधनसिंह जी राजस्थानी मे नई कविता लिखणिया मे आगली मगत रा है पण ठेठ राजस्थानी रगत रा गीत भी आप चोखा लिखै । नई कविता री ढाळ पर आपरी रचनावा री एक पोथी 'किरकट' नाव सू छपी है ।

आप न ठेठ देसी लहजै म बात कैवण रो तजरबो है अर इण सू ही आप जो कुछ कवितावा म कैया है वो सीधो काळजै ढूकै । या दूसरी बात है क नई कविता री नकल करण री चेस्टा म लोग आपरी जमी सू उखड जाव अर ओपरी बात करण लाग जावै तो वारी बात कमती समझ म आण लाग जाव । गोरधनसिंह जी जठै जठै इण सू बच्या है वठै-वठै वारा कवि रूप घणा निखरया अर उजागर हुयो है ।

आज काल आप लक्षमणगढ (सीकर) र तोदी कालेज म प्राध्यापक है ।



गांव

श्रो गांव म्हारो है
घर-घर मे उग्याई भीत
अरणखावरण लाग्या
खेत, गुवाड अर पसरयोडा मैदान
ताक मे मेल्योडो
जूनो काच धडल सू धरती पर पडग्यो
करजा सू लिप्योडा श्रागरणा
सूना खेता मे फाडयोडी वही
अर न्याव रै नाव पर कुश्रा मे पडतो
चोथू चन्दू हलवाई
मिंदर मे जूश्रो ! भगी नै मत छूश्रो
राजनीति सू सू त्योडो
बूढो गाव
श्रो गाव म्हारो है
चोरी करै पचायत रो चपरासी
जेवा भरै सरपच
सिरकारी पीसा सू
अर लोगा रै सामी भूठी वात वरणावै
मिंदर रै पिछवाडै रोज पुजारी
भगरण सू श्राख लडावै
मास्टर करै वात रोज वोरारी
दावरा सू
श्रो गाव म्हारो है
फूट सू फूट्योडो ! नेता सू बिदक्योडो
अर ठाली भूली वाता सू भरयोडो।



प्रीत

फागण री रात री
उणींदी चानणी सी
कुंवारा होंठा री
अणबुझी
अछेहीं तिरस सा
गीत रै माय
हबोळा खावती
गळगळी पीड सी
रूपाळी देह माथै
जोवन री चढती पाण सी
डूंगर रै माथै
छानै-छान
पसरीजतै गुलाबी उजास सी
बरफ सूं ठरयोडी रात मे
निवायै परस सी
मन रै गळियारै मे
कबूल कर्योडा
सबदा री छेनी मीव माथ
सूं प्योडै छिण सी



चंद्रसिंघ

जनम स्थान　　बिरकाळी (नोहर-बीकानेर)
जनम तिथि　　सावण सुदि पून्यू सवत १९६९ वि०
पिताजी रो नाव　श्री ठा० हरिसिंघजी सूंगोत

'बादळी' रै कवि रै रूप मे कवर चद्रसिंघ नै हर राजस्थानी प्रेमी जाणै। आज री राजस्थानी मे ग्रथ रचना री सुरूआत करणै रो स्रेय कवर चंद्रसिंघ नै दियो जावै। राजस्थान री प्रकृति आपरी रचनावा रो मुख्य विषय है। 'बादळी' मे चौमासै री रुत रो घणो भावपूरण वरणन है। अठा ही 'लू' मे गरमी री रुत रो अर 'बसन्त' तथा डाफर' मे बसन्त अर सरदी री रितुआ रा चित्र है। आपरी अनेक रचनावा हाल अधूरी पडी है जिणा मे साझ, रागळी, वातडल्या बाड, अर रघुवस रा नाव गिणाण जोग है। 'बादळी' काव्य पर नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी सू 'रत्नाकार पुरस्कार' अर बळदेवदास पदक भी दिया गया। वादळी' री लोकप्रियता रो दूजा प्रमाण यो भी है के उण रा आज ताई पाच सस्करण निकळ चुक्या है। राजस्थानी साहित री दूजी कोई इसी पोथी देखण म नही आई जिकी इतणी लाक प्रिय हुई होवै।

चद्रसिंघ 'दूहै छद रा कारीगर माया जावै। आपरा अनेक दूहा न प्राचीन साहित रै भरोसै सपादका आपरा दूहा सग्रहा म भी छाप दिया। आज री राजस्थानी रो प्रौढ अर ऊजळो रूप देखणो हुव तो चद्रसिंघ रा काव्य अर बाता पढै। ठेठ राजस्थानी रग मे रच्योडा कवर चद्रसिंघ राजस्थानी रै नयै जागरण रा करणधारा मे न् अेक है। 'काळनै री कोर' अर 'दिलीप' नावा री पोथ्या मे आप गाथा सप्तशती' अर 'रघुवश' रा अनुवादा रा अश छाप्या है। 'जफरनामा'रो अनुवाद भी आपरो करचोडो छप्यो है। बावसाद' मे गीत दूहा, वात वगैरा नाना भात री रचनावा है। □

गीत

सखी री सपनै मे सैंण जगाई
चमकी, झिझकी, थर-थर कांपी
सैंण देख सरमाई
पळ मे बाह पडी गळ माही
बिरछ-बेल लिपटाई
नैंणा सण सैंण मे नैंणा
जोत मे जोत मिलाई
चतर सैंण चाल्या जद चेती
मैं भोळी भरमाई
सखी री सपनै मे सैंण जगाई



वसंत

सूरज मुलटो आवियो, आयो डाफर अन
धरा तरण मन धार अब बैठयो पाट वसन्त

म्हारै आख्या देखता, लुटसी म्हारा लाल
जै म्है माळी जाणता, सूक छुलाती खाल

चौनिजरा मेळो हुवै, जिण रो मन मे चोज
पैल किरण देख्या पछै, माळो थारी मोज

जगळ फूल उपनिया, खेलै रळ-मिळ फाग
म्हे बागा रा बाजिया, माळी म्हारा भाग

माळी मन हरखै मती, म्हारी ठौड छुडाय
वस डाळी सू टूटता, म्है जास्या कुमळाय

आज वसंत टडीक मे, आवै चोज अटूट
माळी मती उतावळो, भाज लुटास्या लूट

आता सुण्यो वसन्त नै, चाल्यो मन मे चोळ
चमकै, झिझकै, थरथरै, सपना थारी रोळ

'वसंत' नाव रै अणछप्यै प्रकृति-काव्य सू

लू

काची कूपळ फूल-फळ फूटी सा वणराय
वाडी भरी वसत री लूटी लूवा आय
झटझट आस्या देखता झड-झड पडिया फूल
झुर-झुर वेला सूकिया भुर-भुर गई समूळ
देख तपती ताव-सू मुरधर ग्रस रै भाण
हियो हिमाचळ उभळचो बह चाल्यो बरफाण
बाळपणैं वैसाख मे तातो इसडो ताव
पूरै जोवन जेठ मे नुवा ! किसो उपाव
पान खडक्क्या जावता कोमा छाळोछाळ
वै सागी मुधवायरा ऊभा जोडा पाळ
नारपणैं रै ईसवै भल अग भू जो आय
मती लजाया मा-पणो लेया लाल वचाय
मा मरती रै हाचळा लाग रह्या बाखोट
लूवा ! मती उघाडज्यो आता-जाता ओट
लूवा ! थे लारो लियो छाणी सा घर आय
सीतळता सोधी सरण साठीफा मे जाय
खारो पाणी कूवटा दिस-दिस बजड भोम
उजडचा सा बसिया जठै मिनखा-नै मत होम
जीव तिसाया जावता जोडा हुया अधीर
डाळ-डाळ हिवडो हुयो चाली चीरा-चीर
भर चौघड चालै घरै जठै तिसाया जीव
लाता-लाता नीवडै बरतै जळ ज्यू घीव
बाळपणैं रमता थका आवै आखा-तीज
वाकी था-रै राज मे त्यूहारा री खीज
अळगा-अळगा गावडा करडा-करडा 'कोस
लूवा रळक्या राहडा पथी ! किण नै दोस



'लू' नाव सू छप्योडै काव्य सू

बादली

जीवण नै सह तरसिया वजड झखड़ वाढ।
बरसे, भोळो बादळो! आयो आज असाढ

नहीं नदी-नाळा अठै नहिं सरवर सरसाय
एक आसरो बादळी! मरु सूकी मत जाय

खो मत जीवण बादळी! डूंगर-खोहा जाय
मिलण पुकारै मुरधरा रम, रम, धोरा आय

आयी घणी उडीकता मुरधर कोड करै
पान-फूल सैं सूकिया काई भेट धरै ?

आई आज उडीकता झडिया पान'र फूल
सूकी डाळया तिणकला मुरधर! वार समूळ

सोनै सूरज ऊगियो दीठी बादळिया
मुरधर लेवै वारणा भर-भर आखडिया

छिन मे तावड तडतडै छिन मे ठडी छाह
बादळिया भागी फिरै घात पवन गळ बाह

घूम घटा चट ऊमटी छायी मुरधर आय
मऊ गया नै मोडिया मधरी गाज सुणाय

जळहर ऊंचा आविया बोल रहया जळकाग
देण वधाई मेह री रहया कहइया भाग

पडड़-पडड बूदा पडै गडड-गडड घन गाज
कडड-कडड वीजळ करै धडड-धडड धर आज

चालै पवन अटावरी घिर-घिर बादळ आय
फुर फटकारा फाफ-रा जळ-ही-जळ कर जाय

परनाळा पाणी पडै नाळा चळवळिया
पोखर - आस - पुरावणा खाळा खळखळिया

सूई धारा ओसर्यो दूधा वरण अकास
रात-दिवस लागै झड़ी सुरगै सावण मास

तिरिया मिरिया तालडा टावर तडपडताह
भागै निसळै खिलखिलै छप-छप पाणी माह

लागी गावण तीज-नै रळ-मिळ धीवडिया
गोगा माडै मोद भर टावर टीवडिया

आभै तणियो धनख लख टावर आपोआप
ओ मामै-रो डागडो लागा कर धिणयाप



तेजसिंह जोधा

जनम स्थान रणसीसर (नागौर)
जनम तिथि ७ जुलाइ सन् १९५० ई०
सिक्षा एम० ए० (हिन्दी)

राजस्थानी मे नइ कविता री सरुग्रात करणिया थोडाक कवियां मे तेजसिंह रो नाव सिर है। ग्रापरी पोथी 'ग्रोळू री ग्रोळयां' घणी चर्चा रो विसय बणी। हमाणी (परम्परा रो ग्रक) 'राजस्थानी एक' ग्रर 'दीठ' नाव सू काव्य सकळना रो सपादन ग्राप करयो जिणा मे सपादकी रो ग्यान चौड़ै दीखै।

नइ कविता नै ठेठ देसी रग मे ढाळण री सामरथ रा घणी तेजसिंह री रचनावा है ता थोडी ही पण जो भी है वामे वारी ग्रापरी निजू दीठ है, घिसी पिटी बाता कोनी। लाबी रचनावा री बजाय छोटी-छोटी रचनावा बेसी ग्रसरदार बणपडी है क्यूं क वामे कोइ सिलसिलो निभावण री जरूरत कोनी ग्रर कवि जो कुछ कहणो चाव उण पर निजर टिकाइ राखी है।

ग्राजकाल ग्राप सादुलपुर (चूरू) री मोहता कालेज मे हिन्दी पढावै।



पोणो सांप

चेतो
चेतो कै थारी छाती माथै
कुडाळो घाल'र नासा सा'रै
फण साध्या बैठ्यो है पोणो साप
पीत्रै भासा, भरोसो अर सास
पोछडी, जद ओ
पूछ रो फटकारो देय'र जावैलो
तद थानै देस अर
आजादी गे अरथ समझ मे आवैलो
अफसोस पै मोडो हुय जावैलो
मोडो हुय जावैलो



कठैई की ह्वगो है

(एक लाबी कविता रो सरू बीत रो भाग)

ई गाव मे कठैई की ह्वैगो है
ह्वैगो है
लागै ईया
कै जाणै चौमासै री आडू दोपारी
गट्टै रै पीपळ सू नी
तळै पड्या वूठिया रै
डील मे सू निसरी
बड'र ऊडी-ऊडी
घासीराम निसरग्यो ...
ठाकरा नै सोच है
कोटडी रै मूडागै सू
जावतोडो बगत
उघाडै माथै निसर्‌यो
साफो विसरग्यो
बीया जागवा न गाव रा गडक्डा भी जागै
कै दिनाथ्या दार पीय'र
पेन्सल आयोडो सुवैदार
क्यू बोलै वारी बोली
अर क्यू अर किया
चोधरी जीभ माथ गुड फेर'र
मिनखा नै फेरै—
ठा' है मास्टर न
पण, पण वो क्यू राखै ठा
वी न ठा' राखवा नै दूजी वाता ई घणी
जीया-छोरा री वैना रा नाव काई
कुवारी कै परणी
परणी तो स परो कठै
धणी रै धधा काई
ई गाव मे कठैई की ह्वैगो हे
साच्याई की ह्वैगो है

△

त्रिलोक गोयल

जनम स्थान अजमेर
जनम तिथि २८ जनवरी सन १६३२ ई०

राजस्थान री धरती अर मिनख रा भांत भांत रा रूपां नै फूटरा गीतां में गूंथ'र गावण वाळा कवि गोयलजी आज री राजस्थानी रा ऊगता कवियां में सूं है। रितुआं, त्यूंहार परिवार, लोककथावां खेत अर माटी रा अनेक गीत आप लिख्या है। आपरी रचनावां में सब्दयोजना, छंद विधान अर गीतात्मकता रो फूटरो मेळ मिलै। लोकसंस्कृति अर साहित रा परभाव आपरी रचनावां में साफ झलकै। लोकजीवण रा घणा चित्र आप छंदां में जड'र सामन राख्या है। आपरा गीत मातभोम रै निरमळ वहे सूं लगालग भरयोड़ा है।



बसंत रो गीत

आगण ऊभो आज वसत
धरती रो परदेसी कत
फूल्या फूल बिछाया पथ
के जाणे माटी मुळकै रे
माटी मुळकै रे माटी रा माटी कुदरत पुळकै रे
माटी मुळकै रे

कवळी-कवळी तीतर्‌या ग्रै रग-विरगी डोलै
नाजुक्‍ी कळिया रा घू घट भवर रुठीला खोल
कोयल गाय वसती गीत
आयो आज मदन रो मीत
पाळी घणी पुराणी प्रीत
कै रस की गागर छळकै रे
गागर छळकै रे आ गाठगठीली होगी घुळक रे
माटी मुळकै रे

आगै आगै पतझड आयो सागी गैल बुहारी
लारै लारै फागण ल्यायो चम्पाई पिचकारी
कीन्ही मनमानो रुतराज
रूठी राधा मनगी आज
वैरण लाजा मरगी लाज
के ड्योढी व्हैगी लुळकै रे
ड्योढी व्हैगी रे वायरियो भीणो पखी भळकै रे
माटी मुळकै रे
देख सहेल्या री वाडी मे लुक-छिप तीयू खेलै
चोर वणा दीन्हो म मथ न देवर भाभी भेळ

हिवडै लेय हिलोळा प्यार
जाणै समदरिया मे ज्वार
लीन्ही अगडाई कचनार
के पाख पसरगी खुलकै रे
पाख पसरगी मिरगानैणी मत ना जावै टळकै रे
माटी मुळकै रे

पाच दिया री ज्योत मे प्रीतम री पाती बाचै
चवरी चढनी ढळतै स्याळू पीयरिया मे पाचै
आमा ऊपर फूटया बोर
बोरा नीचै नाचै मोर
लुळ लुळ होड कर गणगोर
कै राती चूनड चिलकै रे
चूनड चिलकै रे हाथा मे राची हळदी भळकै रे
माटी मुळकै रे
बाध मोठडो नीबू पीळो ओ आयो सैनाणी
पाक्यो धान पधारो थारी घर-घर मे मिजमानी
कासा मे केसरिया भात
मीठी बाता करती रात
ल्यायो सोना रो परभात
कै टप-टप मोती ढुळकै रे
मोती ढुळकै रे चदा री चादणी बहगी गळकै रे
माटी मुळकै रे
ओ हो माटी मुळकै रे माटी रा माटी कुदरत पुळकै रे
माटी मुळकै रे



धरती रो पग भारी

सोना रो सूरज मुळके ओ धरती रो पग भारी
लुळ-लुळ वरसा करै आरतो भर मोत्या री भारी
गीत चिडकल्या गावै रे
वन मे नाच मोर मळायण ढोल बजावै रे
वरसा करै निनाण फसल नै सीच पमीनो पाळी
चाल्यो पूछ मरोड बळद रो येरो पावा हाळी
डव-डव चडस डुबावै रे
स्याल टेर रामू चनणा रो लाव उठाव रे—गीत०
मक्की बाजर और जवा री लडा भूमती लूमै
लूठा-लूठा मिट्टा सौंधी माटी रा पग चूमै
पासी उड-उड ग्राव रे
दे हलकारा रूंखा पर पोपा खुडकावै रे गीत०
गुड की खेरो तेल तिली को चूर खीचडो खावै
कर आचळ री ओट सुहागण दूध-पूत न प्यावै
गाय रभाती जावै रे
मायड पूत बिछोवा जग मे कुण नै भावै रे—गीत०
छोरा-छोरी फूदी लेवै दे ताळी पर ताळी
सात समुदर गोपीचदर रमता कर रखाळी
टावर रोळ मचावै रे
घडै घरूदा पग पर बाळूडी थपकावै रे-गीत०
दुण मुण करती गाडया जाय दूधा धोई राता
चाद बापडो लाजा मरग्यो, सुण-सुण मीठी बाता
कुण री ओळयू आवै रे
कुण रा आवै सपना कुण रा सुगन मनावै रे—गीत०
वाधी बानरवाळ बायरो रिमझोळा झमकावै
मूआ करै किलोळ कमेडया आगण चौक पुरावै
म्हारो मन हरखावै रे
रामदेव तेजाजी सबकै आडा आव रे
रे
वन मे नाचै मोर रे
आगण नाचै मोर

बिणजारा रो गीत

वढता जाश्रो विरणजारा
भरता जाश्रो हूकारा

मजिल तक श्रो गीत भोर तक चलसी कथा कहाणी रे
श्रा नानी री वात श्राज तक कोनी हुई पुराणी रे

एक पुराणी पीपळी पर चिडा-चिडी रो वास जी
तिणको-तिणको नीड बणायो माळै सूखी घास जी

दिन-दिन दूणो प्यार जी
चीन्रा जाया चार जी

चाऊ-म्याऊ कुनबो करतो श्रागण रमै जवानी रे
श्रा नानी री वात श्राज तक कोनी हुई पुराणी रे

चिडकी ल्यावै चावळिया चिडकोली ल्यावै दाळ जी
खद-बद सीझै खीचडी श्रा कुटुम-कबीला पाळ जी

कटती जावै रात रे
वढती जावै वात रे

फूकै फडफू चूल्हो चिडकी, चिडको ल्यावै पाणी रे
श्रा नानी री वात श्राज तक कोनी हुई पुराणी रे

घाल चाच मे चाच चुगायो चुगो जिणा नै पाळ्या रे
नुगरा निकळ्या च्यारू चीचा जद सू होस सभाळ्या रे

श्रब तो उगग्या पाख रे
ऊची चढगी श्राख रे

चीचा उडग्या चिडा-चिडी री दुनिया हुई बिराणी रे
श्रा नानी री वात श्राज तक कोनी हुई पुराणी रे

त्रिलोक शर्मा

जनम स्थान — डूंगरगढ (बीकानेर)

जनम तिथि — संवत १९९० वि०

पिताजी रो नाव — श्री थानीराम जी

साम्यवाद री राजनीतिक विचारधारा नयै जुग रा ऊगता लेखकां में अनेक नै प्रभावित करया। पूरब रै ऊगतै सूरज री लाली रै मिस अै लोग लाल क्रांति रा गीत गाया। पण साहित में इणां रै उण गीतां री सत्कार घणो हुया जिका में राजस्थान रै सामंती राज रा सतायोड़ा करसां रै दुख दरद रै साथै उणां न जगावण रा भाव भरयोड़ा हा। देस री सुतन्त्रता रै बाद उण गीतां री कोई मोल नहीं रहण सूं वै ज्यूं आया बियां ही गया भी।

त्रिलोक शर्मा री नाव भी उण गीत लेखकां में गिण्यो जावै। पण मूळ रूप में गावां र जीवण म रम्योड़ा रहण सूं त्रिलोकजी री रचनावां म करसां अर मजदूरां रै दुख दरद अर समस्यावां री चोखी झांकी मिले। या और भी खुसी री बात है कै आपरी कविता में भरयोड़ा उद्बोधन रा सुर हिम्मत अर जोस बधाणवाळा है जिकै सूं आपरा साहित प्राणवान बण सक्यो है।



झुर-झुर मरग्या चिडा-चिडकली घाटा रा व्यापार जी
कुण राजा कुण राणी उजड्या सोना रा ससार जी

वधी बुहारी लाग री
विखर्या पाछै राग री

चीडीमार चीचा नैं फास्या चानै बद मनमानी रे
आ नानी री वात आज तक कोनी हुई पुराणी रे

धोळा केस पोपलो मूडो डगमग हालै नाड जी
कम्मर हुई कमाणी नाती पोता रा लै लाड जी

सुणो टचरा-टैंवरी
दुनिया देखी डाकरी

चिडा चिडी री आड मिनख री साची वात वखाणी रे
आ नानी री वात आज तक कोनी हुई पुराणी रे

बळता जाश्रो विणजारा
भरता जाश्रो हूकारा

मजिल तक ओ गीत भोर तक चलसी कथा कहाणी रे
कोनी वात पुराणी रे आ नानी री कहाणी रे



त्रिलोक शर्मा

जनम स्थान	डूगरगढ (बीकानेर)
जनम तिथि	सवत १६६० वि०
पिताजी रो नाव	श्री थानीराम जी

साम्यवाद री राजनीतिक विचारधारा नयै जुग रा ऊगता लखका मे अनक नै प्रभावित करचा। पूरब रै ऊगतै सूरज री लाली रै मिस औ लाग लाल क्राति रा गीत गाया। पण साहित मे इणा रै उण गीता रो सत्कार घणो हुयो जिका मे राजस्थान रै सामती राज रा सताबाडा करसा रै दुख दरद रै साथै उणा म जगावण रा भाव भरचोडा हा। देस री सुतनता रै बाद उण गीता रो कोई माल नही रहण सू वै ज्यू आया बिया ही गया भी।

त्रिलाक शर्मा रो नाव भी उण गीत लेखका मे गिण्यो जावै। पण मूळ रूप मे गावा र जीवण म रम्योडा रहण सू त्रिलोकजी री रचनावा मे करसा अर मजदूरा र दुख दरद अर समस्यावा री चोखी भाकी मिल। या और भी खुसी री बात है के आपरी कविता मे भरचोडा उद्बोधन रा सुर हिम्मत अर जोस बधाणवाळा है जिकै सू आपरो साहित प्राणवान बण सक्यो है।



हिलमिल चालो

हिलमिल चालो रे भाई
चालै चाल कुचाल जमानो
पग-पग ऊपर खाई
हिलमिल चालो रे भाई

झूठा सपना मे मत भटको
सीधी गैल पकडल्यो
प्रेम प्रीत री बात मिलै तो
मन री गाठ जकडल्यो

आपा रो दुख दरद सरीखो
एक पथ रा राही
रळमिळ चाल्या सगळा रै बस
दूर हुवै कठिनाई
हिलमिल चालो रे भाई

रात अधेंरी आधी चालै
मारग मे ना सूझै
कायर पाछो पग दे भागै
हिम्मत हाळो जूझै

अणजाणे मारग मे चालै
अलबेली तरणाई
दुख-दरदा री रात कटैली
जागैली अरणाई
हिलमिल चालो रे भाई

ऊचै धोरै बजै बासरी
धरती अगडासी रे
कमतरिया किरसाण जमी मे
अन-धन निपजासी रे

आज अधेरै री छाती पर
सोनकिरण मुसकाई
कोढ-पाप मिटसी धरती रो
सुख री सास समाई
हिलमिल चालो रे भाई

△

बांध पगां में घूघरा

बाध पगा मे घूघरा
गाव आज धमाळ रे
मिणतमजूरी रा बेटा
करसी आज कमाल रे

फागण मास रंगीलो आयो
नाचै लोग लुगाई रे
लाल किरण सिणगारै धरती
पून चलै सरमाई रे
च्यारू कूटा बजै बासरी
घर-घर उडै गुलाल रे
बाध पगा मे घूघरा

कमतरिये घर दावर जाम्यो
बाटै भेली गुड री रे
फळसै आगै ढोल बजावै
ठाकर लायो कुडकी रे
गढ-कोटा रो मालक ठाकर
क्यू करसो कगाल रे
बाध पगा मे घूघरा

खून पसीनो सींच जमी मे
करसो अन-धन निपजावै
करमा आडी पाळ बाध दी

कामचोर घर लें जावैं
नु ओ जमानो दे ललकारो
करसा होस सभाळ रे
वाध पगा मे घूघरा

ऊंची मेडी गोगंजी री
भेळा सै किरसाण जी
जुलमखोर स्यू आज लडैला
मन मे है अभिमान जी
मुखिया बैठ्या मूछ पलारै
धजा फरूकैं लाल रे
वाध पगा मे घूघरा

घर-घर जोस जवानी जागी
दुख-दाळद सो भागे रे
मा धरती री लाज राखलो
सै मिल चालो सागै रें
खेता मे सोनो ऊगैलो
कदे न पडसी काळ रे
वाध पगा मे घूघरा

△

नाथूसिंघ महियारिया

निवास उदयपुर
उमर सत्तर सू ऊपर

नाथूसिघजी डिगळ री परपरा रा उण गिणती जोग कवियां म सू है जिणा री लेखणिया म मनोबळ है । आपरी कविता रा भाव पुराणा होता हुया भी उणा मे कुछ इसी विसेसता ही जिकी सू कविता फूटरी लागै । 'वीर सतसई' नाम सू आपरी एक पोथी छपी ही जिण री तारीफ डिगळ काव्य मे मरघा राखणवाळा सगळा ही लोग करी ही । नाथूसिघजी रा काव्य अर व्योहार दोनू बाता चारण परपरा रा प्रतीक हा । दसमगनी री बसत ओपती रचनावा ई आप करी । हिमाळ री सीव पर चीणी सतरै री चेतावणी रा दूहा भी आप लिख्या हा ।

जो करसी जिए री हुसी आसी बिन नू तींह
आ नह किए रा बाप री भगती रजपूतीह

रए कर-कर रज-रज रगँ रवि ढवँ रज हूत
रज जेती धर ना दियै रज-रज हवँ रजपूत

भड बाका वाकी खगा बाका हाथ कवाए
तिहु बाका आगळ रहै जग सूधो सब जाए

देख सखी मोटा गढा गोळा री झडियाह
कोय न बावँ कावरी भड री झू पडियाह

सुत मरियो हित देस रै हररयो बन्धु-समाज
मा नह हरखी जनम दे जितरी हरखी आज

सुत आयो घावा सहित अजस थायो माय
पय पायो धोळै वरए रातो वरए दिखाय

धव आया घावा वहै पावा रकत अतोल
सग बळिया ही चूकसी पग मडए रो मोल

सग बळ जावँ नारिया नर मर जावँ कट्ट
घर बाळक सूना रमै उए घर मे रजवट्ट

बावल ! दीज्यो डीकरी मिळिया अेहो मेळ
खग मू घा जिए देस मे नित मू घा नारेळ

सौ गुए बारू देखजे बेटी रा गुए दोय
परएता पाछी रही बळवा आगै होय

चद उजाळ हेक पख बीजै पख अधियार
वळि दुहु पक्ख उजाळिया चदमुखी बळिहार

पिव केसरिया पट किया मैं केसरिया चीर
नाहक लायो चूनडी बळती वेळा, वीर !

पडियो जोडै बाप रै पाग कसूमल सेत
बेटो घर आयो नही धोळी बावए हेत

खग तो अरिया खोस नी पिव घर आया भाज
जिए खूटी खग टागता उए पर टागो लाज

चीण

नर चीणी आवै किसा
सुण नेहरू राजन्न
भारत मे रखणो नही
चीणी रो वरतन्न
थ भारत रा थभ हो
नेहरू राजेन्द्र दोय
चोळाया लागो मती
चीणी मोठी होय
दूजा तीजा पाण दे
आ भोठी क्द होय
सीमा काटै हिंद री
चीणी तीखी जोय
अतरा दिन खाली पडी
सीव रही अब खोस
दूजा तीजा भर दियो
चीणी माहै जोस
आ घालै हिंद ऊपरै
इण पर घालो घात
किण किण बीखर जावसी
चीणी काची धात
ओ विख सू वणियो थको
विख सू भरियो मन्न
मूडै नही लगावणो
चीणी रो वरतन्न
△

नानूराम सस्कर्ता

जनम स्थान काळू (बीकानेर)

जनम सवत १९७४ वि०

नानूरामजी पद्य अर गद्य दोना रा लेखक है। पद्य री कळायण', 'दस देव', समय बायरो, अर 'बटोही' नाव री पोथिया तथा गद्य म ग्हायी' नाव री पोथी छप्योडी है। गाव म जनम्या अर गाव म ही सरकारी पाठसाळा मे टावर भणावण रो काम कर हा। गाव र जीवण रा आपरो अनुभव घणो ऊडा है जिण री झलक आपरी रचनावा म ठौड ठौड पर मिल। राजस्थानी जण जीवण म रम्योडा ठेठ राजस्थानी स-न्ना री जिकी छटा नानूराम जी री रचनावा मे मिल वा कम देखण मे आवै। कळायण' नाव रै आपर काव्य म चौमासै रा अनेक चितराम घणा सोवणा बण पडया है। आपरी भासा री अणगढता आपर ग्रामीण विसया सू मेळ खाती अर फबती दीख। लोक मे रमता ठेठ सब्दा न बिना किणी सस्कार र ज्यू रा त्यू राजस्थानी साहित म भेट करण रो जस नानूरामजी नै दियो जासी। राजस्थानी लोक साहित्य अर छप्पय सतमई' नाव रा दो मोटा ग्रथा रै अलावा कई फुटकर ग्रथ भी आप और छाप्या है।



गीत

[illegible]

दिवलै री जोत

जुग बीत गयो रपाता बदळी नू बोडा पाना उघड रया
आजादी री खेती पाकी लू भरिया ढूळभतूळ गया
सुख गगण धरा वादळ ल्याया बोजा तीजा रो चानणियो
सरवर स्वागत मे हगाहोळ पणधर परवत मत मानणियो
पीढ्या सू लुक्या पड्या रैता पण आज अगाडी आणो है
दिवळै री उजळी जोत अबै अधारो दूर भगाणो है
सै रीत रिवाजा गळ सडगो गैलो गुणनीत नवो लेस्या
विसवास धरम धोरा धसक्यो परतन्त्र रो पाड जमा देस्या
थै गई पुराणी चाल-ढाल रूडी सी रगत आई है
मैं सोनैला कडखा बीरया सीधी सुख राग सुवाई है
पाखडी धर मे सूतोडो मोडो हर मिनख जगाणा है
दिवळै री उजळी जोत अबै अधारो दूर भगाणो है
सासन रा सिट्टा पाक रया है मौज मतीरा री डळिया
दानव सै देव समान हुया ऊभा है हाळी भोग लिया
पूजी हाळा पायक बणग्या मूजी दातार हुया सारा
आ लोकराज री लीला है मन समता धर सुरसरि धारा
धरणी आकास हम हरख मिनखापण माण बधाणो है
दिवळै री उजळी जोत अब अधारो दूर भगाणा है
मिनखा रा मन फूला दाई मै प्रेम वासना सू पूरा
बोदोड़ै वैर विरोधा रा ढाचा धाळ्या बदळ्या धूरा
रातडली नीद अधारे मे जागतडी भाण जोत भरणी
इण काती वदी अमावस ने आसोज सरद पून्यू करणी
माटी रै दिवलै तेल दियो मिनखा मन मेळ भराणो है
दिवळै री उजळी जोत अबै अधारा दूर भगाणा है



बखत रो बादळ

वखत रो वादळ
धूरा - सूरा, सरा - कूकरा
निरमळ नीर नुहावैलो ही—वखत०
भगी और चमारा-चूडा
घर-घर हौज भरावैलो ही—वखत०
वामण - वाण्या - रजपूता रा
तिसिया कठ सुग्वावैलो ही—वखत०
अेक वरोवर वरसैलो ही
मोटी टोकी धोरा धसकै
पाळा-गाळा वाधैलो ही—वखत०
जूनी जुगत डुवावैलो ही
नू वा खेडा, सदन सुखा रा
नू वो जगत वसावैलो ही वखत०
सून्य स्रस्टि सू वारै आकर
सूर उगाळी चमकैलो ही—वखत०
सूखी धरती सीचैलो ही
तीसी-भूखी, धुखती-सुकती
धरती नै हरियावैला ही—वखत०
मजदूरा रो पूरो मरण रखावैलो ही
सदूका तीजोर्‌या माहे
छल-छल नीर भरावैलो ही—वखत•
भेद-भाव न गाळैलो ही
अेक वरोवर हुळसित मन सू
लाक लहर समावलो ही—वखत०
वरसाळै रुत आवैलो ही



नारायणसिंघ भाटी

जनम स्थान	मालूगा (जोधपुर)
उमर	बरस ४६ रैं नेडी
पिताजी रो नाव	श्री वार्नसिघजी भाटी

साफ', 'मेघदूत' (अनुवाद) अर 'दुर्गादास' रा लेखक अर 'परपरा' रा सपादक रैं रूप मे डाॅ नारायणसिंघ भाटी आसा राजस्थानी प्रेमिया रा हिया मे समायोडा है। आज रैं राजस्थानी काव्य न सीधा सादा भावा अर लोकगीता री चालू सब्दावली सू निकाळ'र कल्पना रैं आसमान म सजीला सब्दा री पाखा पर बिठा'र अलौकिक पून रा भिलोरा खुवावण वाळा पैलडा कवि नारायणसिंघ ही है। आपरी कविता मे डिंगळ रैं प्राणवान साहित र मार्मिक अध्ययन री गहरी छाप है। कठै कठै डिंगळ रा ठेठ सब्दा रैं प्रयोग सू कविता मे पुराणैपण री झलक जरूर आव पण आज र राजस्थानी कवि न साहित अर लोक री परपरा रैं ग्यान री घणी जरूरत है, या बात आपरी रचनावा सू प्रकट हो जावै। 'दुर्गादास' म आप जिक अतुकात काव्य री रचना करी है वो भावा म एकदम नयो अर भासा म घणो गरबीलो है। 'वळप', 'जीवणधन', 'ओळू' परमवीर' अर 'मीरा' नाव री काव्य पोथिया र अलावा डिंगळ साहित्य नाव रो सोध ग्रथ अर 'परपरा र जरियै छप्योडा अनेक सपादित ग्रथ भी आप प्रकासित करया है।



विरह

ओ रे प्रखर प्रीत रा झूलणा
या झूलिया जोबन मद ऊभळै
अभाव री असली पीड
परखण रा छिण अणमणा
उर पलड़ा ऊतरै

था सो बोभाळ न हरगिर आवखो
था सो खरो न वासग जैर
पल पल कळप कलपना री

सास उसासा—
आकळ प्राण आभासै
रे हेत रतन परखणिया हेम हेडाऊ

आज तो—
थारी बाळद रा रुण-झुण रव
रग रग रळतळै



पासाण सुंदरी

थू कुण ऊभी
हे सयाणी सूरत
पासाण मूरत
नगन देह
भगन गेह
अतीत री कळा द्रस्टि तळै
जोवै केई जुग सू
भाव भगिमा भरिया
थारा अग अग
झलती जोडी रा
प्राण पिया री वाट
हे प्रीतपनी परणेतण पूतळी
केई नैण निरख-निरख
निकळिया होसी
थारै गेह बार
पण हू वतळाऊ
अबोली बोल !
कण थनै मिलण वचन दे'र
वचन हारियो
जिणरो—
एक पग ऊभी
एकटक
थू पथ निहारै
हे ओ छू उळझी
सकोचण सु दरी
इण ऊचै पयोधरा
ऊडी धीरज धरण कळा
किण सू सीखी
हे कळाजायी कामणी
म्हे तो गीत सुण्यो
काव्य पढयो
आख देख्यो—
केई'क झुरती विरहणिया रा
बैरी विरह ताप

लाखीरणा तन खीरण किया
परण थू तो
जुग बीत्या ही
जोबन मदमाती
अर अजे लग गमकै
निरत रत कामरी कामरण धुनी
थारै अग अग री
मिजाज भरी भगेजरण मरोड मे
हे उफरणातै जोवन री
पासारण गोरडी
थळ जायी
विरह् ताप झुळसी
सकळ गजगमरण गोरिया रा
तरळ नैरण मोती
किरण किरतार कारीगर रै
प्रिया रूप साधना साचै
आय सागळिया
जिरण खातीलै
अमर खात कर
थनै सिरजी सवारी--
उरज पीरण
कठी खीरण
वसन हीरण
वचन बध अचचळ सु दरी
विरह् समद तळवळती
चिर प्रीत अगनरी—
अखड जोत
काळ हथेळी बिच
था आगळ अस्ट पौर जगै
तिरण सू पडियै काजळ रा वू पला
किरण चतर नार चोरिया
हे सयनहीरण
पथ लीरण
पासारण सु दरी Δ

नन्दकिशोर पारीक

जनम स्थान । जयपुर
जनम तिथि १ अगस्त सन १९२६ ई०
पिताजी रो नाव श्री मिस्रीलालजी

बिचारा सू ठेठ म्हाडसाही पारीकजी कानून रा ग्रेजुएट अर समरथ पत्रकार है। देस रा मानीता अंग्रेजी अर हिंदी रै पत्रा म आप प्राय लिखता रैव। राज रै सावजनिक सम्पर्क विभाग में आप इणी काम रा अफसर है। सुभाव सू सरम अर भावुक होण रै कारण काव्य रचना मे आपरी गति होई। भाषा र ठेठ मन्ना री अर राजस्थानी जीवण रै मूळ भावा री आपरी पकड चोखी है जिक सू प्रकृति अर सिण गार रा सोवणा गीत आप लिखै। आज तो कवि सू पला आप पत्रकार है पण काव्य रचना कानी आपरी रुचि जे पनप सकै ता आप राजस्थानी साहित न फूटरा अर रसीला गीत घणा द सक।



मूमल

जुगा री जोत रूप री रास
मिनख रै सपना रो सिणगार
झुरै है रग री महफिल वीच
माडेची मूमल थारै लार

जुगा रो घरती है रैवास
जिरण मे रूप रग नै राग
आपरै मझ जोबन उफारण
चढता ऊनरिया दिन लाग

पण कोई मूमल थारै रूप
मिनख रै हिय घालियो हाथ
मरग्या माणस करे वखाण
अमर है थारी रग भर रात

फूल्यो किरण वाडी मे फूल
हिये किरण सजियो कनळै हार,
भटकै भवरा आज अधीर
राग नै सौरम रै मझदार

राग री पारया लागो रूप
उडी जद जुग रा अवर चीर
करोडा कठा कियो रैवास
अलेखा हिवडा री थू पीड

जदे लग वन मे वासग नाग
वाडिया चपो, दाडम, दाख
गुळकती कवळी केळू-काव
जका री भरै सूवटा साख

जदे लग हिंगळू हाटा माय
मिनख रै कठ हियो अर नैण
तदे लग कर-कर मूमल कोड
साईणी-झुरसी थारा सैण



नन्दकिशोर पारीक

जनम स्थान । जयपुर
जनम तिथि १ अगस्त सन १९२६ ई०
पिताजी रो नाव श्री मिस्रीलालजी

बिचारा सू ठेठ झाडसाही पारीकजी कानून रा ग्रेजुएट अर समरथ पत्रकार है। देस रा मानीता अग्रेजी अर हिंदी रै पत्रा मे आप प्राय लिखता रैव। राज रै सार्वजनिक सम्पर्क विभाग में आप इणी काम रा अफसर है। सुभाव सू सरस अर भावुक होणै रै कारण काव्य रचना मे आपरी गति होई। भासा रै ठेठ सब्दा री अर राजस्थानी जीवण रै मूळ भावा री आपरी पकड चोखी है जिक सू प्रकृति अर सिणगार रा सोवणा गीत आप लिखै। आज तो कवि सू पला आप पत्रकार है, पण काव्य रचना कानी आपरी रुचि जे पनप सके तो आप राजस्थानी साहित न फूटरा अर रसीला गीत बणा दे सके।



रंगां री रुत आई रै

सीयाळो नी मीठ सुरगी रुत फूला री आई रै
सौरभ सैं बोझल वायरियो, राता तारा छाई रै
सीयाळे चौमासै वरसी
वरसी बरफ'र आग
कुम्हळाया म खेत
झुळसिया हरिया-हरिया वाग
ठडक नीचै अगन भभकती फागण आय बुझाई रै
सौरभ सैं बोझल वायरियो, राता तारा छाई रै
कचन झूमै खेत म्हळा मे
वागा मोती लूम
झूमझूम गाती गोरडिया
घूमर खाती घूमै
फूला सैं भवरा री जाता मुरा रळिया सरमाई रै
सौरभ मैं बोझिल वायरियो, राता तारा छाई रै
लाबी राता चौवारै सावरण री
वीती मौत री
रही गुलाबी ठड जगाणी
रात, प्रेम री, प्रीत री
चदा री सूरज रै साग होगी आज सगाई रै
सौरभ स बोझल वायरियो, राता तारा छाई र
पीव मिलरण री बेळा आई
नाचै गावै मन रो मोर
होळी मगळ्या हुया चार दिन
ईसर ले चाल्यो गरणगार
रूप जवानी, जन्म मरण री मारस जोड मिलाई रै
सौरभ सैं बोझिल वायरियो, राता तारा छाई रै
रगा री रुत आई रै



फागणियो आयो

जौ'र गवा मे वाली आई सोनो निपजै रेत
सरसू पीळी, चणा गुलाबी, सरसावै स खेत
जमी पर पचरंग फहरायो
नयी साख की अगवाणी मे फागणियो आयो
के म्हीनो मस्ती को आयो
पाणन फरती जाय पदमणी क्यारचा इमरत प्यावै
बाळ चलै ज्यू फागणियै को पल्लो उड उड जावै
लाज को ममदर लहरायो
नयी साख की अगवाणी मे फागणियो आयो
के म्हीनो मस्ती को आयो
बौराया आमा मे भौरा नाचै, कोयल गावै
मदछकिया नै निरख मगेजण रीझै, आप रिझावै
सैण नै सैना समझायो
नयी साख की अगवाणी मे फागणियो आयो
के म्हीनो मस्ती को आयो
बडा-बडेरा छोरा साथै टेरै राग धमाळ
बूढ सुहागण भी हरखाई दे रसिया पर ताल
बूढ भी झोळी भर ल्यायो
नयी साख की अगवाणी मे फागणियो आयो
के म्हीनो मस्ती को आयो
राधा कानो खेल होळी धम-धम वाजै चग
उजळी होय उमगा मन की पिचकारी क रग
गुलाली बादळ घहरायो
नयी साख की अगवाणी मे फागणियो आयो
के म्हीनो मस्ती को आयो
बाग-बगीचा फूला छाया, तारा छाई रात
जीवन छाया ढोला मरवण करै हेत की बात
प्रीत रा मेहलो बरसायो
नयी सोख की अगवाणी मे फागणियो आयो
के म्हीनो मस्ती को आयो

△

नंद भारद्वाज

जनम स्थान   माडपुरो (बाडमेर)
जनम तिथि   १ अगस्त १९४८ ई०
सिक्षा   एम० ए० (हिंदी)

नदजी भी राजस्थानी मे आज री नई कविता री सरूआत करणिया मे सू है। आपरी एक पोथी 'अंधार पख' नाव सू छपी है। 'हरावळ' छापै री सपान्की करता वरस आप आजरी राजस्थानी र घणा नेडा आया। आप वा थोडा लोगा म सू है ज्यानै राजस्थान रै ठेठ जीवण री पीड न आम आदमी री बोली मे परगट करण रा अभ्यास है। जीवण नै देखणे री नदजी री दीठ भौवाद है जिकी हरेक नई कविता मे मिलै। पण आपर कथण रा ढग सरवथा निजू अर निरवाळी है।

आज काल नदजा आकासवाणी जोधपुर म काम कर।



बधतो आंतरो

च्यारू मेर
ऊकळतो अणथाग ऊन्हाळो
सूळा-सो खुबती
            आकरी किरणां
चौफेर रा लीरा-लीरा करती
                        लू
अमू जै नै अधगावळो करता
            वतूळा रा गोट

सैर
गांव
अर ढाण्यां विच्चै
अेकल उडती
        धूड
—फेर काळ पडग्यो इण मुलक मे
खुलग्यो फेरू
फैमीना रो काम—
जमी नै आदमी अणखावणो लागै !
चौगिडदै पसरघा
अलेखू धोरा री धमघेर मे
गम्योडा गाव
म्हारै चेतै मे चक्कारा मारै
डवडवती आस्या मे
थळतै पाणी रा तिरवाळा,
गू गै ताडै मे तडभडती
आधै तावडै री तीठ
नागै चामडै-हाडा मे
चुभती आखरी सासां
घेर्‌या—
        पाणी रो परियागो सोधै

आ वळेंती—
आ लाय

—फेर काळ पडग्यो इण मुलक मे
गुनग्यो फेरू
फमीना रो काम—
तिरस अर पाणी रै बिच्चै आतरो वधग्यो
हरमस
तिडकी मे धोरा माथै
धूजण लाग रेत
दीठ मे पसरै
— रेगिस्तान
ऊजड मे
डाडै डागर-जीव
जिनावर मरता माटी खाय
मिनख रै हीयै फूटै

हेज
निस्कारा बिच्च
इत्ती लाबी जेज ?
औ सिडता घाव—
ओ मादो लखाव

—फेर काळ पडग्यो इण मुलक मे
खुलग्यो फेरू
फमीना रो काम –
जीवण अर मिरतू री धोरी अधगैलो व्हेग्यो ।
कदे-कदास
आधी रात रै सरणाटै
काळी जाळा रै जगळ मे
कोई घघूडो घूकै
चररावै कोचरी
अळगी

थिर विद्रोह

काचरै 'पेपरवेट' मे बन्द
किणी रग-पुरुप री भात
अेक पारदरसी कैद मे
वाट उडीकती जिंदगानी ।
जिए न आजादी पाछला
चोखा-भूंडा
सगळा बदळावा नै
फगत देखण रो इधकार
दूजा इधकारा माथै
दूजा रो इधकारी कसाव
टस सूं मस हुवण जिसी
उण नै राखी नी ।
तौइ उणरो राखणो आ आस
कै जमाने रै उथळपथळ मे स्याव्
उण नै मुगती मिल जावैली
अर सासा रै डोरै
वा आसा रा किनका उडावैली,
आ जाणता थकाईक उण री आ वात फगत
आपरै अेकलपणै नै टाळण री
अर भरम नै साथै राखण री है ।
भरमणाई हुवो
पण हुयो कोई साथ
अर आज रै जुग मे
असभव की नी ।
इण दसा मे ई
होणी रै विधान नै नकारणो
अतस रै विद्रोह नै सिकारणो है ।

Δ

पारस अरोडा

जनम-स्थान अजमेर
जनम तिथि रभावधण सन् १९३७ ई०
सिक्षा दसवी ताई

अरोडाजी रा एक कविता संग्रै 'झळ' नाव सूं छप्यौ है। नई कविता मांडणिया राजस्थानी कवियां में इसा बिरळा ई है जिका पारसजी की ज्यूं जिंदगी रै दरद नै, उणरा खारा ई खारा अनुभवां नै अर ढोंगी समाज रै छळ छन्म अर भूठ पडयन्त्र नै इतणा नेड सूं दरया-परस्या है। जिंदगी सूं यो नेडास पारसजी री कवितावां री मरम है। अंतरमुखी सुभाव रा धणी पारसजी कवितावां रा अनुवाद अर विदेसी साहित्य री कहाणियां रा उलथा भी करया है। प्रचार अर प्रकासण सूं बेग्ली रावण रै कारण आज राजस्थानी लेखकां में वा सोहरत नी लै सक्या जिण रा वै हकदार है।

आज काल आप यूनिवर्सिटी प्रेस जोधपुर में काम करै।



थिर विद्रोह

काचरै 'पेपरवेट' मे वन्द
किणी रग-पुरुप री भात
अेक पारदरसी कैद मे
वाट उडीकती जिंदगानी ।
जिण नै आजादी पाछला
चोवा-भू डा
सगळा वदळावा नैं
फगत देखण री इधकार
दूजा इधकारा माथै
दूजा री इधकारी कसाव
टस सू मस हुवण जिसी
उण नै राखी नी ।
तौइ उणरो राखणो आ आस
कै जमाने रै उथळवडै मे स्यात्
उण नैं मुगती मिल जावैली
अर सासा रै डोरै
वा आसा रा किनका उडावैली,
आ जाणता थकाईक उण री आ वात फगत
आपरै अेकलपणै नै टाळण री
अर भरम नै साथै राखण री है ।
भरमणाई हुवो
पण हुयो कोई साथ
अर आज रै जुग मे
असभव की नी ।
इण दसा मे ई
होणी रै विधान नै नकारणो
अतस रै विद्रोह नै सिकारणो है ।



क्यूं अर किणरै सारू ?

केई-केई वार
पिरथी री परकमा करणाळा
दोय पग
—वैंसारया रै सा'रै क्यू ?

अनेकानेक
वजर आघात झेलणाळो
अेक सीनो
—क्यू उण मे हिरद री प्रतिरोपण ?

अधारै मे ई
मीला सफीट देखणाळी
दोय आख्या
—क्यू धारी पाखाणी थिरता ?

आतता जुगा री
समस्यावा री समाधान लियोडी
अेक 'मैकेनाइज्ड' खोपडी
—क्यू हिसाव नी लगाय सकी
खुद री जिंदगानी रो

क्यू अेक रघुकुळ
ऊभो है झुक्योडो
जगा-जगा सू टूट्योडो तिडक्योडो ?
जमानो
नी जाणै किण री सुततरता सारू
निरतर कर रयो है सग्राम ?

भरत व्यास

जनम स्थान चूरू (बीकानेर)
जनम तिथि १७ दिसम्बर १६१७ ई०
पिताजी रो नाव श्री शिवदत्त रायजी व्यास

भरत व्यास मूळ रूप में मंच रा कवि है। स्कूल कालेज रै वखत सूं ले'र बंबई री फिल्मी दुनिया रा मोटा गीतकार बणण ताई व्यासजी मंच पर सदा वाहवाही पाई। राजस्थानी भासा अर राजस्थानी लोक धुना न फिल्मा ताई पुगाण रो सेवरो भी व्यासजी र माथ बधणो चाहिज। आपरी बणायोडी रंगीला राजस्थान' अर 'ढोला मारू' नाव री फिल्मा मे राजस्थानी भासा रा प्रयोग पैलडी बार करयो गयो। व्यासजी लाक रुचि रा पारखी है जिके सूं आपरा बणायोडा नाटक सवाद अर गीत घणा लोकप्रिय हुवै। हिंदी म तो आपरा कई सकळन निकळ्या है पण राजस्थानी म हाल कोइ सग्रह नी निकळ्यो। आपरी रचनावा मे ओज, मिठास अर भावुकता र साथ साथ हंमी रो फबतो पुट भी रैवै।

Δ

रजपूत

कदेक मुरधर देस हो, बळ, विद्या रैजाड
भारत-भू रो सेवरो, मात भोम रो मोट

कदेक म्हानै देस पर, जस मू लेता होड
बादळ करता आरती, देवळ करता पोट

बाघ सरीसा सूरमा, गया जमी नै छोड
अब दुकरड चुगता फिरै, टट भिटाता मोड

देख दसा या आपणी, माणस होग्यो मैण
नमका फाटै काळजो, टप-टप टपकै नैण

जोगा राण प्रताप रा, टाबरिया रो टोळ
फाटघोडा है जूतिया, विगडघोडा है डोळ

ठुकराई सिसकै पडी, आछो फरयो टोळ
गोलाई न भेळ कर, भना घालियो गोळ

तरग्या सारा सूरमा, मरग्या चारण भाट
दिल मे वडगी वीरता, गई सूरता नाठ

तलवारा ऊची टगी, लग्यो कटारया काट
कवचा लागी लेदरी, गई दीमका चाट

ढाल रसोई मे पडी, न्हावणघर मे पाट
बागो पहरयो बीनणी, बरछो लेग्यो जाट

छोडी लीक पुराणती, धारया नूवा ठाट
खोलोगा मे ठाकरा, बीच बजारा हाट

क्यु इकनाजमजी वण्या, क्यु इक वणग्या लाट
क्यु ई कलक्टरजी वण्या, क्यु इक वणग्या गाट

क्यु इक थाणेदार बण, करै अरड अरडाट
क्यु इक गिरदावळ वण्या मगला का समराट

बाबा! खूब वण्या, घण्या, छोडयो राज'र पाट
घर मे बच्यो ना गूदडो, पीढो रह्यो न खाट

घर नै खाग्या गोलिया, जर न रेग्या जाट
झूठ जूठ जो क्यू बची, गई ब्यानग्या चाट

दारू बेमरू थी बुरी, पण था उण रा ठाट
अब तो लिमनेटा उडै, दही वडा री चाट

हाडया री सी कोथळी, रूडलू मे दो गाठ
आनो परली हाडक्या, गिणल्यो पूरी आठ

गुण न लक्खण राखियो, बच्यो न तन मे तत
ठुकराई रो ठाकरा, भलो दिखायो अत

नावो होगी जेवडी, नीसरग्यो सो वट
वाण्या कै पोळ्या खड्या, घण्या भिडावै टट



दिवाळी

पुन वडेरा रा आछा, वरकत है उण री रीता मे
तिवहार वणाया इसा-इसा गाया जावै जो गीता मे

सभ्यता वदळती जावै है, वरताव वदळता जावै ह
पोसाक वेस भूसा हिवडा रा भाव वदळता जावै है

पण सालू-साल तिवारा रा दिन याद दिरावण आव है
इण होळी और दिवाळी-मिस, आख्या री चूध मिटाव है

पढ लिखण्या परदेसी भासा, सो हासी आवै आपा न
त्यूहारा री वेडी मे वडका, वाध गया सव पापा न

पिच्छम री आधी चालै है, पूरव नै फोडा घालै है
पण वारू म्हीना री 'रीता' आपा नै सदा सम्हाळ है

काळी काया उजळी करणै आई है फेरू दीवाळी
सव वैर भुला पिछला गूथो हिवडै सू हिवडै री जाळी

भाई सू भाई मेळ करो, सासू रै वहू पगे लागो
रूस्योडा घर रा धणिया सू घर री लिछम्या गहणा मागो

देराणी अर जिठाणी मिल, हिवडारी सव घुडचा त्यागो
वा रात गई, दिवाली री, परभात हुयो जागो जागो

मनडा मे मोद भरो मीठा, मगळमय मुखडा मुळकावो
आख्या रा आसू वद करो, 'ज्योती रा मोती' टळकावो



भीम पांडिया

जनम स्थान	बीकानेर
जनम तिथि	१६ जुलाई सन १६२६ ई०
पिताजी रा नाव	श्री रामरखजी पांडिया

पांडियाजी सही अरथ में लोक रा कवि है। लोकधुना री तरज पर लिख्योड़ा आपरा गीत रावणहत्थें पर बजा बजा'र गळी गळी घूम'र गुण गाणै री मरदमी राखणवाळा पांडियाजी आपरै ढंग रा अकेला ही कवि है। 'हाथ सूं कतर लीना डोरला' नाव सूं आपरी एक पोथी छपी है। समाज रा सतायोड़ा मिनखां सारू हमदरदी अर मोसरा करणवाळा नै फटकार बतावण वाळा आपरा अनेक गीत घणा प्राणवान बण पड्या है। धरती अर प्रकृति री सोभा रा मीठा अर प्रेरणा भरया गीत भी आप लिख्या है जिका नै कवि सम्मेलना में वाहवाही मिलती रयी है।



हिवडै मायलो हीरक दीप संजोय रे

माटी रै दिवलै सूं कोनी पार पडै
हिवडै मायलो हरक-दीप सजोय रे
धरती रै कण-कण मे अखत उजास कर
घणै मान सूं प्रेम वीज नै वोय रे
गाव-नगर म पथ-डगर मे
खेत-खळा में कर उजास
सत्य-अहिंसा धूप खेय दे
दसूं दिसा म भ॰ सुवास
त्याग तपस्या री निरमळ जळधार सूं
मनडै मायलो काळो कळमस धोय रे
माटी रै दिवलै सूं कोनी पार पडै
हिवडै मायलो हीरक-दीप सजोय रे
प्रम वतन सूं निभा जतन सूं
आख जग सूं प्रेम निभा
सुख समरिध फळ फूळ पाण नै
हरी साति री वेल लगा
मोह छोड ससतर पाती अणुवब रो
मिनख-मिनख न मिनखपणै सूं मोय रे
माटी रै दिवलै सूं कोनी पार पडै
हिवडै मायलो हीरक-दीप सयोग रे

उजासो दीसै आभल कोर

धरा पर लायी सुरगी भोर
घोर कळमस काळोडी कोर
घेरियो पसर अधारो छार
देख चेतण सूरज री किरण
उजासो दीसै आभळ कोर

चानणो वढ अधारो घटै
सुणीज पछीडा रो सोर
काम पर लाग हळा नै टोर
धरा रै कण-कण नै दे फोर
१ उजासो दीसै आभळ कोर

हियै मे जाण समै रो मोल
बीतती जाय घडी पुळ पोर
अवै मन करतै बेगो गोर
जियैलो नही काम रो चोर
उजासो दीस आभळ कोर

कोड कर उठ करमठ मोट्यार
राख महनत पर पूरो जोर
पसीनो सीच गळै ज्यू लोर
धरा रो नाच उठै मन मोर
उजासो दीसै आभळ कोर

सास रै साथ उदळतो जाय
जमानो जीवण नै झकभोर
हिया मे उथळ-पुथळ घणघोर
जागरण री धुन चारू ओर
उजासो दीसै आभळ कोर



हिवडै मायलो हीरक दीप संजोय रे

माटी रै दिवलै सू कोनी पार पडै
हिवडै मायलो हरक-दीप सजोय रे
रगती रै कण-कण मे असल उजास कर
धण मान सू प्रेम वीज न वोय रे
गाव-नगर म पथ-डगर मे
खेत-खळा में करै उजास
सत्य-अहिंसा धूप खेय दे
दस् दिसा मे भ- सुवास
त्याग तपस्या री निरमळ जळधार सू
गनड मायनो काळा कळमस धोय रे
माटी रै दिवलै सू कानी पार पडै
हिवडै मायलो हीरक-दीप सजोय रे
प्रम वतन सू निभा जतन सू
आन्त जग सू प्रेम निभा
सुग ममरिघ फळ फूळ पाण नै
हरी माति री वेल लगा
मोह छोड ससतर पाती अणुवव रा
मिनख मिनख नै मिनखपणै सू मोय रे
माटी रै दिवलै सू कानी पार पडै
हिवडै मायलो हीरक-दीप सयोग रे

—
—

पण लूंट सकै तो लूंठोड़ां नै लूंठाई सूं लूंट

तू लूट रै ! तू लूट
तू लूठो है रे लूट
पण लूट सकै तो
लूठोडा नै लूठाई सू लूट
तू लूट

जका जिंदगी भार वण्या जीवै है
जका बापडा निवळा हे लाचार
जका भाग फूटया है जावक यार
कीडा ज्यू किलबिलता नै मत मार
मत लिवाड रे विकरम सूरा हाथ
कळपतडा रो काळजियो मत चूट
लू ठोडा नै लू ठाई सू लूट
तू लूट

जकै न चुल्है चढै दिनूग दाळ
जठै दोय रोटी रो नही जुगाड
भूख मरता टावरिया वहाल
वानै खावण नै मत मूढो फाड
मत लिवाड रे विकरम सूरा हाथ
कळपतडा रो काळजियो मत चूट
लू ठोडा न लू ठाई सू लूट
तू लूट

जका जेठ र तावडिय मे ताप
वळवळती लूआ मे सीच पसेव
सोनाळ री ठठारी मे काप

खटै खेत में दिन भर आखी रात
फिरै उघाडा

फाटैमर भी पैरण नै नी पूर
मिलै न लूखा रोट पेट भर धाप
जीभ लपरका लोहीडो मत चाट
लूखा लाएा हाडा मती लमूट
मत लिवाड रे विकरम सूरा हाय
कळपतडा रो काळजियो मत चूट
लू ठोडा नै लू ठाई सू लूट
तू लूट



मणि मधुकर

जनम सितम्बर १६४२
सिक्षा एम० ए० (हिन्दी)
स्थान सादुलपुर (चूरू)

मणि मधुकर रो पलडो सम्र सुधि सपना के तीर' है जिण म हिन्दी अर राजस्थानी री टाळवा फुटकर कवितावा छपी है। हिन्दी म भी आपरी कवितावा उपन्यास आद कई पोथ्या छपी है। आपरै राजस्थानी काव्य सकळन 'पगफेरो' पर केन्द्रीय साहित्य अकादमी सू पुरस्कार मिल्यो है।

मणिजी परम्पराऊ ढग री कवितावा भी लिखी हा पण अबार नई कविता री ठाव पर जिकी ठेठ रग री देसी रचनावा करी है वा री मरोड घणी तीखी है। सबद री सामरथ भी आपरी खासा है अर बात न राखण रो ढग घणो असरदार बण पड्यो है। कवितावा रो चोफेर तो नई कविता रै घेरै रो ही है जिण सू बार निकळणो सायद आ रै भी बस री बात कोनी। या घणी अचभै री बात है के जीवण न देखण री या दीठ कठै ताई ठीक है जिण म अ धारो कुण्ठा, त्रास, भौ अर सगळी चीजा इसी ही है जन्क जीवण रा ग्रोर पग्त भी है ज्या सू मिनख नै उमग आसा अर उछाह मिल।

आजकाल आप कलकत्ता म सुतन्तर लखण रो काम कर।



कालो घोडो

रात घनख डोर ज्यू तग्णावै
रीस मे भरयोडी
घोग घूजै मैदी वरणी रेत
रूख रुखाळी बिना तडफा तोड़ै
गिगन मांदगी रै दोवडै मे लुकतो
कळेस रा श्राखर चुगतो
श्रूडी लावी निसास छोडै
सरणाटो घणो विकराळ घणो सवाळू है
श्रतस मे श्रूकळै श्रपसूण
श्रास्यां मे काकरा
रडकै श्राळ-जजाळ
हाथा सू छूटती जावै लाव
गोडा ताई श्रायग्यो
तिरसो पाताळ
कुण निगै गखै फूल पानका री
समै गे डूगर नचीतो श्रर निदाळ है
च्यारू खूट श्रखूट श्रधारो
इतियास जगै-जगै ग मूडा श्रोळखतो
सूत्या सवद
मुडदा रा घर-गोखा टोवता फिरै
इण खूणै काळस
उण गूण भूठ रो कीच-कादो
वठै वासती कठै वळवळता श्रगार
वठै जिदगानी रो च्यानणो

कठै नू व निरमाण रो गाटो
बीकाणें सू दिल्ली दरूजे रै बीच
भचीडा खावतो भटकै
कदे कचेडी कदे लाल किलै रै सामी
माथो पटकै
अेक मिनख रो अळसायो उणियारो
पून पाणी री पलका पर तिरै
जगळ मे काळो घोडो कुदडका करै



आलीजा ! आज्यो घरां

चोरावै ऊभा
वारणै अडचा
चूंतरै पसरचा
उगाड पडचा
ग्रै गेला किण नै उडीकै
किण री वाट जोवै
हाट-वजारा सून
चूला मे ठडी-ठर राख
परिंडा मे छाट पाणी नी
पखेरु मून धारचा बिरछा माथै
कदे-कदास
कठैई कूकरिया घसै
सुगन माडा
भखारिया गीती
भीत लेवडा चिगळै
तवो वतळावण करणी चावै
चकळो पड्तर नी दे
ग्रूखळी मे एक दैत
हुडहुड हासै
डागळै डाकण फदाका भरै
निसकारा नाखती
घर री धिराणी
मन माही कळाप करै—
आलीजा ! आज्यो घरा

के धान विना भूखा मर्रा
छापै मे उडतो
फडफड करतो
ग्रावै नागो समचार
के ग्रवकै विरग्या रा जोग है
नेता घणा छोकै
ग्रर गरजै
धम खावो
हळोतियै सारू
नाज काठो रासो
रोजीना तीन पो'र
वै जनता नै वरज
न नाज न काज
थोथा रो राज
ग्रेक्सो चयाळीस री धारा
मँगाई री गाज
हाथा मे ले लिगतरा
भाज भाईडा भाज



मदनगोपाल शर्मा

जनम स्थान सामोद (जयपुर)
जनम तिथि २० मई सन १९२६ ई०

डा० मदनगोपालजी मूळ रूप में हिंदी रा लेखक है। साहित रै मरम नैं समझणै री समरथा रा धणी होणै रै कारण आपरी रचनावां रो साहित स्तर ऊंचो है। कालेज में हिंदी रा अध्यापक होण सूं साहित सूं आपरो सगपण निकट रो है। आपनै अनुप्रासां रो घणो चाव है जिकै सूं आपरी कविता में सब्दां री रुणझुण मावळी मिलै। आपरै गीतां नै राग सूं गावण री कळा में भी प्रसिद्ध है। फुटकर कवितावां रै अलावा आप 'कुमारसम्भव' रो राजस्थानी अनुवाद भी करयो है। 'गोखै ऊभी गोरडी' नाव सूं राजस्थानी कवितावां रो एक संग्रै आपरो छप्योड़ो है।



देसडलो

म्हनै प्यारो लागै म्हारो डूंगर धोरा हाळो देस

सावण मास सुरंगलो जी, घिरै घटा घणघोर
घन घन गाजै मेरलो जी, वन-वन नाचै मोर
म्हनै वालो लागै म्हारो
कुंजा मोरा हाळो देस

लडभड झूमै बोरड्या जो, सांगरियां झाभोर
खोखा चोखा चिलगोजा सा, छुहारा सा बोर
म्हानै प्यारो लागै म्हारो
सांगर बोरा हाळो देस

नागोरो बळदा री जोडी वावै ऊंडी फाळ
जैसलमेरो सांढिया जो, पूठी देवै भाळ
म्हानै प्यारो लागै म्हारो
डागर ढोरा हाळो देस

रात रुपाळी दिन सोगुंला, रन-रस री रगरेळ
मानधणी मिनखां रा मेळा, हुवै मना रा मेळ
म्हानै प्यारो लागै, तीजा
अर गणगोरा हाळो देस

वै नखराळी गोरड्या, वै नेहीडा निरदुंद
वा उजळी वो जेठवो, व मयणी बीभाणंद
म्हानै प्यारो लागै म्हारो
मरवण ढोला हाळो देस

वै वारी रजपूतण्यां, व रणवंका राठोड
पग तो रुपियो पागडै मे, माथै बंधियो मोड
म्हनै प्यारो लागै म्हारो
सतिया सूरा हाळो देस

△

चेत माणसा !

धग-धग धूजै धरा, गैण गरणावै है
चेत माणसा, नुओ जमानो आवै है
सेसनाग रा सहस-सहस फण डोलै है
दसूं दिसावां अगनी री झळ उगळै है
डगमग-डगमग कांपै डूंगर डूंगी सा
समदर रो जळ उफळ खळभळै उछळै है

झड-झड तारा भू पर पड पतिंगी सा
मरण-मरण यो सूंट जबर सरणावै है
यो तो भागी सूंट अजब अणदेरयो है
भेद न इण रो नेक समझ मे आवै है
गजब घणो अरडा'र पडै वड पीपळ है
फोग वटारा नाच मौज मनावै है

आंधी मे भी नान्हा दिवला मुळकै है
तेजवंत उडगण पण नद-नद जावै है
धस-मस जाव आडा डूंगर डीगोडा
ओघटघाट मांरडा मारग देव हे
सरवर सूक्या, नदयां मे भूडो भरग्यो
धोरां मे जळधारा लहरां लेवै है

हेल्या मे बस्त्यां मे तो सूनेड पडी
वीहड जगळ मे, मगळ सरसाव है !
जगी मठ-मिदरा रो मठ मो मारयोगो
काचा कळसा रो ढळग्यो नकली पाणी

कोट-गढा रा कगूरा भट-भट पटग्या
गुंबद नीवा सू माग है जिनगाणी

छान-झूंपड्या री भींता ध्रावै ऊंची
महल-माळिया नीचा लुळ-लुळ जावै है

धटगी मन मायो जो पग्ळ दीसै है
ह जुग रो पगथाडो, जुग री फेरबदळ
नाही माटी है घर रै ही नामण है
नई घडत रगरूप नुवो ह, नवो मिनख

नुवा उतारण पाण, काळ रै हाथा सू
पिरजापत सिस्टी रो चाक घुमाव है।



तारां री रंगबरी !

निरमळ नभ मे नीलो लीलो यो तबू सो तणियोड़ो
तळै रूप री राम चदरमा बैठ्यो बनड़ो बणियोड़ो

दूगा धोळी धुपी दिमावा री चौखूट कनात तणी
नखत बण्या है माडैहाळा तारा री बारात बणी

माडैहाळा श्रौर जनेती श्रेवड़ छेवड़ बैठयोडा
मरत सुभाव जनेती सागा, पण कुछ थोड़ा ऐंठयोडा

नीलमजड़ी अतरदाणी सू झरै श्रोस रा छणकारा
चमर डुलावै पवन, लागरया ठडा मडा फटकारा

अतरिक्ष मे बळग्यो अगर अर मोगम लोरा लोर वळी
छोल चढग्या सगळा रा जिवडा, मद मे मगळी सभा रळी

अपणी अपणी बेळा उठ-उठ सीठणार सू जणी-जणी
मान बढावण देण वधावण मधुर सुण्यार सिलोक भणी

सुण सुण कर मोवण सिलोका सामव सारा पुळक रह्या
अधरा ही अधरा चदाजी मधरा-मधरा मुळक रह्या

काना रा कचन रा कुडळ, अर कपोळ है काप रह्या
झळळ जगमगै रतन मुकट रा नैण सिस्टि रा भाप रह्या

यू ही बगतो रवै अयूतर तक या बात उमग भरी
अमर रहे या नभ रो माडो, या तारा री रगबरी



मनोहर प्रभाकर

जनम-स्थान   झाडारेज (जयपुर)
उमर   वरस ४६ रै नेडो

डा प्रभाकरजी मूळ रूप म हिंदी रा कवि है। पण समरथ लेखणी रा धणी अर ठेठ राजस्थानी होणसू आपरी राजस्थानी रचनावा भी ऊचै दरज री चीजा बण पडी है। आप उण थोडा सा लेखका म सू है जिका अनुवादा सू आज री राजस्थानी रा साहित भडार भरयो। मेघदूत' अर 'भरथरी सतक' रा आपरा अनुवाद घणा सफळ हुया है। फुटकर गीत भी आप लिख्या है जिका कवि सम्मेलना म सराया गया है। प्रभाकरजी छन्द रा छटवा कारीगर है। आपरी रचनावा म कठै भी गति लय या तुक री कोर कसर नही लखाव जद कै आज रा घणसरा कविया म या कमी खटकै। इण गुण रै पाण ही आपरी रचनावा घणी स्वाभाविक दीख पड महनत सू खट'र बणायोडी सी नही। राजस्थानी साहित अर सस्कृति पर हिन्दी अगरेजी मे आपरी दो तीन पोथिया तो छपी ही है पण फुटकर साहित्यिक पोथिया भी काफी मात्रा मे छप्योडी है।

गीत

जिण घडिया मे सायँ होवै
हिवडै रो आधार
अँ कडवी घूटा जीवण री
वणँ सोम रो धार
अनळ-कुड इमरत बरसावै
वजड धरती फल खिलावै
अळँ घोस हिरदो हरखावै
ज्यू झाझर-झणकार-जिण।

ऊजड-खेडो सरग रचावै
सूनोपण ससार बसावै
पीडा रो पतझाड सजावै
मधुरितु रो सिणगार-जिण।

विपदा रा सै बधण टूटै
हिय हेत रो नीझर फूटै
भावा री चिडकोल्या ऊडै
जी भर पाख पसार-जिण।

सासा मे सोरम सी गमकै
नैणा मे वीजळ सी दमकै
अग-अग आमीरस घोळ
हिलै हिय रा तार-जिण।

मधरी मुळक अधर बरसावै
गळा गीत गे घर वण जावै
चचळ चित लहरा सो लहरै
उमगै रस री धार-जिण।

अेक्लडो जीवण ना चालै
सूनो हियो सदा सू सालै
चिता चढू जे हो मन-सगी
रण वणै त्यू हार-जिण।



गीत

कुण मुसकायो चाणचुकी या
जोबन रै परभात मे

हुळस उठी हिवडै री बयारी
मुळक उठी मन री फुलवाडी
पाखडिया रै गात मे–कुण०

एक झलक भी झाक न पायो
पलका सू पळ मेळ न खायो
पण कामण वरग्यो कुण जाणै
आज बात री बात मे–कुण०

ताप तावडो तिल-तिल वाळै
यो दुखडा पण कदे न साळै
जद सू मै हायो इण थारी
रूपाळी बरसात मे–कुण०



फागण रो गीत

चग वजातो रसिया गातो
फागण आयो अे, कूकी कोयलडी
मस्ती रैं रग रग्या रूखडा
वेला वन विलमावैं
नयी कूपळा कवळी डाळघा
निरख्या नैण लुभावैं
फूल फूलिया, वाग महकिया
फमला गावैं ग्रे, कूकी कोयलडी
रूप समदर न्हाई कळिया
क्यारघा रास रचावैं
नयैं नाज री वाली खेता
मगळ गीत सुणाव
खेत हुळसिया, मोर मूळकिया
मन मसतायो अे, आवैं ओळ्यू डी
गळी-गळी मे होळी गाता
छैला चग वजावैं
मस्ती डूब्या करैं मसखरघा
लाल-गुलाल लगावैं
रसिया री धुन हिवडै-हिवडै
हूक उठावै अे, वाजै ढोलकडी
लूग्रर खेलैं नाच किसोरघा
फूली फाग मचावैं
वेस वसती पैरघा कोई
प्रीतम रै मन भावै
घूमर घालैं अग उछाळैं
गोरघा नाचैं अे, झणकैं पायलडी



डा० मनोहर शर्मा

जनम स्थान बिसाऊ (झूंझणू राजस्थान)
उमर बरस ५६ र नेडी

डा० मनोहरजी राजस्थानी साहित रा महारथियां मे सू है। राजस्थानी काव्य में जितरा भांत भांत रा प्रयोग आप करया है उतरा सायद ही कोई दूजो लेखक कर्‌या होसी। छोटै थका ही आपरी रुचि काव्य रचना कानी लागगी ही। 'अरावली री आत्मा' अर 'गीत कथा' नाव सूं आपरी दो पोथियां घणी पहला छपी ही। धोरां रा संगीत, धूं जा अम्मरफळ, गोपीगीत, मरवण, पछी, रसधारा, बापू, गजमोती, बेलवध, जय जननायक, बटाव—अ आपरा उण काव्यां रा नाव है जिका पत्र पत्रिकावां में छप्या है। बिना छपी रचनावां मे—म्हारो गांव, अबला, ताराभूंडी अर आरुज धारा नाव रा काव्य है। अनुवादां में मेघदूत, उमर खैयाम अन्योक्ति-सतक, गीता, धम्मपद अर जिनवाणी छप चुक्या है।

राजस्थान र लोक साहित रो आपरो ग्यान घणो ऊंचो है। लोक-कथावां अर लोकगीतां पर आप गहरो अध्ययन कर्‌यो है। 'वरदा' नाव री तिमाही अनुसंधान पत्रिका रै सम्पादक रूप मे आखा राजस्थानी प्रेमी आपनै भली भांत जाणै।

कवि रै रूप मे डा० 'मनोहरजी राजस्थानी लोककाव्य सूं घणा प्रभावित दीखै। आपरी अनेक रचनावां लोकगीतां री धुनां पर बणी है। मातभोम र प्यार र साथै साथै आध्यात्मिक अर भारत री ठेठ संस्कृति री छाप आपरै काव्य री विसेसता है। आपरी और छप्योड़ी पोथियां रा नाव है—'नणदी रो साजो', 'कुंवरसी सांखळो' 'राजस्थानी बात साहित्य' 'सोनल भींग', कन्यादान अर 'रोहीडै रा फूल'।

बीज

बीज एक सोयो सुपना री
छाया मे सोनै रो सूत
बादळ री बूंदा बोली 'उठ'
जाग जाग पिरथी रा पूत'

पान-पान मे प्राण समाया
कोमल कूपळ पसरी बेल
किरणा री माया भल दीपी
मन मोत्या री माड्यो खेल

सौळी पून सदेसो ल्याई
कळिया उठ कीन्यो सनमान
फूला छाई बेल सुरगी
सार रूप दीन्यो रसदान

अम्बर रो हिरदो सरसायो
एक बीज बण सोरम रूप
ससारी माया रा लोभी
नर तू सुण यो सार अनूप



सार कमाई

भात-भात रा थाळ सजाया
नगर सेठ कर चाव
माया री छाया मे आयो
गरूदेव रै ठाव

दो रोटी मेली थाळी मे
अर सरदा रो साग
प्रेमभगत कारीगर आयो
तज माया री राग

ध्यान लीन आसण पर बैठ्या
आप तपोधन नाथ
हाथ जोड दोनू जण ऊभा
नैण निवाया माथ

जोत रूप गरु नैण उघाड्या
मुख लाली री रेख
बायर भीतर री वाणी ज्यू
एक भई रस देख

घणैं हेत सैं भोग लगायो
ले रोटी निज हाथ
पुळक पसीज्यो अग भगत रो
चरण छुवायो माथ

नगरसेठ मन रोग समायो
करी बीनती दीन
सेवग रा यै थाळ सजोया
किए विध देव मलीन

इमरत री बाणी गरु बोल्या
सेठ न ल्या मन खेद
बायर भीतर री आख्या सँ
देख आज यो भेद

रोटी रो जद टुकडो तोड्यो
सोरम व्यापी पून
अवरत धार दूध री चाली
इमरत घोळ्यो चून

लाडू रो जद टुकडो तोड्यो
गद-गद निसर्‌यो खून
सार कमाई रो जस गायो
अवर रमती पून

तं [illegible]

जुग जुग रो सिर पर भार धरयो
ना जग रा भोग त्याग
ा जाग ओ मिनख जाग
छोर
ग वोर
डोर
नाग

रो जुग वीत्यो
सच रीत्यो
हारयो जीत्यो
आज भाग
ो मिनख जाग

भूखा धाया
गोरवछाया
मन भाया
आज पाग
ा मिनख जाग

तूं जाग जाग ओ मिनख जाग

ऊपर छायो लीलो अंबर
नीचै पसरया धरती सागर
नित नित सरसावै य खुल कर
पण सीव थरप तू दिया दाग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

हिरदै मे चाव घणो छायो
पीद जाकर मोती ल्यायो
पण भेद बूंद रो ना पायो
सारो सागर तू लियो थाग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

मन मे जाण परखी पा ली
तेरा गोता जासी खाली
हिरद री गंगा सुख चाली
यो नीर नही या विकट आग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

विद्या बळ पा तू गरवायो
पण ग्यान तेरो के गुण आयो
पाणी मथ कुण इमरत पायो
झूठा यै सारा उड झाग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

तू नित कूवो खोद्या जावै
पण प्यास न तेरी मिट पावै
आखर के हाथ तेर आवै
चोरा र जाव चोर लाग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

माया रै मद मे चाव भरयो
ऊंडो हिरद रो रस विसरयो

जुग जुग रो सिर पर भार धरचो
जाण्या ना जग रा भोग त्याग
तूं जाग जाग ओ मिनख जाग

पूरव पच्छिम रा ओर छोर
मिलज्या दोनूं हो रग वोर
यैं सूत कई बण एक डोर
ले नाथ काळ विकराळ नाग
तूं जाग जाग ओ मिनख जाग

अब तो सोनैं रो जुग वीत्यो
तेरो सारो सचैं रीत्यो
धारैं मत कुण हारचो जीत्यो
जाग्या माटी रा आज भाग
तूं जाग जाग ओ मिनख जाग

या भेद भावना मन त्यागै
तो प्राणा मे इमरत जागै
नारायण आवैं नर आगै
तूं प्रेम मगन हो खेल फाग
तूं जाग जाग ओ मिनख जाग

काळा गोरा भूखा धाया
निवळा सबळा गोरवछाया
पिरथी माता र मन भाया
सारा मित वदळ आज पाग
तूं जाग जाग ओ मिनख जाग

जण जण मे चेतनता पसार
सुगणो सोयो यो गूढ तार
गूं जण लागैं वर रस पुकार
अवर मे चालै अमर राग
तूं जाग जाग ओ मिनख जाग



तूं जाग जाग श्रो मिनख जाग

ऊपर छायो लीलो श्रवर
नीचै पसरचा धरती सागर
नित नित सरसावै य खुल कर
पण सीव थरप तू दिया दाग
तू जाग जाग श्रो मिनख जाग

हिरदै मे चाव घणो छायो
पीदै जाकर मोती ल्यायो
पण भेद बूद रो ना पायो
सारो सागर तू लियो थाग
तू जाग जाग श्रो मिनख जाग

मन मे जाण परवी पा ली
तेरा गोता जासी खाली
हिरद री गगा सुस चाली
यो नीर नही या विकट श्राग
तू जाग जाग श्रो मिनख जाग

विद्या वळ पा तू गरवायो
पण ग्यान तेरो के गुण श्रायो
पाणी मथ कुण इमरत पायो
झूठा यै सारा उड झाग
तू जाग जाग श्रो मिनख जाग

तू नित कूवो खोद्या जावै
पण प्यास न तेरी मिट पावै
श्राखर के हाथ तेरै श्रावै
चोरा रै जाव चोर लाग
तू जाग जाग श्रो मिनख जाग

माया रै मद मे चाव भरयो
ऊडो हिरद रो रस विसरयो

जुग जुग रो सिर पर भार धरचो
जाण्या ना जग रा भोग त्याग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

पूरव पच्छिम रा ओर छोर
मिलज्या दोनू हो रग वोर
य सूत कई वण एक डोर
ले नाथ काळ विकराळ नाग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

अब तो सोनै रो जुग बीत्यो
तेरो सारो सचै रीत्यो
धारै मत कुण हारचो जीत्यो
जाग्या माटी रा आज भाग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

या भेद भावना मन त्यागै
तो प्राणा मे इमरत जागै
नारायण आवै नर आगै
तू प्रेम मगन हो खेल फाग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

काळा गोरा भूखा धाया
निवळा सबळा गोरवछाया
पिरथी माता रै मन भाया
सारा मिल बदळ आज पाग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग

जण जण मे चेतनता पसार
सुणणो सोयो यो गूढ तार
गू जण लागै कर रस पुकार
अवर मे चाल अमर राग
तू जाग जाग ओ मिनख जाग



हाथ

इण धरतो पर इतणो धन
इण धन नै भोगैला कुण

एक समो हो मिनखपणो
अपणैं सू मजबूर घणो
धरती सू अै हाथ बध्या
कुदरत आगै माथ भुक्या
आभो कैडो, कुण जाणैं
चन्दा नै कुण पहचाणैं

पण धरती सू हाथ उठ्या
हाथ उठ्या जद हाथ सध्या
जोयो धरती रो कण कण

ढोल धणा रा गग्ज गया
मोती नभ सू बरस गया
धण धरती रो पग भारी
खेता मे मुळकी क्यारी
कुदरत री घू पळ फूटी
बेला री निंदरा टूटी
निपज्या दाणा कैंग रई
धरती लीली चैर हुई
बेलडिया नाच रणभुण

मिनख पताळा जा आयो
छिपियोडो धन निपजायो
धरती रो कण कण जोयो
सूह चरी नैं धन वोयो
घणा वळा रा हळ चाल्या
हाथा मे पडग्या छाला
कळ री वाणी बोल गई
सुख वैभव नैं तोल गई
लिछमी रो घर हर बागण

मरुधर मृदुल

जनम स्थान , जोधपुर

उमर ४६ र नडो

वकालत अर कविता रो घनोखो मेळ मरुधरजी रै मन रा भेद बताव। कालेज-जीवण में पनप्योड़ा हिन्दी कविता रो प्रेम जमानै री फेर बदळ रै माथै मातभासा कानी झुक्यो। मैनत, समता अर उछाह रा गीत आपरा प्यारा विसय है। हाथां री खरी कमाई में आपरी सरधा जिसी आचरण में है विसी ही काव्य में भी लखाव। हिन्दी री ज्यूं राजस्थानी म भी आप फुटकर गीत अर कवितावां ही लिखै। राजस्थानी जागरण रै आन्दोळण में आपरी बिसेस रुचि है। इण दिसा मे आपरी कोसीसा सराहणे जोग है। आपरी एक काव्य-पुस्तक छपी है।



हाथ

इण धरतो पर इतणो धन
इण धन नै भोगैला कुण

एक समो हो मिनखपणो
अपणै सू मजबूर घणो
धरती सू औ हाथ बध्या
कुदरत आगै माथ झुक्या
आभो कैंडो, कुण जाणै
चन्दा नै कुण पहचाणै

पण धरती सू हाथ उठ्या
हाथ उठ्या जद हाथ सध्या
जोयो धरती रो कण कण

ढोल घणा रा गग्ज गया
मोती नभ सू बरस गया
धण धरती रो पग भारी
खेता मे मुळकी क्यारी
कुदरत री कू पळ फूटी
वेळा री निंदरा टूटी
निपज्या दाणा कैर रुई
धरती लीली चर हुई
येलडिया नाच रणभुण

मिनख पताळा जा आयो
छिपियोडो धन निपजायो
धरती रो कण कण जोयो
सूड करो नै धन वोयो
घणा वळा रा हळ चाल्या
हाथा मे पडग्या छाला
कळ री वाणी वोल गई
सुख वैभव नै तोल गई
लिछमी रो घर हर आगण

मरुधर मृदुल

जनम स्थान , जोधपुर
उमर ४६ र नेड़ो

वकालत अर कविता रो अनोखो मेळ मरुधरजी रैं मन रो भेद बताव । कालेज जीवण मे पनप्योड़ो हिन्दी कविता रो प्रेम जमानें री फेर बदळ रैं साथैं मातभासा कानी झुक्यो। मैंनत, समता अर उछाह रा गीत आपरा प्यारा विसय है । हाथा री खरी कमाई मे आपरो भरधा जिसी आचरण मे है बिसी ही काव्य मे भी लखाव । हिन्दी री ज्यू राजस्थानी मे भी आप फुटकर गीत अर कवितावा ही लिखैं । राजस्थानी जागरण रैं आन्दोळण मे आपरो बिसेस रुचि है। इण दिसा मे आपरी कोसीसा सराहण जोग है। आपरी एक काव्य-पुस्तक छपी है ।



हाथ

इण धरतो पर इतणो धन
इण धन नै भोगैला कुण

एक समो हो मिनखपणो
अपणै सूं मजबूर घणो
धरती सूं अै हाथ बध्या
कुदरत आगै माथ झुक्या
आभो कैंडो, कुण जाणै
चन्दा नै कुण पहचाणै

पण धरती सूं हाथ उठ्या
हाय उठ्या जद हाथ सध्या
जोयो धरती रो कण कण

ढोल घणा रा गरज गया
मोती नभ सूं बरस गया
घण धरती रो पग भारी
खेता मे मुळकी क्यारी
कुदरत री दूं पळ फूटो
बला री निंदरा टूटी
निपज्या दाणा कैर रुई
धरती लीली चर हुई
वेलडिया नाच रणभुण

मिनख पताळा जा आयो
छिपियोडो धन निपजायो
धरती रो कण कण जोयो
सूड करी नै धन बोयो
घणा कळा रा हळ चाल्या
हाथा मे पडग्या छाला
कळ री वाणी बोल गई
सुख वभव नै तोल गई
लिछमी रो घर हर आगण

हाथा री जस अपरम्पार
धण धरती रा अै भरतार
सुख-सुहाग रा सरजणहार
टीकी-काजळ रूप सिंगार
मिनखा रा अै हाथ अमर
या हाथा रो साथ अमर

हाथा री मैंनत भरपूर
धरती रो दुख करदे दूर
मैंनत करणै वाळो जन
भोगैला धरती रो धन
इण धरती रो सगळो धन
इण धरती पर जितणो धन



गीत

म्है गीज्यो म्है बीज्यो न म्है खडिया ए म्है खू टाळा खेत
[illegible] अन्न निपजावा, वाटा, खावा-रैवा सैंग समेत

[illegible] आदळ-रा कळम समुन्दर सू पाणी भर लावै
घणां कोड सू, घणां लाड सू, धरती न पदरावै
अै पाणी रा बीज पडै जद धन निपजावै रेत

धरती जाव सीता-खेतो-चेटी सुगणी आवै
हाथा री मैं मजै वराता, मैनत नै परणावै
सिया-राम रो अमर वाजियो, जुगा-जुगा सू हेत

सोन री लका रा रावण खेता पर चढ आव
भांत भात रा रूप बदळ नै सीता नै बिलमावै
सोन री म्रिग तिसना छळगी, करगी घणी अचेत
यू मनत री इज्जत अस्मत लुटी नही रह जावै
म्हारै घर री वहू नही दूजा री सेज सजावै
जग जगावा, मिल-भिड जावा, सव जण जावा चेत

गीत

टिच-टिच कोई करै, खेत मे हळ चालै
धरती निपजै धान मानखो जग पाळै

धरती पड़ी उघाडी, वजड लाज मरै
कुण धरती रो रूप सवारै कुण धरती री लाज ढकै
कैरी-करी धू पळ-धू पळ खेता री चूदड वाधी
धण धरती री लाज बचाली, धण धरती रै रखवाळै

धणी राज री चौपड माथै धरम जुआरी हारयो
चीर द्रौपदी रो चीरण नै, सोसण मन मे धारयो
खुलै खजानै लाज लूटणो, ठहरो वन्द करो
धण धरती रो चीर वचावै, करसो राज सम्हाळै

आभै री भगवान कद तो करडो वैर बतावै
नदिया तोडै तीर लाज न सूत कदे ले जावै
इण पाणी रै नाथ घाल नै वस मे कर लेवै
हाथा रा भगवान बाध री नाथ नाक मे घालै

नही राज रो नी कुदरत रो कोई जोर चलै
मनत जायो मिनखपणो ओ फूल खूब फळै
सुख-सपत री धरती माथै धमचक मच जावै
मिनखपणै री साख मिनख मे नही रुकै, हालै

माधव शर्मा

जनम-स्थान चूरू (राजस्थान)
जनम तिथि जनवरी १६३२ ई०
पिताजी रो नाव श्री कानीरामजी

'मधुकर' नाव सूं राजस्थानी रा रसभर्‌या गीत लिखणवाळा माधव शर्मा गीता रो एक 'भूमको' [illegible] साहित नै भेंट कर्‌यो है। अणछपी पोथियां में— [illegible] फुलवाडी', 'मिनख' (नाटक) अर 'कवळीकोर' [illegible] संग्रह) रै अलावा रवीन्द्र री गीतांजळी रो अनुवाद [illegible] है। राजस्थानी में संगीत अर काव्य रो मीठो मेळ [illegible] रुचि अर लगन घणी है। राजनीत री पढाई [illegible] रो काम अर काव्य रो मोल आज रै जुग में [illegible] मेळ है पण कळाकारां रा दिन हाल भाग [illegible] संतोख करणो पडै। 'केसर' अर '[illegible]' ([illegible]) नाव री आपरी दो पोथियां और छप्यांगी है।

□

गीत

लोक लाज वाध्यो तन प्रीतम मैं मन
मैं मन थारी चेरी ।

नैणा भरियो नीर न दुळक मुळक दिखावै ...
...जळिये री रेख मेरा ज्यूं भळगी हो न पळा ...

हिवड़ै यादड़लो मलवेली
ताना दे'र सुणावे गैली ।

मन-तन भाखे ना निमटैलो विपदा ... घणेरी
लोक लाज वाध्यो तन प्रियतम, मैं मन थारी चेरी ।

दूर वादळी प्रेमलमी बायरियो नाच नचावै
सूरज री तीखी तिड़की संग पाणी जळ थळ जावै

तरस तन मरुथळ री काया ।
प्राण पसीजै मन अळसाया ।

मिनखाँ री ले आस अमिट वाटड़ली जोग्रा तेरी
लोक लाज वाध्यो तन प्रीतम, मैं मन थारी चेरी
जीवण बुझनो जाय न दुनिया मरो रोग पिछाण
पाळ हटकू धणो काळजो मुपना लेय धिगाणैं

सामा वसियो मोह न छूटै
हिवड़ै लागी गाठ न टूटै

इण जुग कर ले जोर जमानो उण जुग वाजी मेरी
लोक लाज वाध्यो तन प्रीतम, मैं मन थारी चेरी

जोड़ी बळदां की

रुणझुण चालै चाल'क जोड़ी बळदा की
टणमण वाजै टाल'क जोडी वळदा की
घण गाजै बीजळ खिवै कोइ सावण चढियो लोर
पपियो बोल्यो डूगरा कोइ खेता नाच्यो मोर
तीज्या आवैली
गोरी के मन कोड'क पीवर जावली
लेवण आसी वीर'क जोडी वळदा की
लावै डाळ नीम कै कोइ हींडा माडयो वीर
हीडै बनड लाडली कोइ ओढ्या दिखणी चीर
सायण सूहेली
दो दिन रो हे मेळक झोटा देवली
हिवडै बढा हिलोर'क जोडी वळदा की
झडी लगाती आवसी कोइ भादूडै री तीज
मणी सहेली छोडता कोइ चोळो जासी भीज
झूरै आखडली
पिवजी हाक्या जाय'क पचरग पागल्ली
सासरियै ले जाय'क जोडी वळदा की
रुणझुण चालै चाल'क जोडी बळदा की
टणमण वाजै टाल'क जोडी वळदा की



गीत

जोवन छळक्यो जाय
बाळपण पाछा पाव धर

सूरज री उगाळी
फूला री डाळी
मुळक'र माग हेत
किरणा सू खेलै
तोल पग मेलै
धूज'र घिसक रेत

चित री चौकडी
लाज री नौकडी
बाधै काळज री कोर
नैणा रमियावै
अधर फडकावै
हिवडै हठीली हिलोर

भैस री लारया
रूप सु वार्‌या
उजळ सी धरती री दीव
कुवै री कानी
निजरा सैलानी
मुळकै जवानी री सीव

दो छलाग भरी
पण सोच डरी

कोई देखै नगरी रो लोग
सासर ना मानै
के ओलै के छानै
के मोद सरम सजोग

तीसी पळक
वेळ जावै छळक
प्यास बुझणं री वाता राख परै
जोवन उळक्यो जाय
बाळपण पाछा पाव धरै



मेघराज 'मुकुल'

जनम स्थान राजगढ़ (चूरू-राजस्थान)
जनम तिथि १७ जुलाई १९२३ ई०
पिताजी रो नाव श्री लक्ष्मीचन्दजी पेसकार (रिटायड)

मुकुलजी एक साधारण परिवार मे जनम लेकर भी आपरी लगन र प्राण एम० ए० तक पढ्या अर गुणा रै कारण राजस्थान रा सास्कृतिक अधिकारी बण्या। आपन मा रै स्नेह सू कविता करण री प्रेरणा मिली। सन १९३७ सू आप लिखणो सुरू कर्यो। 'उमग' नाव सू आपरी हिन्दी अर राजस्थानी कवितावा रो एक सग्रह छप्यो है। 'सीमारेखा' अर 'सनाणी' नाव रा गै सग्रह छपण सारू त्यार पड्या है।

राजस्थानी र नव जागरण मे मुकुलजी रो एक न्यारो जुग है। राजस्थान री गौरव गायावा न आप मीठी भासा मे अर भासा सू भी मोठै गळ सू सुणाव जद लाखा री भीड भी पूगी पर डूलत मिणधर ज्यू विभोर हो जावै। देस रा दूर दूर रा सहरा म मुकुलजी राजस्थानी' रो सदेसो पूगावण वाळा पहला कवि है। आज देस रा कवि-सम्मेलना म राजस्थान री मान मरजादा राखणवाळा मे भी आप अगुवा है। आपरी सनाणी' नाव री राजस्थानी कविता देस र कूणै-कूण म लोगा र मन भाई। अणगणित लोग सनाणी' री देखा-देखी राजस्थानी कवितावा बणाणी अर मुकुल री तरज मे गावणी चाही। हजारा लोगा नै राजस्थानी कानी खीचण म मुकुलजी गी सनाणी घणो वडो काम कर्यो। इण भात आज रै राजस्थानी काव्य मे सनाणी जुग' री थापना होई। साहित्यिक मच पर मुकुलजी राजस्थानी रो झडो रोप्यो। उण झडै र तळै पाछला वरसा म दूजा भी अनेक कवि आपरा

करतब दिखाया। पण राजस्थानी रो सब बणावण रैं जस रो सेवरा मुकुलजी रैं माथै ही बध्या।

राजस्थान रैं पुराण गौरव रा बखाण करणै र अलावा मुकुलजी आप रैं काव्य मे राजस्थान रैं लोकजीवण रा फूटरा चितराम खीचैं अर उणा म सवेदन, साहस, आसा अर क्राति रा ऊजळा रग भर। 'सैनाणी री जागी ज्योत' नाव सू आपरी राजस्थानी कविनावा रो एक सग्रै छप्योडो है।



माटी मुलकी बीज पसीज्या

पमवाडो मत फेर निदाळ जागण री वेळा आई
दिन ऊग्यो चिडकोली बोली, आभ मे लाली छाई
माटी मुळकी, बीज पसीज्या, कूपळ पर जोवन छायो
फूल पातडी विछिया बणगी, धरती रो मन अगडायो
थोडी सी जे आख माजली, निजर घणो ही आवैलो
जे देसो अणदेगी करदी, बिना मौत मर जावैलो
जगत-जण रै मन बस्यो चानणो नैणा मे रोनक आई
दिन ऊग्यो चिडकोली बोली आभै मे लाली छाई
मिणन पसीनो पूछण लागी, ठाला बात बणावै रे
ठगी अधेरै मे जद बैठे, कडक-बीजळी आवै रे
आज आण री खेती निपजे, करम जुगत दरसावै है
वणत माडली नई योजना, पछलो आग आवै है
धणी उतावळ पग कद माड, सीळी धरती रह धाई
पमवाडो मन फेर निदाळू, जागण री वेळा आई
घेर घुमेर बादळी आई, बूद घूघरी सी लागै
स्वाद मजूरी सुस्ती खारी, नीद दरूजै पर जागै
दूध बाळग्यो, छाछ, फूक्ले, दही जमाया कद जमसी
आग वरसगी, घी छिडकागी, नई क्राति कीकर थमसी
ऊमको लाग्यो, लपट नीसरी, छादै मे सोरम आई
दिन ऊग्यो चिडकोली बोली, आभ मे लाली छाई
चुगटी-चुगटी चून बखेरै, दूणो चूसे बदळै मे
थोडो करै घणो दरसावै, सिरळ मिरळ है सगळै मे
मटका करती, डेरा भरती, आख मिनख ने सावै है
धीरज धरले चाह बावळी, बिसवासी मन गावै है
पग मे पडी वेडिया कटगो, पैंजणिया सुर मे आई
दिन ऊग्यो, चिडकोली बोली, आभ मे लाली छाई

छियां–तावडो

गीत भीजग्या नय रग मे मनडो चग वजावै
फागणियो ले साढी मुळकै घरती घन निपजाव
कोई वन घरती वटवावै
छिया छोड क आज तावडो पगा उभाणो आव
वीज मुळकसी कू पळ आसी खडचा ठूठ अव रोमी
मुड मुड सोच एक बात पण धरती नें सुख होमी
करसो हळ सू हाथ लगाव
छिया छोड के आज तावडो पगा उभाणो आवै
होणी वात करै नीसरमा निकमा ठाला खावै
इसै देस मे नई क्रान्ति क्यू धीमै धीमै नाव
म्हान सोच फिकर हो जाव
छिया छोडके आज तावडो पगा उभाणो आवै
खुरापात भी थोडा दिन तक आखमीचणी गेली
वज्जर छाती भरचो पसीनो करम कुदाळी लेली
हेलो मार मजूरी खावै
छिया छोडके आज तावडो पगा उभाणो आव
भीतर वैठी नई जोत नें फूक मतो वुझ जासी
आस अूजळी मारग जोवै पीळो सूरज आसी
झिलमिल किरणा हस हस गाव
छिया छोडके आज तावडो पगा उभाणो आव
पडचा धीगडा खुल्ला खाव चुगल चिलम में हासै
ठणछण घु श्रो मिलावै साफी पीले वो ही खामै
वचके नयो मिनख पण जावै
छिया छोडके आज तावडो पगा उभाणो आवै
आगळ खुली किंवाड उघाडा भीतर पडग्या धाडा
व्याई फाटै वो पग रोवै हासै आज धिंगाडा
पीडा आसू भर भर ल्यावै
छिया छोडके आज तावडो पगा उभाणो आवै

टट भिडावै लगडी चाला सीधो पग वढ जावै
हिम्मत बाधै हूस मोकळी निमळो नीच आवै
जुलमी जोर गुचळयो गावै

छिया छोडके आज तावडो पगा उभाणो आवै
माटी विछगी दीवो रसद्यो नीच धान धराद्यो
धी में भीजी जुग वाती नै जण जण माय जगाद्यो
कोई आगण वाच बुळावै

छिया छोडके आज तावडो पगा उभाणो आव
उजमण करै गरीबी धन रो आस सास पग लागी
धरती पाचो माडण लागी पीड देस री भागी
ऊजड जळ पीनै फळ खावै

छिया छोडके आज तावडो पगा उभाणो आवै
कोट कगूरा चढी जिंदगी भळ दीसै मतवाळी
धन लिछमी अब बीसो बाटै मीनत हाथा ताळी
कोई घर पर दियो जगावै

छिया छोडके आज तावडो पगा उभाणो आवै



पण उठ्यो भतूळो एक साथ, आधी मी भभकी चवरी मे
कुण जाणै हो दुखडो पडसी, वू पळ सी कवळी कवरी मे
गरजी घनघोर चारणी मा, भर ल्याई आसू नैणा मे
सुबकी मेली बुसक्या फाटी, कुरळाई दुख रै वैणा मे

'धिक्कार अरै पाबू कायर क्यू छनगे कुळ मे तू जायो
क्यू वचन दिया देवळदे न, क्यू केसर घोडी नै ल्यायो
जे माथै पर है आख देख, देवळ पर मौत सवार हुई
गउआ खोई, मरजाद गई, धिक्कार, देख मैं हार गई'

'तेरै सिरखा जद पूत जणधा, तो जणणी मन मे लाज मरी
तेरै सिरखा कायर कपूत, पैदा कर धरती भार मरी
तू कुळ मे काळो दाग हुयो, रजपूती रमगी फेरा मे
अब सेजा मे छिपकै सोज्या, बाजण दे पायल डेरा मे'

पाबू अकळ-चूकळ होग्या, पण पलक मारता समझ पडी
अगारा सी दीखण लागी, रतनाळी आख्या बडी-बडी
झटको दे गठजोडो खोल्यो, हथलेव रा प्रण तोड दियो
रो पडी जवानी फूट-फूट, जद हाथ हाथ न छोड दिया

कइया बोलै कुळवधू आज, कइया बोलै अणब्रसी नार
कइया बोलै चुडलो सुहाग, कइया नैन अवखिल्यो प्यार
आसू मे भीज्यो घूघटियो, मैंदी फीकी दीखण लागी
चवरी मे धुओ धुटण लाग्यो, जद आग काळजै तक आगी

घायल हिरणी सी तडफ उठी, अणजाण गऊ सी डकराई
मन मे बोली, 'भोळा वालम ! क्यू लगी प्रीत नै बिसराई
यू कहकै ऊचा हाथ करया, पाबू रो हिवडो भर आयो
चादणी अन्धेरी बण छागी, पण फर्ज सामणै घिर आयो

सत्र नैंणा फाट देखण लाग्या, केसर घोडी हीसण लागी
जद एड लगाई, रास पकड, तो भरपट बिजळी सी भागी
सखिया रा आंचळ भीज गया, हिचकी बधगी मायड रोई
बाबल री ठूठी दूखी आस, दीखण लागी खोई-खोई

जोडी बिछडी पण मिली नही, भावां मे भीजी रही रात
परणी रै हिवडै हूक उठी, कर्त्तव्य भुणी पण नही बात
दिवलै रो बाती धुळ रोई, सिंदूर मांग मे मुरझायो
सुख-सेज पडी सिसकण लागो, नणां मे समदर घिर आयो

धरती री प्रीत कवारी है, फेरा भी पड्या अधूरा है
पर अमर प्रीत रै नैणां मे, चवरी रा सुपना पूरा है



मोहनसिंध

जनम स्थान   बसी (मवाड)
जनम तिथि   आसाज वदी ११, सवत १९५६
पिताजी रो नाव   श्री गोविंदसिंहजी

कविराव मोहनसिंघ प्रिथीराज चौहान रा सूरमा सावत पज्जूणराय अर मलयसिंघ बछावा रै राजकविया री वस परपरा मे सू हा। आपरी सिक्षा दीक्षा म उदयपुर म चारण विद्वान फतेहकर्णजी ऊजळ र कनै होई। आप डिंगल अर पिंगळ दोनू भासावा रा पडित हा अर दोना मे ही रचनावा भी करता। आपरी बीस नडी छोटी-वडी रचनावा है जिका मे सू मृगया बावनी, रामशतक, भूपाल पच्चीसी, जममलाता री निसाणी, दुर्गापाठ अर दुर्गाबावनी राजस्थानी री रचनावा है अर सेस पिंगळ री। रसखान रा कवित्त अर विहारी सतसई रो राजस्थानी अनुवाद भी आप करचा है। उदयपुर रै शोधसस्थान मे आप प्राचीन राजस्थानी गीत भाग ३,४,७, ८,१०,११ अर १२ रो सपादन करचो है। सपादन रा और कई ग्रथा र अलावा 'प्रिथीराज रासो' पर आपरो काम घणै स्रम, अर पाडित्य री चीज है। राजस्थान री साहित्यिक परपरा रो आपरो ध्यान ऊचै दरजै रा हो। चारण कविया री परपरा म तो आज भी अनेक विद्वान मिल पण ब्रह्मभट्ट कविया री परपरा मे विरळा ही लोग मिलै। मोहनसिंघजी सू मिल'र उण जुगा पुराणी परपरा री याद ताजा करी जा सकै ही।



गीत

समरथ धणस्याम रुखाळो साचो
काचो, काचो कहै जिको
रहे सदा भगती-रस राचो
राचो उण रस जिको तिको
ध्रू प्रहलाद उबारया ध्रूवे
प्रीछत पोखत गरभ लरया
चळता वच्या वच्या मनखी रा
गज घटा तळ इण्ड ररया
इन्द्र कापता बिरज उबारयो
गौ बछड़ा रखवाळ गिरण
मीरा विख अम्रत कर पीधो
अहि रा नौसर हार वण
ग्राह ग्रहन्ता गयद वचायो
स्रवण परेवी टेर सुणी
बाज पारधी सग विणास्या
जम मुख जाता ररया जणी
चौ कानी आपद द्रग चौधे
हरिणी हरि रो नाम रट्यो
वाधक घातक सभी विलाया
कहता पहली कस्ट कट्यो
सुमरर्यां सजग सामनै सो की
भोळा रो भगवान धणी
वुद्ध महान वचाया ज्यू ही
दूध मुहानै ररयो वणी

प्रभु प्रभुता रो परचो दीधो,
बिसरा किम अहसान वडो
आगै पाछै ऊभा पडिया
वीच बचावण हार खडो
भगत वछळता धन-धन भगती
हरि पातल रो हिए धरो
आरया देखी असत न होवै
खरा हेत भगवत खरो



दूहा

दुरगा सू वाध्यो वयर, जसवत मार जदीह
ओरग वेरो खोदियो, दिल्ली री डहळीह
सेल घमोडा घमघमै, घुक न मन मे घराह
पोड पमगा धमधम, वाह दुरग्गा वाह
दिल्लो रा भूभाग पर, वहता वाढाळीह
भली वजाई करणवत, हेकरण हय ताळीह
पळ गिद्धा रत जोगण्या, हाड भखै सिगाळ
वाग फळेजो, आसयत, रचियो भोजन साळ
सिधू राग सुहावणा, तत्री धनु टकार
रुड नचै, राठोड द्रुग, यू माण त्योहार
वमत मनाई आसवत, हय भल्लै वाणास
रण मे सोणित सू रगै, पिसुणा किया पनास
भीसण ग्रीसम सूर ह्वै, प्रघळ तेज छित छाय
दुरगै विन पाणी किया, तुरक-तडागा ताय
दळ-वादळ त्रिच वोजुळा, ग्रमकै वीजळियाह
दुरगो पावस ज्यू सजै, वहवै रत थळियाह
सरद चद सू तू सरै, आथ्या ही उदियोह
यस उजवाळो आमवत, मुदिया नह-मुदियोह
भिड दुरगो मैमत भड, हद छाई हेमत
कपाणी केव्या चढी, थरथरता रद-पत
खाडाहळ खाडा करै, रगता पिचरगे
रूडी विध फागा रमै, दुरगो मेरगे

△

रघुराजसिंघ हाडा

जनम स्थान	चमलासा (खानपुर झालावाड़ राजस्थान)
जनम तिथि	३१ माच सन १९३४ ई०
पिताजी रो नाव	महाराजा सकरसिंघजी हाडा

राजस्थानी भासा रा दिन भलेरा समझणा चाहीजै के रघुराजसिंघ हाडा जिसा मनमोवणा कवि तलवार रा धणी बणता–बणता कलम रा धणी बणग्या, भवानी री ज बोलता बोलता सुरसत रा गीत गावै लागा। छै बरस री काची उमर मे ही जिण नै फौजी स्कूल मे भरती करा दियो जावै उणरा जीवण वखत री फेरबदळ रै साथै क्या पसवाडो फेर'र कवि रूप मे प्रगटै या रघुराजसिंघ री आपबीती बात है। गावा म समाज सिक्षा रो भार ले'र उणनै भली भात निभावण वाळा रघुराजसिंघ सिक्षा रै विकास रै साथ-साथै आप री जादुभरी कवितावा सू लोगा रा हिवडा रो विकास भी करै। हाडौती रै गावा म हजारा लोग आप र गीता न सुण सुण'र प्रेरणा लेवै। देस प्रेम अर निर्माण रै अलावा लोक सिणगार भी आपरो प्यारो विसय है। बाळपण रै दुख दरद री याद आज भी आपरै गीता मे आसू बण टळक, जिण नै सुण'र भावुक लोगा रै काळज टीस उठ। आज रै राजस्थानी मच पर रघुराजसिंघ हाडा रो नाव ताळिया री गडगडाहट मे गूजै। 'हरदोळ' अर 'वामण' आपर राजस्थानी गीता री अणछपी पोथिया रा नाव है। छप्योडी पोथिया 'अण वाच्या आखर' 'घूघरा' अर 'फूल केसूला फूल' नाव री है।



गीत

घान ऊग्यो धरती पै हिवड़ै हासी कळी
काळा-काळा बादळ में गोरी गोरी बीजळी
कण-कण को रूप बढ्यो, हेताळू भाव बढ्यो
चोमेरू चाव चढ्यो रे
सतरंग्या धनक चढ्यो, इन्दर जग जीत चढ्यो
कंठा सूं गीत कढ्यो रे
हरियाळा घूंघट में मारी सरम की
धरती आंखड़िया मीचली
काळा काळा बादळ मे गोरी गोरी बीजळी
सेळी सी बाळ बागी, आगणा उमग जागी
काठळ छै रंगराती रे
पी पी की धुन लागी, जादू सो ढळकाती
काळजिये कुण आगी रे
छम छम छम छमक छमक ढोलकड़ी बाजी
पायलड़ी छम छम की चीतली
काळा काळा बादळमे गोरी गोरी बीजळी
खेता की मेर हसी, बरखा उगेर हसी
गोरी मुख फेर हसी रे
पुरवाई प्राण भरी माटी वरदान भरी
महनत का मान भरी रे
म्हानें पसीना का बीजा दिया अर
मोत्या की खेती खींचली
काळा काळा बादळ मे गोरी गोरी बीजळी



गीत

रात कर रखवाळी, काटै परभात रे
चदा कै खेत खडी तारा की साख रे

बादळ मे रग ढुळै जळ जावै रूप रे
सूरज की जीव बळ धरती ले धूप रे
कुण सेजा माण रही, कुण को सुहाग रे
चदा क खेत०

हीरा की खान खुदै रह जावै धूळ रे
माटी को प्राण पी'र हासै छै फूल रे
जग भर नै जोत मिलै दीपक नै राख रे
चदा कै खेत०

मन कुण पै वार दियो, तन कुण कै हाथ रे
कोई को पळ पळ छै, कोई की रात रे
हथळेवै चेक दियो मेहदी को दाग रे
रात करै रखवाळी, काटै परभात रे
चदा कै खेत खडी तारा की साख रे



फागण आयो रे

दर्या मे मोती आरया, धरती न केसा सारया
सुनैरी चूदडी रे धूघरा सण वाज्या
वेला कै होदै बायरो मचोला ल्यायो रे

फागण आयो रे

पणघट प रग छायो, गीता मे चग आयो
म्हू वीत्या दिन भूल्यो, रसियो झूम गायो
सरसू पै म्हार लेखू, धणू सोनू छायो रे

फागण आयो रे

गोईरै बैठी गाया, फागण गाती वाया
सुहाणी धणी लागै, कोयल बोल टाया
सकुळ आवो फूल्यो, भीणी गध ल्यायो रे

फागण आयो रे

कण-कण फडक छ, रे डोडया तडकै छ
अै सीळी सीळी राता, पानडा खडक छ
मरोडा खाती मचली, उमगा ल्यायो रे

फागण आयो रे



रतनलाल दाधीच

जनम-स्थान बीकानेर
जनम सवत १९८९ वि०

राजस्थानी भासा रा थोडा ही कवि इसा है जिका सस्कृत साहित रो कायदै मुजब अध्ययन करयो होवे । रतनलालजा नै ओ सोभाग मिल्यो है । व आज भी सस्कृत महाविद्यालय रा अध्यापक है । 'साडी के छोर' नाव सू आपरी एक पोथी हिन्दी म छपी है । राजस्थानी मे आप फुटकर गीत लिख्या है जिका री बानगी अठै दी है । सस्कृत साहित री गम्भीरता अर सजावट री छाप आपरी रचनावा मे उतर आई है ।

दीप सिखा कैवै है

नभ र आचळ मे
लुळ झूम-झूम
दो च्यार वेर
तम री छाती चीर
दामणी फेर
कळायण मे रवै है
मिल जावै पथ
काटा रो पथ
उतरयो सो मन
वढता सा डग
पलका रो घरण-बोझ
वेदना सवै है
सुख रो अतर
दुख रो अतर
भ्रमै काळ रो
चक्र निरतर
काळी राता री, भोर
कथा स्वय कैवै है
तडप री, अलवेली सी वात
प्रीत री तरसाणै री जात
पुसप भवरा रा आसू पी
खिलावै अपणो सुदर गात
भवरा मधु तरसावै जी
प्रीत करुणा मे बैवै है

थिर सत्ता

अवर ! ऊभो ताक, पखेरू उडता रहसी

लह लह जासी खेत, कूपळा आसी जासी
उजड्या रहसी माळ, पानड्या झड़ती जासी
गुडता रहसी चक्र, जमाना पलटा खासी
पण भावा रा पाल, वायरो भरता रहसी
अवर ऊभो ताक, पखेरू उडता रहसी

खिलता रहसी फूल, कळ्या झड जासी कोरी
कदे भतूळ्या वड, मलय री ठंडी मोरी
घिरसी काळी रात, चचळा कामण गोरी
पण, पापा रा सदा वळीता वळता रहसी
अवर ऊभा ताक, पखेरू उडता रहसी

कदे लेखणी मद, कदे तूफान मचासी
कदे कलपना साच-झूठ मे गूथी जासी
आदरसा रा कदे पुजारी ठोकर खासी
दिव रा वोझल वाट रात सू लुळता रहसी
अवर ऊभो ताक, पखेरू उडता रहसी

जीवण होसी तग, काळ री खिडक्या खुलसी
धधकैला वै कुण्ड—जीवरी सासा ढळसी
घण-विध होसी रोस, उडतो पाखा वळसी
अवर ऊभो ताक, पखेरू उडता रहसी

Δ

राजश्री 'साधना'

जनम-स्थान कोटा
उमर बरस ५१ रै नेडी
पिताजी रो नांव श्री जोरावरसिंघजी

राजस्थानी साहित्य अर राजनीत रा मोटा पण्डित अर देस रा नामी क्रान्तिकारी राजस्थान-केसरी बारठ केसरी सिंघ रो नाव किण सू छानो है। साधनाजी बारठजी रा भाई श्री जोरावरसिंघ री बेटी है। आपरा पति श्री फतहसिंघजी मानव' राजस्थान राज रा मोटा पदाधिकारी अर घणी साहित्यिक रुचि रा मिनख है। दोनू पति-पत्नी साहित्य री चरचा म घणो रस लवै। साधनाजी र जीवण पर बारठ केसरीसिंघजी रै ऊजळै चरित रो पूरा असर पडयो है। टाबरपणे सू ही आप बारठजा र कनै रह्या जिक सू दस प्रेम भगवान री भगती अर साहित्य-रचना रा सस्कार आपन मिल्या। वीर अर सात रस म आपरो मन घणो रमै। आप सात रस रा अनेक पद बणाया है। आपरा पद राजस्थानी महिला समाज म मीरा अर सम्मानबाई री परम्परा न निभावण रो काम करै।



पद

कान्हजी किण विध अळगी होऊ
पलका वाट बुहारू, आमूडा आगणियो धोऊ
सावळ पळ भर दरस दिखाओ नैणा दीपक जोऊ—कान्हजी०
मारगियो अवडो रे मोहन, रैण अन्धरी थाय
जग-काटो भारी विच माहे, म्हासू लघ्यो न जाय
या विन दुखडा रो मुख जोऊ—कान्हजी०
पग पावडिया हाथ विछाऊ, हाथा ऊपर फूल
धीमो धीमो हाल वाळूडा, चुभसी रेखा-फूल
चिन्ह-चरणा री माळा पोऊ—कान्हजी०
थार विन जिवडो नह रहसो, जासी पिंजर तोड
लोय समासी, ढोल न लासी, वैठै नी मुख मोड
प्रेम री अमर वेल वोऊ—कान्हजी०

△

कवित्त

मखमल जाण सूतो रह्यो पीवण रो सिराणो देय
विस री उसासा, मधु मान, मन खाई है
गमायी प्रभुताई सारी मोह री पिटारी माह
गई मति मारी, भारी आतमा भुलाई है
सोनै री कटारी वणा, साहणी सुहावणी-सी
आप रै ही हाथ आप हिया माह खायी है
अर मतिमद नर कडो प्रतिवध थारो
जाणतो अजाण मणि हाथ सू गमाई है
कुणसो मुकाम वन धाम देह गेह थारो
नेह बाधि फूस री पिटारी माहि सूनो है
ठेल-ठेल पेल रह्यो, जीवण अमोल दिन
ममता री घाणी रा जुवाडा माहि जूतो है
आपो खोय आप लखि, टळ ज्यू चौरासी लख
वापो भूल वठ्यो, अध पूत थू कपूतो है
वेळा है अज भी चेत खेत सूख रेत भयी
साझ पड्या मौत रा करा र माहि नूतो है



पद

नन्दलाल ! आवो तो जोऊ थारी वाटडी
सोना रा रूपा-रा पात्र म्हारै है नही रे कान्हा
म्हारै तो स्याम ! एक चदण-री काठडी
मैं तो हू गरीब घणा, दीन औ मलीन प्रभु !
जीमो तो स्याम ! म्हारै बाजरी री घाटडी
दिल री पुकार सुण आवो जे सावरा !
भूलण मे प्रेम-डोर नैणा हदी पाटडी
'साधन' सदा सभागी नित ही पुकारै कान्हा !
मिलवा नै आज्यो स्याम ! जमना री घाटडी

पद

जागता पुरख न आदेस
माई ! असो लिया रे जोगिया भेस
माळा नही, कमडळ नाही, न है झोळी हाथ
गयी नहिं वन मे, गयी नहिं तीरथ, जग-सू नवायो है माथ
काया मे बसियो है भवर अलोभी, इणसू ही तजियो यो देस
कुण प्राणी सूतो, कुण प्राणी जागै
सरवर सू पछी प्यासो ई भागै
यो जग सपनो, साचो सो लागै
जाळ फस्यो पछी भागण लागै
दीसत आधो हुयो रे वटोही, अैसी या माया विसेस
तन रग दीनो, मन रग दीनो
रग दीनो सील-सतोस
जलम-जलम रा करम रम्या मे
जव लग रयो कुछ होस
अव तो सुख रै ही 'साधन' सागर कट गया सरव कळेस

Δ

डा० रामदेव आचार्य

जनम स्थान बीकानेर

जनम तिथि १ मार्च सन १९२५ ई०

डा० रामदेवजी कई बरसा सू स्कूल कालेज री अध्यापकी करता आया है। सभी भात री साहित्यिक रचनावा मे आपरी रुचि है पण कविता करणै म आपरो मन वधू विसेस रम। समाज री कुरीतिया अर अधविसवासा पर करडी चोट करणवाळी आपरी कई कवितावा न समाज रो भला चावणिया सगळा मिनख सराहसी इण मे मीन मेख नी। ठेठ सू सहरी वातावरण मे रहण र कारण आपरी रचनावा रो दायरो भी सहरी ही है। समाज रै सोसका रा काळा कारनामा रामदेवजी घणा नेडै सू देख्या होसी जिक सू ही घण दरद सू दात पीस'र आप उणा रो भडाफोड करयो है। आजकाल आप हिन्दी मे नई कविता रै मरम न समझणिया चोटी रा विद्वाना म गिणीज। आपरो आलोचक रूप भी घणो सराहीज। हिन्दी कानी बिसेस झुकाव रहणै सू आपरी घणखरी रचनावा हिन्दी मे ही मिल। आप अग्रेजी रा प्राध्यापक है।



राजस्थानी नारी

अबै तू छोड पुराणी राग
नींद नै त्याग
धरा संगीत सुणावै री
अबै तू देख जगत री नार
मिनख रै लार
कदम सू कदम मिलावै री
अबै तू जाग

बणी बच्चा री सिरफ मसीन
हिय में भरयो गुलाम सभाव
कियो थारै सायै हर रोज
मिनख री पसुता मनबहलाव
घू घटो तोड, लाज नै छोड
चूडिया फोड
समै अब तन जगाव री
अबै तू जाग

करै मत चादडलै सू प्यार
सुणावै मत कुरजा रा गीत
भवर जद सपनै मे विलमाय
करै मत नैणा री परतीत
प्यार रा फूल बण्या है सूळ,
करै मत भूल
तन कविता समझावै री
अब तू जाग

आख सू आसूडा ढळकाय
मिटावै मत काजळ री रेख
अरी भीज्या नैणा मे आज
दुखो खुद री परछाई देख

प्राण में घुटन लिया तू खडी
पगां मे पडी-
—पागडी सी पछतावै री
अबै तू जाग

जेवरा रै बोझै नै लाद
घरै मत अब गुड्डी रो रूप
देख पूरब मे निकळ्यो आज
लिया सूरज चमकीली धूप
अळै ले हाथ, किरण धर माथ
देस रै साथ
जिन्दगी तन बुलाव री
अब तू जाग



सोनै रो सूरज ऊगैलो

चादो री किरत्या चमकैली
सोनै रो सूरज ऊगैलो

आ धरती कुम्भीपाक बणी
राखसजूणी री घात अठै
है तपै तावडा जुल्मा रा
सपना री ठंडी रात कठै
उण महला पर जमराज खड्या
भुज-दण्ड लिया व्यापारा रा
आसू री वैतरणी वैवै
है खेत बिछ्या अगारा रा

पीढी-पीढी पथ पार कियो
काटा, सापा सू लड्या घणा
पण बडी दूर सू चाल्योडो
अब मिनख सरग मे पूगैलो
चादो री किरत्या चमकैली
सोन रो सूरज ऊगैलो

मत करो गरव ऊचपण रो
ओ गरव-हिमाळो गळ ज्यासी
मत बणो समुदर सेखी रा
सै वडवानळ मे जळ ज्यासी
मत उडो लोभ री पाख्या पर
गिगनार तळै मे झुक ज्यासी
मत हसो, हसी उण दिन होसी
जद चलती चक्की रुक ज्यासी
धोखा-धडी, मतलब-फरेब
छळ-कपट-पोल री गाठ खुली
अब वडी दूर सू चाल्योडो

ओ मिनख जुलम सूं जूभंलो
चादी री किरत्या चमकली
सोन रो सूरज ऊगलो

जिन पिया खून इण माटी रो
व माटी मे मिल जावला
जिण लूंटो धरती माता न
वैं धरती मे धस जावंला

सोन-चादी सूं न्हायोडा
दूधा-पूता सूं धायोडा
कद तक अन्याय मचावंला
अब इसो वायरो वाज है
जिण कोट बणाया मुरदा पर
उण नैं मुरदा खा जावंला

भलाड बणा दो जीवण नैं
या लाय लगा दो वाडी मे
पण वडी दूर सूं चाल्योडो
अब मिनख फूल न सूंघलो
चादी री किरत्या चमकली
सोन रो सूरज ऊगलो



नित राजस्थान जियो

सुख जियो हजारा बरस, खुसी सू राजस्थान जियो
सब जियो देस रा मिनख और भावी सतान जियो

आ जमी जियो, आकास जियो, अै दरखत-रूख जियो
मन मे धोरा री धरती पर मरणं री भूख जियो
नित छाछ जियो, नित जिया वाजरी, भुक-भुक खेत जियो
ऊठा-वैला रै हेठ म्हारी चम-चम रेत जियो

कुमकुम-केसर रै रग मे डूबी भाऊ-बीज जियो
रूखा पर भूला मे बैठी सावण री तीज जियो
नित माघ-फाग र म्हीना मे होळी री राग जियो
जुग जियो पोमचो मरवण रो, ढोलै री पाग जियो

भूरोडै भुरजा मे मूमल री रूठी याद जियो
गळिया मे गिरधर नै जोवै, मीरा री साध जियो
म्हारै आलीजै रो अलबेलो ऊचो सीस जियो
ओठीडै सू ठगियोडी पणियारी री रीस जियो

राखी-पूनम नै भाई-बैना री नित प्रीत जियो
नित सास-बवू, देवर-भाभी नणदल रा गीत जियो
नित लहगै और ओढणै पर मडियोडा मोर जियो
म्हार बीकाणै रै मेळै री नित गणगोर जियो

मारू वाजै रै साथ-साथ, कडखै री तान जियो
हलदीघाटी मे मरणो माडचो, वै इसान जियो
मूछा मरोडती रोबीली रजपूती सान जियो
जौहर री लपटा मे जळती सतिया री आन जियो

जिण पियो खून रो लाल कसूंबो, वह हथियार जियो
जिण आजादी न जीती राखी वा तलवार जियो
चित्तौड़ जियो, मेवाड़ जियो, गोरा री खड्ग जियो
जुग जाधाणे रो किलो आर जयपुर री सड़क जियो

नित छल-भवर र ढोलक री धीमी सी धमक जियो
नित डफा-रम्मना मे रमती सस्कृति री चमक जियो
म्हारी पीढी रै लोग-लुगाया रा अरमान जियो
इण दुखी देस रे आसू मे जग री मुसकान जियो

नित फूला सिरसा दिवस और कळिया सी रात जियो
म्हारी जनता मे नव नव जीवण री बात जियो
वा याद पुराणी जिया और आगै री आस जियो
भारत रै आभै मे गरि सा म्हारा इतिहास जियो

सुख जियो हजारा वरस खुसी सू राजस्थान जियो
सब जियो देस रा मिनख और भावी सतान जियो



स्व० रामनाथ व्यास 'परिकर'

जनम स्थान　बीकानेर
जनम तिथि　१५ मई सन १६२६ ई०
पिताजी रो नाव　श्री बालमुकन्दजी व्यास

स्व० रामनाथजी र साहित्य रा प्रेरणा स्रोत घणा ऊंडो अर प्रसिद्ध है। राजस्थानी जागरण रा सगळा सूं मोटा महारथी स्वर्गीय श्री सूरजकरणजी पारीक रा आप भतीजा हा। पारीकजी री चौमुखी प्रतिभा, अर कविता, कहाणी नाटक अर अनुसन्धान र विसया पर लिखी वा री अनेक पोथिया रै प्रकास में परिकरजी र हिय रो कवळ खिल्या। कालेज री पढाई खतम करता करता राजस्थानी काव्य रचना री लगन आपरै मन म समागी ही। 'रणत भवर' हिवडै रा बोल', 'जीवण जागे'—अ नाव है आपरी अणछपी काव्य री पोथिया रा। कवीन्द्र रवीन्द्र री गीताञ्जळी रै आपरै राजस्थानी अनुवाद री तारीफ घणा विदवाना करी है। राजस्थानी संस्कृति री ऊंची परम्परा अर लोक जीवण री निस्छळता रो प्रभाव आपरी रचनावा मे भळक। आपर सब्दा मे घणी प्रोढता अर विचारा म घणी गहराई है। 'मनवार' नाव सू आप री रचनावा रो सग्र छप्याडो है।

मास्को (रूस) मे रहता आप राजस्थानी र प्रचार प्रसार रो घणो काम करयो अर बठै ओपरी धरती मे कम उमर मे ही प्राण दे दिया।



कोट-दरवाजो

याद घणो ग्रावै है
परदेसा बठ्या नै
दरवाजो कोट रो
टावरपण सूं जाणू
एक वडो, दो छोटा
दरवाजा पचाणू
पण, कीया ?
एक वार—
वाई री गोदी में
मोदमगन जद चाल्यो
सामी ग्रातो कतार
ऊंटा री जायी जद
मन भायो त्रराळो
नखराळो टोडियो।
गळ में घूघरा
गणमणगण गूंज हा
मन म्हारो नाच्यो हो
चाव घणो चित छायो।
वाई पण डरती सी
पसवाडै दास पर
लेय मनै ऊभी ही
टोडियो ह। देख

मनडै रो म्हारो जद
श्राय थम्यो सामो हो
हू तो, पण भोळो हा
गळै रो घूघरो
लेय लियो हाथा मे
वजावण लाग्यो वौ
होट श्रड्यो माथै रै--
वाई जद किरळाई
श्रटक्या सै वैतोडा
श्रासपास, टोड फिर
मिलणै मे श्रडास
हू पण, वाई नै
विरळाती जोय जोय
कूकण नै लाग्यो हो
लोगा दी लाठी री
टोड रै काना मे
चमक-चमक
उछळ-उछळ
मिळवा नै म्हारै सू
टोडियो दोड-दोड
श्रातो, पण लोग
हुया गूगा सा
नी समझ्या
म्हारी मनवारा।
टोड रै गळ घूघरा सू
रमण री वात घणी
हाल मनै चेतै है

जदे कदे देखू इण
दरवाजै कानी हू,
वारवार दिरस वो
दीसै अर मन म्हारो
नाच है।
लोगा री गूग मायै
वाई री चीख सागै
टोडियै रो प्यार म्हारो
नस नस मे व्यापै है
याद घणो आवै है,
परदेसा बैठा नैं
दरवाजो कोट रो।



सरद रो अभिसार

जद सरद सोवणो चादडलो ले मुस्कावै
रातडली हस-हस उफण-उफण रै जावै है
ससार प्राण रो, जगमग-जगमग प्यार लिया
जद ल्हैर-ल्हैर पर जोबनियो लैरावै है

सीतळ किरणा री मधरी रसभीनी आभा
नित नभ रो नुवो-नुवो सिणगार सजावै है
उण काची-कवळी कळिया रा होठा माथै
वो प्रीत-नूवटो मुळकण भर मुस्कावै है

अळिया सू कळिया रूठ-रूठ मुखडा फोरै
ढोलै री मीठी मनवारा नै पावण नै
रुत री राणी सुकवार बणी ज्यू अलबेली
वा मन रो धन ले चली हिया बस जावण नै

हरियाळो-पीळो ओढ ओढणो रुत रूडी
इण जीवण रो वरदाण अमर पा जावै है
कण-कण मे मन रा भाव भरया सम्मोहन सू
वो उणमादी अभिसार लुटाया आवै है

वा धवळ-सेत-गिर री वावा मे उळझ्योडी
लीलै आमर री मेघपरी सरमावै है
अळसायै मधुबन-कुजा री कळिया हसती
इण नुवी बीनणी रो घूघट सिरकावै है

सित-मद-गुलावी मलय वायरो रै-रै भल
पिय-मिलण-सनेसो हाळै-होळै आ देवै

कुमळाई आसा रैं अटक्योडा प्राण मे
नवजोवण रो विसवास फेर पूगा देव

सूनो आभो सच्योडै इमरत-कळसैं सू
मन भकझोळै, आमीधारा वरसावैं है
जिण सू कुदरत रैं सुगणैं आगणियैं माथैं
रस भर जोवन रो नुवो रूप प्रगटावैं है

भर चाव नुवो, झाला देती वा मतवाळी
सिणगार सजाया अकनकवारी नाच है
रितराज सजन रैं काज, मान री मनवारा
ले सरद-कामणी नेव सनेसो वाचै है

, Δ-

मन-सूवटियो

सोनळ पींजर काया कळप
अंतर मे, आंसूडा टळकै
मधर बोल, मन मे बस जाय
रंग रूडो, तन कैद कराय
घणा गुणा, गुणवान गळै
तानसेन, डोढिया पळै
तानी रोवै, वन-वन माय
जीव अळूझै, अंतरदाय
पांख खुलै क्द, पर आधीन
कुण बाटै दुख, दीन मलीन
बूझै कुण, मनडै री बात
सूझै सगळा, जोवण स्वाद
जाणै सदा, परायो भेद
किण सू कैवै मन रो खेद
कपट करै, चित राखै गोय
पिरगट कदे, करी ना राय
म्हारो मन, पण थारै मान
पड्यो कैद मे, जगरी जाण
मन-सूवटिया, म्हारी मान
दुखडो रो रो, नेक बखाण
महलायत रो हियो पसीजै
पींजर खोल्या, जीव पतीज
जे उठसी, हिवडै मे हूक
कुण सिल छाती, करसी चूक
सुर मे सगळा प्राण जगाय
कर ऋदण, जन रै मन माय
कळप-कळप, दे जगत रुवाय
जिणसू मुगत हुवै आ काय
फेर हरख सू, उड वन माय
मगन सूवटी-सुरता भाय

रामसिंघ सोलंकी

जनम स्थान भीलवाडा
जनम तिथि १७ अगस्त सन १९२४ ई०
पिताजी रो नाव ठा० श्री मदनसिंघजी

ठाकुर रामसिंघ सोलंकी आज री राजस्थानी रा उण विरळा लेखका मे सू है जिका प्रकासण सू दूर रया। कई वरस पैला स्कूल मे पढता थका जिण काव्य रचना री ला लागी वा कालेज जीवण म तो जागती रयी ही, पण आज तक अध्यापक जीवण मे भी साथ निभा रयी है। वीर, करुण अर हास्य रस री रचनावा आप कर। वीर रस रा सकडा दूहा आप रा बणायाडा है जिका डिंगळ साहित रा चोखा-चोखा दूहा सू टक्कर लेव। 'हेमन्त मालती' अर 'बाळक' नाव रा दो खण्ड काव्य भी आप लिख्या है जिका म सू दो बानग्या अठ दी है। रामसिंघ री भासा अर भावा पर डिंगळ री परपरा अर सस्कृत र ग्यान रो पूरो प्रभाव है। बाळक' नाव रै काव्य मे सिसु स्नेह रा जिको विसय आप चुण्या है बो आपर हिरद रा भावुकता रो परचो देव। आज कितक कवि है जिका इसा निरमळ अर बेलाग विसया पर कलम चलाव ?



दूहा

बाप कट्यो, मायड वळी, घर सूनो जाणीह
पूत अगूठो चूख नैं, राखै निगराणीह

पिउ किण विध पूजन करू, तन-तन खग टीकोह
केसर रग राचै नहीं, कूकू रग फीकोह

सुरपुर तक निभ जावसी, या जोडी या प्रीत
सखी पीव रै देसडै, सग बळवा री रीत

सुत गोदी आवण चह्यो, मा जद बैठी आग
दाग न दे कुळ पूत वळ, विण खाया सिर खाग

सुणियो पिउ विण सिर लडै, जा आऊ झट भाख
दोय घडी रै वासतै, पछी दे दे पाख

हू चाली झट आवज्यो, वू मत करज्यो देर
खूटी पर कूची पडी, कोठा मे नारेळ



हेमंत मालती रा सोरठा

रूडी विस री रीत, पीता ही पड जावणो
पण पापण मधु प्रीत, घुट-घुट मरणो मालती

नह गेला नह घाट, नह खाणा नह पीवणा
पसुग्रा सू नपराट, मनख जमारो मालती

वन रा हाय विहग, उड-उड भी घर बावडे
हू नभ ऊटो पतग, मग डूली मधु मालती

नयण घींव, उर ग्राग, मुख हासी, मन रोवणा
रोज रोज ई राग, म्हासू निभै न मालती

दरद न होसी दूर, यो नह कर, पद, माथ रो
हिवडा रो नासूर, मरिया मिटसी मालती

मद पीधा मन मार, विस पीधा था विसरवा
पापण प्रीत खुमार, मिटी न अे मधु मालती

नह बचपण री वेळ, नह मोट्यारा डोकरा
थारा म्हारा मेळ, मरिया पाछ मालती

पग-पग मचियो कीच, झिरमिर बरस बादळी
बहता सावण बीच, मन मुरझावै मालती

∆

बालक री मुलकाण

यो सुरभि पळक प्रत्यक्ष अरे
बाळक रै अधरा लियो रूप
यो देव-वना तरु-तरु पराग
घरती पै झरियो रे अनूप

या आज अचाणक फूट-फूट
सिव-सिर सू ढुळकी गगधार
जग-अघ सब गळ-गळ ह्विया नास
भव-सागर जण-जण कियो पार

या भाग अमावस गई फाट
ऊसा रो आचळ गयो छूट
तारा सू तारै करी बात
दुख भो रो सपनो गयो टूट

मनु रैण गुवारै रग आज
जिण तिण रा नैणा रया खीच
गौरी कर सकर चढ्या फूल
स्रद्धानत सिर अर नयण मीच
आल्या रै आगै गई दीख
मायड रै उर री थिरक एक
कामण मद री मनवार पहल
प्याल सू छळको भरी नेक

यो पळक झाकियो चाद आज
बादळ र पडद बीज रात
तरसै जिण हिन्दू मुसळमान
दरसण नू जग री जात-जात

बरसा-बरसा तक मून लेय
अर जोग-जोग रा जोर मार
मुनि अरे अचाणक कियो आज
उण अलख जोत साक्षात्कार

या एक हवा री लहर दौड
पूरव सू पच्छम गई जेम
या एक लीरकी रेसम री
बस लहर-लहर सी गई तेम

या तणिक हवा री हळचळ मृ
इक ओस बूंद ज्यू कमळ पात
ढुळकी रे ढुळकी ठमी-ठमी
रमगी रे रमगी पूर्ण पात

इण एक मुळक मे मधुर प्यार
धरती पै परिया रा विहार
या धवळ चादणी धार अरे
उर-उर मे मिळ-मिळ सुधा सार

इण एक मुळक प्रभु महासान
इण एक मुळक ब्रह्माड ज्ञान
इण एक मुळक जग प्राणदान
इण एक मुळक निसि मे विहान

इण एक मुळक मे राज पाट
सुख अर सपत रा सहस दान
इण एक मुळक सब ठाट बाट
सासण सत्ता रा महामान

इण एक मुळक मे वज्रपात
जग छळ छदा रा निपट नास
इण एक मुळक ब्रह्मास्त्र जोग
रे कपट भूठ रा महाह्रास

इण एक मुळक भूखड डोल
उर-उर र ओगण करै ध्वस
इण एक मुळक विप्ळव अनेक
पर दुख दरदा रा मिट अस

इण एक मुळक मे सहस नाग
फुफकार कर रया है कराळ
या धूजै धग-धग मौत आज
रग-रग कप रे महाकाळ

इण एक मुळक मे विजय घोस
जीवण री सत्ता रो अणत
मिरतू री मिरतू नास-नास
रे ह्लास-ह्लास रा धनु तणत

इण एक मुळक वळहीन होय
बम रॉकिट रा सब कळ विधान
कटु माणस अतर जाय टूट
रागस उर लागै बाण-बाण

यै खड खड विध्वस घोर
रे महाजुद्ध निज व्यग हास
या देस-देस री धाक खोण
वाळक रे टळमळ मधुर हास

जीवण री सत्ता मिटै किया
यै किया रुकै रे सुघड सास
परळै रा परळै गया आय
पण अमर-अमर यै मधुर हास



रावत सारस्वत

जनम-स्थान	चूरू (राजस्थान)
जनम तिथि	पोह सुदी पून्यू संवत १९७६ वि०
पिताजी रो नाव	श्री हनुमानप्रसाद सारस्वत

आज सू कोई ४१ बरस पैला रतनगढ रिसिकुल रा एक स्नातक बीकानेर राज रा सहरा में काव्य रचना री जोत जगाई। जठै जठै वै अध्यापक बण'र गया अथवा सम्मेलन या ओर किणी काम सू गया बठ-बठ कविता मे रुचि राखण हाळा लोगा री पगत री पगत खडी हुगी। वो बखत हो हिन्दी रै छायावाद री जवानी रा। छायावाद री उण लहर न उण बखत रै बीकानेर मे विस्तार देणै रो काम उणा रै हाथा पूरो हुया। उणा रो नाव है श्रीरामनिवास हारीत। हारीतजी री प्रेरणा सू जिका लोग कविता करणो सीख्या अर आग ताई उण सीख न निभा पाया उणा मे सू एक रावतजी भी हा।

राजस्थानी साहित्य कानी आपरी रुचि रो स्रेय भी भाग जोग सू हारीतजी नै ही है। बीकानेर राज रै जूनै महला मे अनूप सस्कृत लाइब्रेरी नाव रो एक घणो मोटो अर महत्वपूर्ण हस्तलिखित ग्रन्था रो सग्रह हो। हारीतजी उण रा पुस्तकाध्यक्ष हा। कालेज छोडता परात हारीतजी ही वान उण पुस्तकालय म आपरा सहायक बणा'र रखवा लिया जठै चार बरस राजस्थानी रा हजारा ग्रथा री छाणबीण करणै रो मौको मिल्यो। उण बखत सू ही रावतजी राजस्थानी री बहुविध प्रवृत्तिया मे रस लेवण लाग्या। आपरो प्रिय विसय तो अनुसधान ही है पण कवितावा अर उत्तम काव्या रै अनुवाद म भी पूरी रुचि राख। 'मरुवाणी' नाव सू छपणहाळै एक माहवारी छाप रा सपादक भी आप है। आपरा सपादित ग्रथ दस सू भी वेसी है।

राजपूत रो डावड़ो

मा ! मैं रणखेता जास्यूं

वाबोसा रो वखतर ल्याद्यो
वो खूनो खाडो मगवाद्यो
म्हार घुडलै जीन कसाद्यो
रजपूती रा ठाठ सजाद्यो

अब लडबा मरवा जास्यू ,मा!
खूना रा समद वहास्यू , मा !
मैं रणखेता जास्यू ।

बखतर यो बादळ बण ज्यासी
यो खाण्डो बीजळ चमकासी
पून-वेग म्हारो घुडलो जासी

बस सरब नास कर ग्रास्यू ,मा!
जीवण रो फळजद पास्यूं ,मा!
मैं रणखेता जास्यू ।

वहनड अकनकवार ! उतारो
ग्रारतडो रजवन्ती ! म्हारो
ग्रो रोळी री टीको थारो
लोही मागैला लाखा रो

टीकै री लाज रखास्यू , मा !
वहनड रो प्यार चुकास्यू ,मा!
मैं रणखेता जास्यू ।

Δ

जीवण दीप

जीवण रो दीप जळै
छोटी लोय लगन पण मोटी
धूंओ घण उगळै
गाव उजाळो घर अंधियाळो
आपणो आप जळै
जीवण रो दीप जळै
झिलमिल-झिलमिल बाती जळसी
तिल-तिल तेल बळै
हसतो जाग्या बुझसी रोतो
ज्यूं-ज्यूं रात ढळै
जीवण रो दीप जळै
माय जळै अर जळै बारणै
ऊपर, बीच, तळै
दीप जळै'र, जळाव दुनिया
ओ के प्यार पळै ?
जीवण रो दीप जळै
आयो सळभ प्रेम मदछकियो
मिलवा नै मचळै
ओ गला माटी रा बासण !
मिल भर बाथ गळै
जीवण रो दीप जळै
रस कस लुटग्यो ठाली ढोकर !
तेरा किया फळै
लाख जतन करले कोई, ना
विध रा लेख टळै
जीवण रो दीप जळै



ओ कुण लुक-छिप आवै

नण रिझावै, मन हुळसावै, रू आ रास रचाव
ओ कुण लुक छिप आवै

सोयी धरण जगावै, आगणिय हीगळू ढुळावै
पाख-पखेरू गीत गुवावै, किरणा नाच नचावै
साझ-गिगन मे राग-रगोली छिविया कुण चितरावै
दूधा धोई रातडली मे कुण इमरत बरसावै
ओ कुण लुक-छिप आव

सासा री सोरम सू भोळा बायरिया बहकाव
फूला फाग मचावै, हरिया बागा न महकाव
कळिया न इतराव, लोभी भवरा नै विलमावै
आवलिय री डाळ उणमणी कोयलडी कुहकाव
ओ कुण लुक-छिप आवै

काजळिया नणा री कोरा मे बठयो सरमाव
फूल गुलावी मुखडै पर क्यू लाज गुलाल लगाव
अगडाया सू छेडै, दरपण मे गुपचुप बतळाव
अ ची मेडी लाल पिलग रा सुपना मे भरमावै
ओ कुण लुक-छिप आवै



रेवतदान 'कल्पित'

जनम स्थान मथाणिया (जोधपुर)
जनम तिथि चत सुदी १ सवत १६८१ वि०
पिताजी रो नाव श्री भैरू दानजी

रेवतदान राजनीत रा खिलाडी अर कविता रा कारीगर है। राजस्थानी नैं मचा पर साबासी दिरावणवाळा कवियां मे आपरो नाव सिरै री पगत म है। आपरै सब्दा रो चुणाव घणो फूटरो अर भावा री मस्ता घणी मीठी है। सामतां अर साहूकारां सू चूस्योडा, करसा अर मजदूरा रै दरद सू छळकता आपरा गीता मे क्रांति रो जोसीलो सदेसो भरयोडो है। गावां अर खेता रै पिछोकड पर रच्योडा ऐ गीत साफ बतावै के गीतकार उण जीवण म रम्योडो है जिण री पैरवी वो खाली काव्य म ही नही पण राज री अदालता मे भी करै। कवि र जीवण रो एक दूसरो परख भी है जिण म वो मिनख अर कुदरत र सिणगार रा सरस अर सोवणा गीत झूम झूम'र गाया है। 'चेतमानखा' नाव री आपरी छप्योडी पोथी मे इण दोनू भाता रा गीत भेळा करया गया है। राजस्थानी न जे कदे इण री खायाडो आसण मिलसी ता रेवतदान जिसा कविया रा याद न सिरोपाव जरूर दिया जासी।



राजस्थानी

मान विना विलखो मन मार डौढ क्रोड कठा री वाणी

रातो रेत ग्रजळी ऊपर ग्रूडो निरमळ सीळो पाणी
रज रज मे सूरापण झलक सतिया रा साचो सहनाणी
घडती सुभट थकी वेमाता जणता काड किया छनाणी
ग्रगन झळा तरवारा न्हावण री वा जग मे ग्रमर कहाणी
(पण) मान विना विलखी मन मारै डौढ क्रोड कठा री वाणी

हालरियै हुलराव मायड लाड-कोड सू गावै लोरी
ग्रुचक पून पालण सूत्यो टूट पडै हीडै री डोरो
चढता कटक वजी रणभेरी तारण जाय दियो कवि तानो
मोड खोल गठजोडो खोल्यो पहर लियो केसरिया वानो
एकण छद ग्रलेखा माथा धड लडधड लोही लूहाणी
(पण) ग्राज रया रै राज ग्रडोली डौढ ग्रोड कठा री वाणी

इण भासा रै पाण 'चद' कवि रच्यो वीर छदा मे रासो
जे 'चौहाण' दाव नह चूकै पळट जाय पिरथी रो पासो
'पीथल' लिखी 'पतै' ने पाती सधी रो सदेसो कडो
ग्राखर वाच ग्रचभै राणो कायर रूप रयो नी नडो
कवि रा बोल काळजै चुभिया गणे मौत मौत नी जाणी
(पण) ग्राज लाज री वात देस मे निदरी जावै राजस्थानी



बिरखा-बीनणी

लूम-झूम मदमाती, मन विलमाती, सौ वळ खाती
गीत प्रीत रा गाती, हसती आवै बिरखा-बीनणी
चौमासै मे चवरी चढनै, सावण पूगी सासर
भरचै भादवै ढळी जवानी, आधी रैगी आस र
मन रो भेद लुकाती, नणा आसूडा ढळकाती
रिमझिम आवै बिरखा-बीनणी
ठुमक-ठुमक पग धरती, नखरो करती
हिवडो भरती, बीद-पगलिया धरती
छम-छम आव बिरखा-बीनणी
तीतरवरणी चूदडी न काजळिया री कार
प्रम-डोर म बधती आवै रूपाळी गणगोर
झूठी प्रीत जताती, भीण घूघट म सरमाती
ठगती आव बिरखा-बीनणी
घिर-घिर घूमर रमती, रुकती थमती
बीज चमकती, झब-झब पळका करतो
भवती आव बिरखा बीनणी
आ परदेसण पावणी जी, पुळ देख नी वेळा
आलीजा रै आगणै मे करै मना रा मेळा
झिरमिर गीत सुणाती, भोळ मनडै मे भरमाती
छळती आव बिरखा-बीनणी
लूम-झूम मदमाती, मन विलमाती, सौ वळ खाती
गीत प्रीत रा गाती, हसती आव बिरखा-बीनणी



रैवतसिंघ भाटी

जनम स्थान	नरवर (किसनगढ़—अजमेर)
जनम तिथि	कातिक बदी अमावस, सवत १९५६ वि०
पिताजी रो नाव	ठाकुर जोरसिंघजी भाटी

लफ्टिनेंट ठाकुर रैवतसिंघ भाटी न चारणा री सगत सू राजस्थानी काव्य रचना रो प्रसाद मिल्यो। सुरू मे आपरी रुचि व्रजभासा कानी ही जिकी म आप क्षत्रिय भजनावली, रामरहस्य गाहिल गौरव प्रकास, बीका चरित्र, जयमल चरित्र, लक्ष्मण विलास, छत्रसाल दसक अर चद्रसेन चरित्र नाव सू काव्य ग्रथ अर अनेक फुटकर रचनावा भी करी। डिंगळ मे आप चार हजार दूहा वीर रस रा लिख्या हा जिका मे सू छाट'र सात सौ दूहा री एक सतसई तैयार करी ही। रैवतसिंघजी री डिंगळ रचनावा पर पुराणा चारण कवियां री भासा अर भावा रो पूरो असर है, पण आप री भासा टकसाली अर प्रौढ है जिकी नोड कवियां म ही मिल। डिंगळ रा आपरो ग्यान घणो ऊ चा जाणा पडै। राव चद्रसेन पर आपरो एक काव्य छप्योडो है।



दूहा

नख डस डढ घर पचनख, दळण कटिण दताळ
घूस घूसक धीगडे, वणी धार धाराळ

पुळग चढर पाडोस पर, पीव पाण पडियाह
आनन मे अर-आगळ्या, घलसी घण घडियाह

दुभ्रळ दुरगा ददृणा, वद-वद सह खग-वार
की वीदळ विग्रह करै, हय-नाळ्या हथियार

देस केम देसोत दे, समझै रज लग साव
रोकण घर-अरणु रगत-हृत, पळ-पळ करै पळाव

पह-मह है न पताकणी, तस मे अस न तुखार
रुपै रढाळो रटक रण, हिय हिम्मत हथियार

परव हुत पडता भ्रूण पव, झपट छुरी ली झाल
कोसी दायण जद कढया, लोयण आसू लाल

थान उमरा सेज घर, वलकल वसण बणाय
सदीव देस-सुतनता, राख अडियल राय

भौण भुरज परखा भली, ठम गिरा न ठावाह
हेरो गढ कोटा हुवै, चौटा सह चावाह

वल पसु अन विवुधा तणा, चित्त न मरणो चाय
समर सगत रा वळ सवळ, सगत मरण सिधाय

किम हेली ! अवरा कर घर भीतर गुजार
छड रे मदगळ छेदता, लग आयो मद लार

हमल-हल्ल सुण हीण ग्वळ, पुळगा हुत पडियाह
हरि-हूकळ जण मुण हरी, गरटा हुत गुडियाह



लक्ष्मणसिंघ 'रसवंत'

जनम स्थान — जालसू (नागोर-राजस्थान)
जनम तिथि — १५ अप्रेल सन १९३३ ई०
पिताजी रो नाव — श्री किसनसिंघजी राठोड

लारला पच्चीस छब्बीस बरसा मे, राजस्थान राज रे एकीकरण रै बाद, रजवाडा री सीवा मिटता ही, अनेक कवि परगास्या। लक्ष्मणसिंघ भी इणी अरसै मे साहित्य म प्रवेस करयो। गाव र राजपूत परिवार रा सस्कार अर हिन्दी रो विसेस अध्ययन दोना रै मेळ सू राजस्थानी काव्य री रुचि रो जनम हुयो। भावुक उमर अर मीठो गळो इण रुच न प्रेरणा दी अर 'रसवत' साचाणी सम्मेलना मे रस बरसावण लाग्या। थोडे ही दिना म पचास साठ गीत लिख लिया जिका 'रसाळ' नाव सू सग्रह कर छप्योडा है। नई पीढी रा नोजवान कविया म रसवत री जगा न्यारी ही है।



मुरधर मूं घी रैण

रात चादणी धोरा धरती, सोनो ज्यू बरसावै
चावळिया पर चाद चौगणो रूपा रूप सरावै
वाळा ओळा, दोळा भोळा दादी वात सुणावै
सुणज्जे, गुणज्जे वात वावळा रातडलो ढळ ज्यावै

धूळकोट पर हरी हताई वावो वाता छावै
छाप लगावै छपना पलो रग पुराणा ल्यावै
सुख रै साग वाथ भरचोडी गीत सुरगा गावै
मीठा वोले वोल मोरिया धरती नाचै गावै

चौवारै मे वैठ गोरडी गीता धोक लगावै
नेह निचोई, रात भिजोई हिवडै हूक जगावै
रग रा आगण छोड डोकरी भजन भाव मे जावै
नारायण र नेडी पेटी हर-गुण गाय लगावै

तदूरा री तान सुणीज भीभा वाजै झीणा
भजन वावळा वोल वाणी च्यार दिना जग जीणा
गाव गवाडा टावर भेळा मांड कवडी पाळा
दूधा धोई रात चादणी कुण कुण खेलण वाळा

ठडी राता इमरत बरस, अळगोजा री टेर
मधुरो मधुरो वायर हरजी ! मुरधर दीजे फेर
मूट चढयोडा गण घालता 'गारवद' गूथ, गावै
'काछवियो' सरवरिय तीरा 'पिणियारी' वतळावै

वोल वटाऊ वायरियै बळ 'वायरियो' कुण गावै
मारगियै कुण मुधरो चाल 'मूमल' रूप सरावै
धोरा धोरा राग उगेर, रामू चनणा गावै
ढोला मरवण एक हियै वण, ऊट पिलाण्या जावै

वर मूधा मागण री बेळा मागू मुरधर रैण
मुलमुल धोरा रेत रगोली ठडी राता गैण



वटाऊ नै

जीवण री हर राख, हार मत हिम्मत

नाव अणा री धार गिगन गरणावै,
बीजळ बिमकै ना मना डर आव
  ग्राव काटळ दिन नान नानवी डर मत रे
  जावण री हर राख हार मत हिम्मत रे
  आगी गूळ बयूळ मुलक नह नावै
  आव मौत मन मिनख नान मर ज्याव
  पळट भूम अजूम छाड मन मत-मत रे
  जावण री हर राख हार मन हिम्मत रे

मून तेवर नग नीव बिलखाव,
वन क्ना पाचा नावटिय निट ज्यावै
  नरमी मारग माल तापनी नि पत रे
  जीवण री हर राख हार नन हिम्मत रे

सीयाळ री गन मागना न्यावै
पण पग्नानी नुवर नरा पग ल्यावै
  अगणिगण मानी मान नानवा गिग मत रे
  जावण री हर राख हार मन हिम्मत रे

समदर नहर घट र वरण डरावै
पिरथी पिगळ पगट पावरी आव
  ठाट पुराणी पाळ पाप न न्न्हन रे
  जावण ग हर राख हार मन हिम्मत रे

विश्वनाथ शर्मा 'विमलेश'

जनम-स्थान भूंझणू (राजस्थान)
जनम तिथि कार्तिक बदी ७ संवत १९८४ वि०
पिताजी रो नाव श्री थानमलजी शर्मा

विमलसजी राजस्थानी में हास्य रस री रचनावां करै। 'सत पकवानी', 'खंडखानी', 'कुचरणी' अर 'नौ रस में रस हास्य' नाव सू आपरा संग्रह निकळ्या है। 'गीता' रो राजस्थानी अनुवाद भी आप छपवायो है। 'रामकथा' नाव सू रामायण रै कथानक पर आपरी एक और पोथी है। हिन्दी में भी तीन चार पोथियां आपरी बणायोडी छपी है। कवि-सम्मेलनां में आपरी रचनावां रो रंग चोखो जमै। सेखावाटी बोली रा प्रयोग घणा होण सू आपरी रचनावां में स्थानीय रंग घणो आग्यो है। आज री राजस्थानी में हास्य रस री कमी नै पूरी करतांथकां विमलसजी भासा रै इतिहास में आपरी जगां सुरक्षित कर राखी है। सुघरै हास्य री रचनावां करणै री खिमता हर कोई कवि रै बस री बात कोनी। हास्य रो गुण जो विरळा लेखकां मे ही मिलै। या खुसी री बात है कै विमलेसजी ऊंचै दरजै री हास्य रचनावां कर पाया है।

□

गांव

गावा मे घर-घर उमगारघो
गळिया मे नर-नर हरखारघो
भूश्रा बेळ्या चाकी भोवै,
घम्मड घम्मड दही विलोवै
पाग पलो खोल ओवरी, घडस्यो कादो-रोटी खारघो
खडी-खडी गा-भैसा चर री
धर-धर धार दुहारा भर री
लेकर जलम मरघो क्यू पाछो, दुनिया रो मालिक पिछतारघो
हरखी-हरखी फिर कामणी
भरी दूध री ज्यू कढावणी
उठे कूरियै से धुवासो, जण्य जाण वादळ भरमारघो
करी किसाना मीनत पूरी
इन्दर सेठ चुकाण मजूरी
राजी हो-हो क विरखा री बूदा री म्होरा बिखरारघो
हळ ले चाल पडघा है हाळो
घरघा टेचरा करै रुखाळी
जा री हासी सुण'र, सुरग मे नन्द जसोदा सै वतळारघो
भाग्या टीगर टिक्कड खाकै
चुपकै-चुपक कान लगाकै
सुणै मोतियो, चिमनू काको अळगोजा पै मरवण गारघो
नित्त वडी है, कण-कण वच
घणी कमाव पण धण सचै
जण-जण जोतै, कण-कण वोत्र मण-मण काट घरा ले श्रारघो
साझ पडघा भेळा हो ज्यावै
श्राप-श्राप री वात सुणावै
भरी पडी चोपाळ, चौधरी हस-हस भगडा सळटारघो
वीडी-चिलम-तमाखू पोरघा
हासी ठठ्ठा करता जीरघा
मेळ वडो, सै रहो मेळ स, वडो पच यो पाठ पढारघो

शक्तिदान कविया

जनम स्थान — बिराही (सेरगढ़–जोधपुर)
जनम तिथि — १७ जुलाई सन १९४० ई०
पिताजी रो नाव — श्री गोविन्ददानजी कविया

सगतीदानजी पर डिंगळ-परंपरा रो पूरो असर है। काव्य रचना रो गुण आपन वापौती म मिल्यो। याददास्त चोखी होण सू पुराणा कविया रा अनेक छंद आप कंठा कर लिया। डिंगळ गीता रै छंद विधान री जाणकारी आछी होण र कारण गीतां रो पाठ भी आप भली भात कर सकै। पुराणा छंद बणाण र साथ-साथ आप नय ढंग री रचनावा भी सूरू करी है। आजकाल स्कूल कालेजा म होवणहाळा कवि सम्मेलना मं राजस्थानी कविता री माग कई साहित्यिक रुचि रा विद्यार्थिया न इण दिसा म मोड्या। सगतीदानजी री नई प्ररणा रो स्रोत भी यो ही है। परम्परागत ग्यान रै साथ आधुनिक सिक्षा रो सू घो मेळ सगतीदानजी र ऊजळ भविस्य री सूचना देव। डा० सगतीदान राजस्थानी साहित्य री रचनावा रा सकळना रो सपादन भी करयो है।

बिरखा लूंबी जाय

विरखा लू वी जाय साजना
विरखा लू वी जाय
इण रुत तो घर ग्राय, साजना विरखा लू वी जाय
पप्पैयो दिन रात पुकारै, झुरझुर रैग्यो जीव
मिळियो ग्रैन घडी मनमेळू, पिउ पिउ करता पीव
पाव रो सजोगी 'पुळ पाय
स्वात री वू दा लो सरसाय
विरखा लू वी जाय
पावस देख तेडियो प्रीतम, मन सदेसो मेल
ग्रागण सूती एकलडी न, विरछ लपेटी बेल
वेलडी फूली नही समाय
भूमती लळलळ झोला खाय
विरखा लू वी जाय
फूला सू छायोडो फवतो, ग्रायो सावण मास
धरणी रो साजन घर ग्रायो, धरणो फिरै उदास
ग्रासडी मनडै री उळझाय
गोरडी ग्रूभा ज्यू गळ जाय
विरखा लू वी जाय
कोयल राग मलार सुणावै, भवर करै गु जार
विरहण जपै ग्राय वालमा, सेजा रा सिणगार
तार हिवडै रा तूटत जाय
चादणी चादडलो मुसकाय
विरखा लू वी जाय



उडतो पछी

आगै वढणो कदे न रुकणो भर मन मे द्रढ भाव रे
प्रीत रो सदेस पठावण, उडता पछी आव रे

आज जमानो अंडो आयो
भोळप सू मानव भरमायो
खुद रै हाथा बेला बोई
पाक्यो फळ जद मन पछतायो
गी नैणा री सरम, मरम रा घट मे पडिया घाव र
प्रीत रो सदेस पठावण, उडता पछी आव

खिलका माय अदावत खाटी
भाई-भाई री जड काटी
अेक दूसरै री अटकळ मे
पातरग्या वडका री पाटी
मू डै मीठा घट मे खोटा, दुनिया खेलै दाव रे
प्रीत रो सदेस पठावण, उडता पछी आव र

तात सनेह वीण री तूटी
वळगी हिय धीज री बूटी
हुई रोळ मे टौळ, मनावण
दीजै आण हेत री घूटी
काळजियै किलमाणी कू पळ, चमन वध किम चाव रे
प्रीत रो सदेस पठावण, उडता पछी आव रे

जीवण पुसप जदे खिल जासी
प्रेम मधू कळिया पुळकासी
मन भवरा हुळसाता रळमिळ
अवर धर वन मोवण आसी
खेवटियै विन झोला खाव, नेहडलै री नाव र
प्रीत रो सदेस पठावण, उडता पछी आव रे

Δ

]

शांतिलाल भारद्वाज 'राकेश'

जनम स्थान जोलपा (खानपुर--झालावाड)
जनम तिथि २४ जून सन १९३२ ई०
पिताजी रो नाव श्री कृष्णगोपालजी भारद्वाज

भारद्वाजजी रा रसभरचा गीत इण बात रा प्रमाण है के राजस्थानी भासा रो मिठास पूरब सू पच्छिम अर उत्तर सू दिखण ताई सदा अेक सो रयो है। माळवै री सीव पर गूजता भारद्वाजजी रा राजस्थानी गीत माळवै अर राजस्थान री अेकछत्र महाराणी राजस्थानी री जैजकार करै। आज री राजस्थानी मे मारवाडो रा कवि अर लेखक ही घणा दीखता हा, पण थोडा बरसा मे हाडोती अर मवाडी रा कई चोखा कवि आग आया जिका सू राजस्थानी री अपणायत म बढ़ोतरी हुई। सातिलालजी रो नाव उणा मे सिर री पगत म है।

राजनीति विग्यान रा विद्वान होणपर भी साहित्य-सरजण मे आपरी रुचि ठेठ सू ही रही। आप हिन्दी म 'समय की धार' अर पानी अर पत्थर' नाव सू काव्य अर उपन्यास लिख राख्या है। राजस्थानी म फुटकर गीत अर पद्यकथावा लिखी है। गीता न गावण री आपरी कळा भी सखरी है।

हाडोती सोध सस्थान, कोटा रा निदेसक डा० भारद्वाज हाडोती क्षेत्र रा कविया लेखका रा सकळन भी सपादित करया है। आधुनिक राजस्थानी साहित्य विषय री एक पोथी भी आप लिखी ही।

Δ

गीत

राता खटकै, गड आख मे काकरियो
दूर विदेसा गयो हठीलो सावरियो
फूल्यो फागण चैत आगणै गाव रै
फूल्या विन या प्रेम-वेल मुरझावै रे
रुच नही सिणगार आस या फळै नही
हिवडो हुळस नहीं'क पास वुलाव रे
समझ्या समझ नहीं'क मनडो वावरियो
दूर विदेसा गयो हठीलो सावरियो
नीम आगण खेता पीपळ सूनी रे
विन चकोर यो चाद-चादणी सूनी रे
विन सिदूर या माग सुहाग भरी सूनी
विन मूरत यो राग, रागणी झूठी रे
तू विन भावै नही धान को वाजरियो
दूर विदेसा गयो हठीलो सावरियो
तू आव तो भलो वायरो लाग रे
तू आव तो सपनो सुख को जाग रे
दुखी आख को काजळ झर-झर झर नही
तू आवै तो दरद गीत सू भागै रे
भूल्यो मीठा वोल वाजणो झाझरियो
दूर विदेसा गयो हठीलो सावरियो



गीत

आज थारी आस आधी
रात आधी वात आधी
वाट थारी देखता या रात पुळ-पुळ जात रे
रात आधी रात रे—वात आधी वात रे

तू नहीं तो आज फीको चादणी को रग
तू नही तो आज फीको वादळी को सग
तू नही तो वाट तकती आख भर-भर जात रे
रात आधी रात रे—वात आधी वात रे

एक मैं तडपू हसै या रात की राणी
एक मैं कळपू करै तू आज मनजाणी
तू नही तो आज घर आवै किया परभात रे
रात आधी रात रे वात आधी वात रे

कूक कोयलडी उठ हुळसै बसती खेत
गाव गूजै फाग चादी सी हस या रेत
तू नही तो आज मार घात मीठी रात रे
रात आधी रात रे—वात आधी वात रे



श्रीमंतकुमार व्यास

जनम स्थान लाडणू नागौर,
उमर ५१ बरस रै नेडी
पिताजी रो नाव श्री नानूरामजी व्यास

श्रीमतजी री कविता म सहर रै उण समाज री बुराइया रो नागो चित्र है जिण न वै घण नेड सू देख्यो अर समझ्यो है। आपरै एकाकी नाटकां मे भी इण रो भडाफोड प्रभावकारी है। कवितावा रै अलावा 'रामदूत' नाव र खड काव्य म आप रामायण रै वीर हणूमान री महिमा बखाणी है। 'मळगोजा' नाव सू आज र राजस्थानी कविया रो एक सग्रह भी आप रो छपवायोडो है। राजस्थानी-जागरण रै आदोळण म आपरी रुचि अर लगन सराहण जोग रही है।



मिनख बण नै जी

तू जो भलाई अेक दिन
परण मिनख बण नै जी
डवडवा जाव, हुवै गळ-गळ हिये री पीड सू
चौसरा चालै, चुव टपटप दुखा री भीड सू
बण नै इसडो, काळजो
किरसाण रो बण जी
जद सुणावै घूघरा घम-घम सुखा री रात मे
गीत गावै रोवणा चातक खडया वरसात मे
बण न काळी बादळी
घरडाट बण नै जी
जळजळो जे ल्या सकै वण च्यानणो दिन रो
अूभ विरहण ज्यू गिणै क्यू आवणो पिव रो
बण न भोळो बावळा
भगवान बण न जी
तू जी भलाई अेक दिन परण मिनख बण नै जी



सत्यप्रकाश जोसी

जनम स्थान जोधपुर
जनम तिथि २० मार्च १९२६ ई०
सिक्षा एम० ए० (हिन्दी)

जोसीजी री कई पोथ्या छपी है। दावा कोप क्यूं, राधा बोल भारमळी, लस्कर ना थम—अै नाव है काव्या रा अर 'बाबी' नाव है गद्य र अनुवाद री पोथी रा।

जोसीजी राजस्थानी लोकगीता रै मरम न भली भात परख्यो है जिण सू बारी कवितावा मे लोकगीता री बा सगळी सब्दावळी कोई न कोई रूप म मिल जिण मे व पचा'र आपर भडार भेळी करली है। जोसीजी री कविता मे परपराऊ रोमास है जिको जूनो होता हुया भी घणो फूटरो लाग। 'बोल भारमळी' म यौन समस्या न मूळ वणा'र वै जिण ऊची धरती ताई पूगण री चेस्टा करी है वा पार कानी पडी। फेर भी बारो बात कैवण रो ढग घणो असरदार अर प्यारो है।

आज काल आप बबई मे प्राध्यापक है। 'हरावळ' नाव रो राजस्थानी छापो भी आप आपरी सपादकी मे निकाळ।



सोवन माछली

साझ तो पडी नै वडग्यो नीर मे रैं वैरी
ग्रा थारी मछवा वाण कुबाण
छोळा सू टाळे गिण गिण माछली

क्यू तू हिबोळै ग्रू डै समद नै रै मछवा
क्यू तू पसारै झीणा जाळ
खारा समदा री खारी माछली

पाछो तो बावड थारी झूपडी र मछवा
थारी थाळी मे चानण चोक
तडफा तोडै रै सोवन माछली

सातू समदा नै राखै नैणा मायनै रै मछवा
होठा विच साचा मोती सात
मीठै पाणी री सोवन माछली

कैवै तो चीरू कवळो काळजो रै मछवा
माथै भुरकाग्रू तीखो लूण
काटा विना री सोवन माछळी

तेल मे तळू रै थार राम रसोडै मछवा
नीचै सिळगाग्रू मधरी ग्राच
छिण छिण सीझै रै सोवन माछळी

धोया धाया थाळा पुरसू ग्राधी रै ग्रमला मछवा
ग्रलघ झिरोखै जोवू वाट
ग्रग तो मरोडै सोवन मा.ळी

मूडो ओंठए ढळती रा काई आव रै मछवा
पैला ई क्यू नी लेवै चाख
जतना सू राधी सोवन माछळी

कैवै तो वेचा सोवन माछळी रै मछवा
वेच नै चिणावा ग्रूचा मैंल
छोडा समदा मे पाछी माछळी



ऐरण बूझै रै घण बीर नै

ऊठ धमीड़ा अवर चीर नै
ऐरण बूझै रै घण बीर नै

बीरा र बीरा धवणी खोरा क्यू जगाया
खीरा मे टुकड़ा बीजळसार रा तपड़ाया
डाम क्यू म्हारी काया, प्राण नै दाझै क्यू र

क्यू तो कूटै रै लोह सरीर नै
ऐरण बूझै रै घण बीर नै

मिनखा न बाधण मिनखा साकळा घड़ाई
हाथा हथकड़िया, पग री बेड़िया वणाई
मिनखा न नीच दाब्या आकस परवाणै र

आपा क्यू सिरजा जुगरी पीड न
ऐरण बूझ रै घण बीर न

तीखी धारा री खागा, अणिया रा भाला
लोई सू रगदी वरती, दोय हाथ वाळा
सह्या नही जावै सामी छाती अै भचोड रै

क्यू तो घड देवा आपा तीर न
ऐरण बूझै रै घण बीर नै

घडणो ह्व घड रै बीरा, कसिया कुदाळी
अन धन निपजावै कमधज, हाथा हळवाळी
टावर रै हाथा माही बाजे खुणखुणिया रै

क्यू नों पूछा नैणा रा नीर न
धैरण बूझै र घण वीर न

टाकी घड, जीवण री जे मेडिया चिणाव
जीवण रै रथ री गत नै धुराई वधाव
सूई सीवै जीवण रा फाटया गूदडा र

क्यू नी बदळ जुग री तसवीर न
धैरण बूझै रै घण वीर न



सुबोधकुमार अग्रवाल

जनम स्थान चूरु (राजस्थान)
जनम-संवत १९७६ वि०

सुबोधजी उण वखत राजस्थानी मे लिखणो सुरु कर्‌यो हो जद आज रा घणखरा कवि होस भी नही संभाळ्यो हो। पण भावुक सुभाव रा होणै सू सुबोधजी री रचनावां बहोत सरस होती ही। पण लारला कई बरसां सू कविता करणै री रुचि मदी पडगी। जो कुछ लिख्योडो हो बो सभाळ'र राख्यो नही। मेघदूत' री सली म लोर' नाव सू एक दूत काव्य किणी मित्र र कन पडयो रैग्यो जिण म सू थोडा छद अठै छाप्या है। हि दी म लठसाळा' अर कतरन' नाव री दो छोटी पोथ्यां रै अलावा 'पछी' नाव रो मासिक पत्र भी आप छपवायो हो। खुद लिखण र साथ साथ सुबोधजी अनेक कवियां अर लेखकां न प्रेरणा दे साहित्य कानी खींच्या जिकां आज भी का य री फुलवाडी गे सोरम बखेर रया है। आजकाल आप चूरू मे नगरश्री नाव री सस्था अर लाक सस्कृति सोध सस्थान नाव री सस्था कानी सू 'मरु श्री' नाव रा तिमाही छापो निकाळ जिण रा सपादक गोविन्द अग्रवाळ हैं।



लोर

झिरमिर-झिरमिर मेवलो वरस
गोरी तरसै महल तळ
आज्यो जी म्हारा सजन मनेही
सावणियैं रा लोर गळ
वोरग चूनड भीजण लागी
टपटप-टपटप रस वरसै
काग उडावै छाजै पर धण
परदेसी रो पथ निरखै
भायलड्या मे रमग्यो भनजी
घर थारी सु दर तरसै—आज्यो०
फुलडा सिरसो पीयर छोड्यो
बावल छोड्यो मा छोडी
घर-घर री हमजोळी छोडी
भरण ठिणकती घर छोडी
थारै लैर सिधारी छला
थे करकै विरहण छोडी—आज्यो०
बादळ माही विजळी चिमकै
गोरी डरपै महला मे
ढोला जाय विदेसा रमग्यो
मरवण तडपै सेजा मे
आज्यो घर निरमोही मारू
सावण सूनी देख छळै—आज्यो०
आमूल को गाछ लगाग्या
घेर घुमेर हुयो लूम

मघरा-मघरा बादळ गाजै
मतवाळा घिर-घिर घूमै
मीठी पून चळ पुरवाई
चूवण लाग्या आम तळै—आज्यो॰

पाला पग की पायल बणग्या
बींटी बणगी बद अगडी
इण आस्या मे पीव मिलण की
आस लगी जद ज्यान खडी
इक वर स्याम दरस दयो आकर
नैणा भर-भर नीर ढळै—आज्यो॰

स्याम हमारो जाकर रमग्यो
थे मत रमज्यो रावळिया
एक विदाई दी थी बानै
दूजी थानै सावळिया
एक उडीक हियै मे बाकी
दूजी थाकी पलक तळै—आज्यो॰



स्व० सुमनेस जोसी

जनम स्थान   जोधपुर

सुमनेसजी डील डौळ काम अर कलम तीनूं भांत ही प्रेम महाप्राण मिनख हा। जिसी ओपती आप री विसाळ काया ही उण रै अनुरूप ही आपरो दिल अर दिमाग भी हो। देसी राज्यां री राजनैतिक क्रांति में सुमनेसजी रै बळिदान री गाथा सगळा नेहूं जाणै। नुभाव सूं घणा भावुक होण रै कारण आप उण वखत री राज री भली चंगी नौकरी नै तुरत लात मार'र क्रांतिकारियां भेळा आ खड्या हुया। देखण सुणण में बात छोटी सी लागै पण इसा कामां सातर गज भर रो काळजा चाहीजै। सामंती जुलमां सूं रात दिन टक्कर लेवणहाळा सुमनेसजी नै क्रांति रै गीतां रै अलावा बीजा क्यूं लिखण री फुरसत ही कठै ही! आप रा गीत आजादी साहू लड़णिया सिपायां री जीवण जड़ी ज्यूं हा। जण जण रै मूंडै सूं सुमनेसजी रा सौरा सा अधरता गीत गाया जाता तो क्रांति री लपटां गांव गांव फैलती ही।

पण आजादी मिल्यां पछै भी वां रो जास मिटयो नहीं हो। आप री वाणी में वा ही आज अर उछाह हो। आजादी रै पछै देस रै नव निर्माण रा गीत लिख्या। आपरै गीतां रो संग्रह राजस्थान सरकार रै सार्वजनिक सम्पर्क कार्यालय सूं निकळयो हो। घोर तकलीफां अर मानसिक द्वंद्वां रै बीच भी सुमनेसजी नै आसा, विसवास, हिम्मत अर मरदमी री साख्यात मूरत ज्यूं अडिग अर मुळकता देख्या है। या ही जास विसवास अर हिम्मत मरदमी भरी मुळक आपरै गीतां री कड़ी कड़ी में मिलै। राजस्थान रा सुतंतता सेनानियां रै इतिहास रो एक मोटो ग्रंथ आप छपायो हो।



मरण पंथ रा पथी

माटा मे मिल गया बीज जद
ऊगया रूख हजारा
आपो मेट, मिटचो जद बादळ
फूटी जळ री धारा

दिवलो जळ-बळ मिल्यो खाकमे
करग्यो ज्योत उजाळो
मरण बाघ कूदचो सिखरा सू
बो झरणो मतवाळो

वो झरणो मतवाळो—
उण रो मरण-पथ कुण देखै
जग तो प्रीत करै ज्योती सू
बळणो करमा लेखै

बीज गया पाताळ
धरण सू ऊ चा तरवर छाया
नीवा मे गड गया—
उणा रा गीत न कोई गाया

कोई गाव गीत, न गावै
उण न कद अभिलासा
मरण-पथ रा पथी तो बस
करम करण रा प्यासा

धिन-धिन व धरती रा जाया
जो निज आपो मेट
नयो रूप आकार धरा नैं
जो कर जावै भेट



सुमेरसिंघ सेखावत

जनम स्थान सरवडी (सीकर)
जनम तिथि भादवा वदी ६, संवत १९९१ वि॰
पिताजी रो नाम श्री रूपसिंघजी सेखावत

समाज सास्त्र रा विद्यार्थी सुमेरसिंघ दरसन अर मनो विग्यान री रुचि हाळा कुसळ साहित्यकार है । भासा अर भावां री गंभीरता आपरै सुभाव अर ग्यान रै मुजब ही मोपै । फुटकर कवितावां रै अलावा आप 'चांदणी' अर 'बिरखा' नांव सूं दो रितु काव्य अर 'रावळै री रातां', 'लाडै रो ब्याव' तथा 'दवळ ववाळी' नांव सूं उपन्यास, अर कहाणी संग्रह भी बणाया है । इती छोटी उमर में विचारां री इतणी सजावट जिकी सुमेरसिंघजी में है वा कम देखण नै मिलै । 'मेघमाळ' नांव सूं मेघदूत री बणगट पर आपरी एक पोथी छप्योडी है ।



बिरखा

घोर अंधारी वरसाळे री घुट अमावस रैण
बादळिया रै घूंघटियै मे ऊंघै नभ रा नैण
ज्यू बिरहण री आसा
आखो लोक अमूझै
नाखै बाळ निसासा
मिरगलिया सा भरै चोकड्या भादूडै रा लोर
धूप-छाव री ल्हैरा उड-उड मिणै धरा रा छोर
भाजी फिरै लगन सू
पिछवा चालै पून, न
वरसै छाट गगन सू
तीतरपखी बादळिया री ओढ सुरगो चीर
आथूणै अम्बर मे सज्या खडी खितिज रै तीर
प्रीत री डोर वधाई
धरती देव सीख—
विदा री वेळा आई
आयो मभ आसोज, कळायण घाल्यो घेरघुमेर
पिछवा पून फिर जद ताणी अब वरसण मे देर
बिरखा मडी सजोरी
अन-धन री देवाळ
घडी-पुळ काढै दोरी
घर मे करै किलोळा दाळद, भूख पेट नै खाय
राज-ब्याज मे नाज पराई हाटा तुल-तुल जाय
लिछमी घणी ठगोरी
घास-फूस रै पाण—
गरीवी कटणी दोरी

□

स्यात

जाग-जाग अणजाण वटाम्रू
पछी पुळके, बीती रात
दूर घणेरो ग्रेढो तेरो
मग गोरखधन्धे री जात
सोपें भटक्या लोग न जाणें
दिन मे भटक्या चालै वात
सोवणियो इण ससारी मे
खोवै जिको न पावै स्यात

मान-मान मनमौजी हसा
मत कुरळावै माझळ रात
धरती धूज, गगन ग्रमूझै
सरवर गूजै सूखै गात
इण जगती मे सुण ग्रो स्याणा
स्वारथ रा सारा उतपात
सुख मे मोती चुग जिका ई
दुख मे ग्रासू पीव स्यात

चाख-चाख रसलोभी भवरा
फूला रा मुरझाया गात
रीत-प्रीत री चीत तनै नी
तू कपटी निरमोही जात
सुख रा सगी घणा जगत म
दुख मे कोई करै न वात
रस पीवणियो मर तिसायो
तो कोनो ग्रणहोणी स्यात

△

सोभागसिंघ सेखावत

जनम स्थान भगतपुरा (सीकर

जनम तिथि फागण सुदी ६, संवत १६८० वि०

सोभागसिंघ सेखावत उण लगन हाळा लोगां मे सूं है जिकां राजस्थान री धरती नें पगा सूं नापी है। आटदार फटा, गाढा ताइ री धोती अर कांधे फौजी थैलो लटकायां सोभागसिंघ गाव गाव में गया है अर राजस्थानी री सकडू रळती रचनावां नै चुण चुण'र भेळी करी है। राजपूती वातावरण में पळया अर भूगतो जवानी रा जोसीला दिनां में समाज-सुधार री धुन में रम्योड़ा सोभागसिंघ राजस्थानी भासा, साहित्य अर संस्कृति रा अनाखा उपासक है। आज रै अधप्रधान जुग में इसा धुन रा पक्का मिनखां नै रुचि सारू काम नै मिलै आ ही अफसोस है। आ खुसी री बात है कै पिछला कई बरसां मे उदयपुर रै साध संस्थान में रहण सूं सोभागजी री ४ ६ पोथ्यां सामनै आई जिकियां में राजस्थानी पद्धतर अर राजस्थानी बातां भाग ८ सूं ८ मुख्य है। राजस्थान रै इतिहास रो भी आपरो ग्यान आछो है। राजस्थान रै सास्कृतिक क्षेत्र में इसा उत्साही जवान ढूढ्यां ही मिलै।

पत्र पत्रिकावां में छपी फुटकर रचनावां रै अलावा 'रणरोळ', 'मू धामोती', खादू रा खेटा' अर 'कह चक्या बात' नाव सूं आपरी राजस्थानी रचनावां रा पद्य-गद्य रा सग्रह करयोड़ा है। चोपासनी साध संस्थान में सहायक निदसक रै रूप में भवार राजस्थानी रा जूना ग्रथां रै संपादन रो काम आपरै जिम्मै है। वीर थोन, बलवद्विलास, निबंध संग्र, जाडा महड़ ग्रथावळी आद कई ग्रंथ आपरा संपादन करयोड़ा अर लिख्योड़ा है।



विनय रा दूहा

गुमर धार जळधार मझ, गह्यो ग्राह गजराज
गरुड छाड गोविंद तू, आयो हिकरण अवाज

पेग भगत प्रहलाद पण, रेख विरद री राख
पाळो धायो परम गुर, साची कीधी साख

विपर सुदामो वापडो, काई भेंट करीह
विरद धणी वसदेव रा, भारी वाह भरीह

वळ चढ काप विडोजव्रिज, बारद भर बारीह
तद आयो तारण तरण, गोविंद गिरधारीह

अध सुतन अठ मेरु सो, नगन काज नारीह
चीर वढायो चत्रभुज, गिरवर नख धारीह

साचा वेली सावरो, गुरजरधर गारीह
भात भरण आयो भला, वसदे बळिहारीह

खपा अठारह खोहणी, चक्र न कर धारीह
रग रजवट वट राजवी, आहव आचारीह

मूढ मतो दसमाथ धर, धरम न चीतारीह
लाघ समद गढ लक लड, लागो ललकारीह

गरब्यो रावण गजब गढ, वर ले त्रिपरारीह
रीछ वानरा दे रटक, छाग्यो छत्रधारीह



हणूंतसिंघ देवडा

जनम स्थान	राणीवाड़ा (जालोर)
जनम तिथि	माह सुदी ४ संवत १९८५ वि०
पिताजी रो नांव	श्री लक्ष्मणसिंघजी देवडा

हणूंतसिंघ पर डिंगळ दूहा रा रंग गहरो चढ्योड़ो है। सुरतान सतक' नाव सूं लिख्या आपरा दूहा उणी परंपरा रा है। करुण रस आपरा विसेस प्यारा है। दाळद अर भूख सूं बिलबिलाता मानख रा दरद बखाणणा ही आपरी कविता रो लक्ष्य दीखै। 'बिगरघाड़ा गीत' अर 'फाग गीत' नाव री काव्य री पोथियां र अलावा राजस्थानी साहित्य संबंधी ३-४ और पोथियां भी आप छपवाई है।



बिन तेल बळै या दीवाळी

इण दीवाळी रा दीवा मे
श्रो तेल नही, रै रगत वळै
दीवा नीचै अधारो
मिनखा रा पण समसाण बळै
पळटो पसवाडो धरती रो
र वळै हुस हिवडावाळी
बिन तेल वळै या दीवाळी

महला सू वोली ~ झूपडिया
चौका मे दीप हुयो कोनी
रै आय जमारै मिनखा रै
जीमण रो धूप हुयो कोनी
गीतडळा रोटी रा गावै
घर मे वैठी वा घरवाळी
बिन तेल वळै या दीवाळी

इण रो दीवाळी लुटगी रै
मैहदी रो मान हुयो कोनी
फेरा ना फेर सकी उण रा
कन्या रो दान हुयो कोनी
सोळा मे पगल्या धरता ही
मटकी रै आख्या मतवाळी
बिन तेल वळै या दीवाळी

उण फाटोडै घाघरियै अर